पीलक
टिट
हमावर

तोता
सहेली

अबाबील
कौडिल्ला
बहरी

हमारी चिड़ियाँ

सुरेश सिंह

उपहार

प्रिय

शिरीष अशोक

को

सस्नेह

ग्रन्थ संख्या—९०
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती भंडार
लीडर प्रेस, प्रयाग

द्वितीय संस्करण
मूल्य ४)
सं० २००१

मुद्रक
कृष्णाराम मेहता
लीडर प्रेस, प्रयाग

चिडियों के घोसले
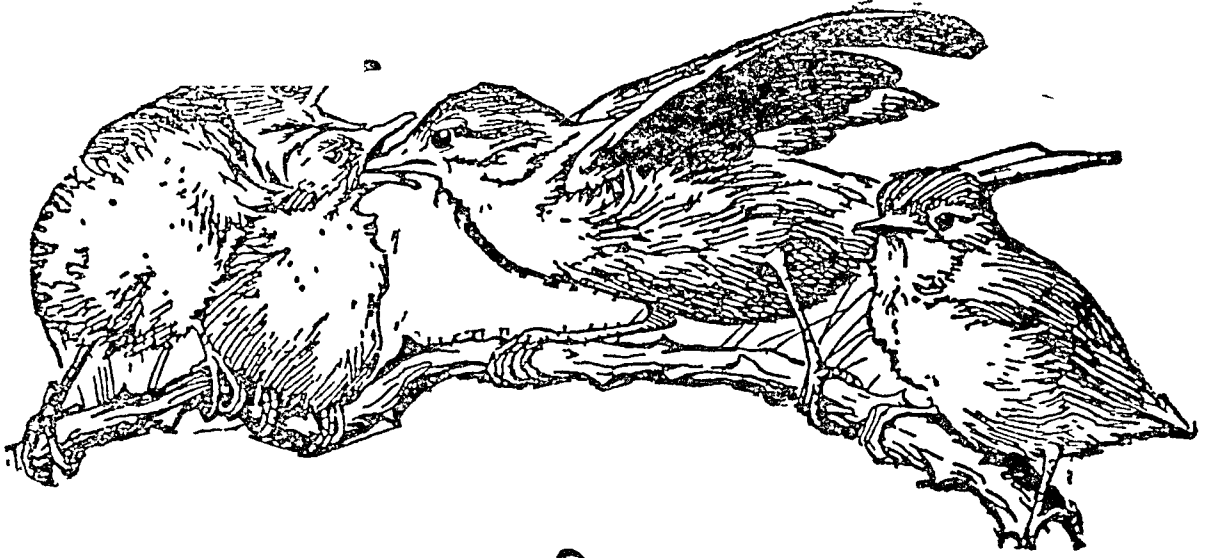
भूमिका

सृष्टि मे एक समय ऐसा भी था जब केवल चिड़ियों के ही नहीं वरन् सब जीवधारियो के पुरखे एक ही थे और ये सभी पानी में रहने वाले प्राणी थे। पर कुछ समय बीतने पर जहाँ तहाँ पृथ्वी दिखाई पड़ने लगी और ये जल-जीव खुश्की पर आने जाने लगे। धीरे धीरे इनकी खुश्की पर भी रहने की आदत पड गई, और ये ही क्रमशः सरीसृप (Reptiles रेंगने वाले जतु) के रूप मे परिवर्तित हो गए।

सृष्टि के प्रारभिक अवस्था मे चिड़िया तो थीं नही, पर इन्ही मे छिपकिली की शक्ल के जानवर जरूर थे। जिनको अपनी रक्षा के लिए मजबूर होकर दो टाँगों से उछल-उछल कर भागना, या यों कहिए कि थोड़ा बहुत उड़ना सीखना पड़ा था।

इन जानवरों के मर जाने पर उनकी हड्डियाँ मिट्टी के नीचे दब गई, और समय पाकर जब मिट्टी कड़ी होकर पत्थर के रूप में बदल गई, तो इन हड्डियो के चिन्ह भी उन पत्थरों पर अकित हो गए। इस प्रकार के पत्थरो को पथराए हुए ककाल या (फॉसिल्स Fossils) कहते हैं। हमको इन्हीं पथराए ककालो से आदिम अवस्था का बहुत कुछ पता चलता है।

यह तो हम लोग जानते ही है कि ये जानवर भलीभाँति उड़ नहीं सकते थे। उनको ठीक-ठीक उड़ने के काबिल होने मे सदियां लग गए, और आज इतना समय बीत जाने पर कहीं हम उन्हे चिड़ियों के रूप मे देख रहे हैं।

ये छिपकिली की शक्ल के लबे चौडे जानवर चिड़ियो मे कैसे बदल गए, इसकी बहुत कठिन और लबी कहानी है। पर यह एक बात तो तै ही है कि कुछ रेगने वाले प्राणियो के और चिडियों के पुरखे एक थे। वैसे तो प्रारभिक अवस्था मे हम सब जीवधारियो के भी पुरखे एक रहे होंगे।

पहले तो इन उड़ाकू जानवरों के पखो के स्थान पर एक प्रकार की मोटी खाल होती थी, पर धीरे-धीरे गरमी कायम रखने की आवश्यकता का अनुभव करने पर इनकी यह मोटी खाल पखो मे परिवर्तित हो गई।

परों मे गरमी सुरक्षित रखने की स्वाभाविक शक्ति होती है पर खाल मे यह गुण नहीं है। यह सभी देखते है कि जाडे मे भी चिड़िया बहुत सवेरे उठ जाती हैं, और छिपकिली, साँप आदि सूरज निकलने तक पडे सोते ही रहते है। इसका कारण यही है कि परो मे सुरक्षित गरमी के कारण, चिडियो को प्रातः उठने के लिए, मोटी खाल वाले जानवरो की तरह सूर्य की गरमी की कोई विशेष आवश्यकता नहीं पडती। कुछ जानवर तो ऐसे है जो जाडे भर सोते ही रहते है। इसको ठक्क पडा रहना (हाइबरनेशन Hibernation) कहते है। उत्तरी ध्रुव का भालू (Polar Bear) भी इसी श्रेणी का जानवर है। पर जाडे भर सोने वाली कोई भी चिड़िया अभी तक नहीं देखी गई।

हाँ, तो इन उडने वाले कुछ जानवरों की शक्ल तो चिडियो से भिन्न ही होती थी। इनमे से सबसे ज्यादा उड सकने वाले पत्रागुष्ठ (टेरोडेक्टल्स Pterodactyls) थे। जिनका एक काल्पनिक चित्र यहाँ दिया जा रहा है। उसे देखने से उनका और उनके सम्बन्धियों का बहुत कुछ अनुमान किया जा सकेगा।
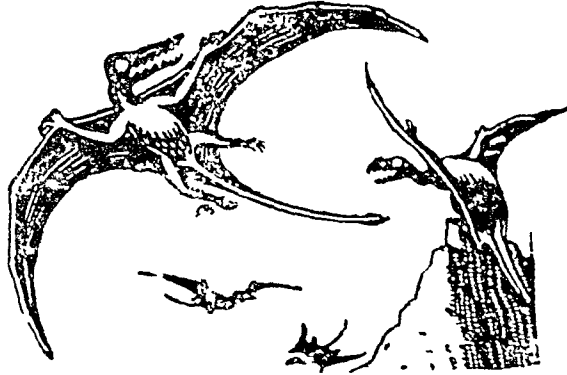
पत्रांगुष्ठ (टेरोडेक्टल्स)

पत्रागुष्ठ के पख तो होते नहीं थे, हाँ अगले पजो से लेकर पिछले पजो तक चमगादड़ो की तरह की एक खाल जरूर होती थी, जिसके सहारे वे थोडा बहुत उड सकते थे। पर इनको हम सभी चिडियो के पुरखे नहीं कह सकते।

चिड़ियों के असली पुरखे प्रत्नपुखीय या आरकीओपटेरिक्स (Archaeopteryx) के तो अभ
तक दो ही पथराए कंकाल मिले है, जिनको देखने से ज्ञात होता है कि वे इन उड़ने वाले जानवरों से
बहुत पहले से ही पृथ्वी पर थे। इनके पर भी थे और छिपकिली की तरह की लंबी पूँछ भी थी, जिसकी
हड्डियों के प्रत्येक जोड़ पर दो दो पंख थे।

चिड़ियो की पूँछ उनके लिए उतनी ही उपयोगी होती है, जितना नाव के लिए पतवार। जब
चिड़ियाँ आसमान मे मड़राती है तो वे अपनी पूँछ फैला लेती है, और जब उन्हे तेज उड़ना होता है तो
उसे सफरी पखी के समान बद कर लेती है। पर छिपकली की तरह की पूँछ तो उड़ने में बाधक होती
रही होगी, इसीलिए चिड़ियो की पूँछ धीरे धीरे बदल कर अब उनके लिए अधिक उपयोगी हो गई है।

प्रत्नपुंखीय (आरकीओपटेरिक्स) के भी—पत्रागुष्ठ आदि उड़ने वाले जानवरो के समान—
पजे और दोनो जबड़ो मे दाँत होते थे। उनके दोनो पथराए कंकालों को देख कर मनुष्यों ने उनका
एक काल्पनिक चित्र भी बनाया है, पर उसे बिल्कुल ठीक कैसे कहा जा सकता है।

चिड़ियो ने उड़ना कैसे सीखा ? इसके बारे मे जैसा कि पहले कह चुका हूँ यही अनुमान किया
जाता है कि—इन सरीसृपों को दुश्मनो से बचने के लिए उसी तरह मजबूर होकर दो टाँगों से भागना
पड़ा होगा, जिस प्रकार आस्ट्रेलिया की एक किस्म की छिपकिलियाँ जल्दी के कारण पिछली दोनो टाँगों
पर खड़ी होकर भागती है। भागते समय ये कंगारू की तरह उछल उछल कर भागते रहे होंगे, और
साथ ही साथ अपनी बाँहो को चलाते रहे होंगे। इसका परिणाम यह हुआ होगा कि कुछ काल के बाद
उनकी बाहे बढ कर उसी शक्ल की हो गई होगी जैसी पत्रागुष्ठ के चित्र मे देखी जा सकती है। और फिर
इसके बाद उन्हे चिड़ियो की शक्ल मे आने के लिए अगली सीढ़ी यह रही होगी कि उनकी खाल परों में
बदल गई होगी। इस तरह क्रमिक विकास से चिड़ियों को अपने पूर्वजों की भद्दी शकल से बदल कर, अपने
इस वर्तमान स्वरूप ग्रहण करने मे—एक दो नहीं बल्कि लाखों वर्ष लग गए होंगे, जिसे पाकर उन्होंने
अपनी सुन्दरता से ही नहीं बल्कि अपनी मीठी बोली के कारण हम सब को अपना मित्र बना लिया है।

चिड़ियो के मामूली परिचय के लिए, उनके रंग-रूप, उनकी चोटी, पर, पैर, और चोंच की
बनावट के बारे मे थोड़ी बहुत जानकारी के लिए तो हमारे जू और अजायबघर हमारी मदद कर सकते है,
लेकिन उनकी आदत, बोली, रहन-सहन के अतिरिक्त उनके बारे मे और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए
हमे स्वयं अपने अनुभव से काम लेना पडेगा। यहाँ तो स्थानाभाव से थोड़ी बहुत बाते ही दी जा सकेंगी।

पर ही चिड़ियो की पोशाक है, इससे सब से पहले हमें चिडियो के परो के बारे मे जानना जरूरी
है। परो से ही हम चिडियो को पहचान पाते है, और अक्सर इन्हीं परो के कारण ही हम उन्हे पसन्द
और नापसन्द करते हैं। मोर, सुरखाब, हारिल और पीलक अपनी सुन्दर पोशाक के कारण ही हमारे
स्नेह के पात्र बन जाते है, पर चरखी और बगुली आदि की ओर हमारी दृष्टि भी नहीं जाती।

बहुत सी चिड़ियाँ अपने परों की पोशाक को साल में एक बार या दो बार बदल देती हैं, और गरमी तथा जाड़ों में अपने नए परों के कारण बहुत सुन्दर लगने लगती हैं। परों का इस प्रकार का बदलाव कुछ दिनों बाद शुरू होता है, क्योंकि यह जरूरी नहीं होता कि पैदा होते ही सब चिड़ियाँ अपने माँ बाप के रंग-रूप की हो जावे।

सामुद्रिक (Gull) आदि पक्षियों के बच्चों को अपने माँ बाप के अनुरूप होने में कई साल लग जाते है।

परों के दो मुख्य विभाग किए जा सकते है, एक—जो बड़े और मजबूत होते हैं और जिन्हे हम पंख के नाम से पुकारते है, और दूसरे—जो छोटे और मुलायम होते हैं और जिनसे चिड़ियों का सारा शरीर ढका रहता है। इन्हे हम पर कहते है। उल्लू आदि कुछ चिड़ियों के पर इतने घने और मुलायम होते है कि उड़ते समय उनसे जरा भी आवाज नहीं होती। और पेंगुइन (Penguine) के समान कुछ चिड़ियों के पर ऐसे भी होते हैं जो कड़े और निरर्थक से हो गए है। इसके अलावा एक किस्म के पर, न्यूजीलैंड निवासी किवी (Kiwi) नामक पक्षी के भी कहे जा सकते है—जिसके शरीर पर बालों के समान पर होते है।
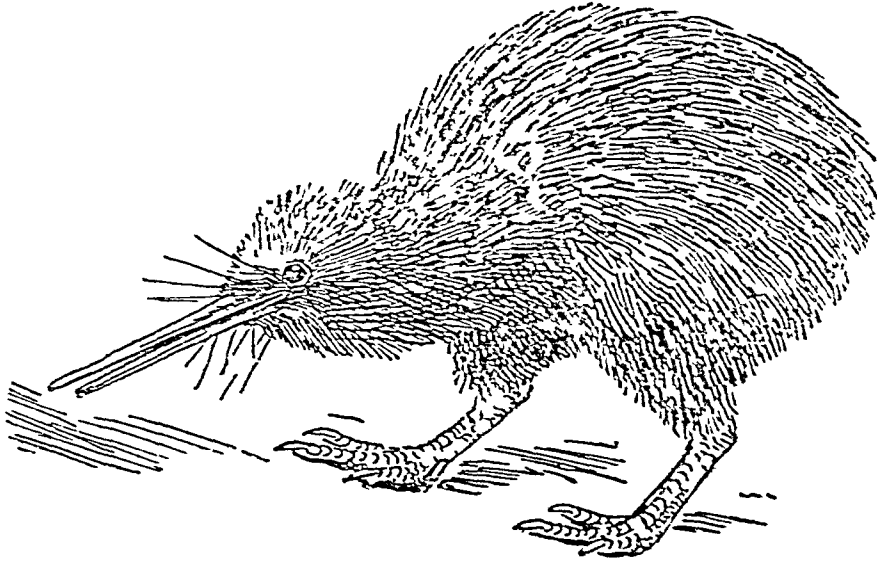
किवी

चिड़ियों के परों की बनावट बहुत सुन्दर और आश्चर्यजनक होती है। इनकी बीच की डंडी से दोनों ओर पतली पतली शाखे निकली रहती है, जो अलग होने पर भी एक में ऐसी जुट जाया करती हैं कि देखने से जान पड़ता है कि उनके बीच में किसी प्रकार का अंतर ही नहीं है। हम किसी पक्षी के पर को हाथ में लेकर यह देख सकते है।

जिस प्रकार हमारे कपड़े पुराने हो जाते है, उसी प्रकार चिड़ियों के पर भी थोड़े दिनों मे पुराने हो जाते है। तब परो के नीचे दूसरे पर निकलने लगते है और पुराने परों के स्थान पर दूसरे नए पर जम जाते हैं। जैसा कि ऊपर बता आया हूॅ चिड़ियो के नए पर भिन्न-भिन्न समय मे निकलते है, पर जाड़े से थोड़े पहले की उनकी पोशाक उनको शीत से बचाने के लिए बहुत उपयोगी होती है।

शरीर रक्षा के अलावा परों का एक और उपयोग चिड़ियो के लिए है। उनकी भड़कीली पोशाक उनको जोड़ा बॉधने मे भी काफी मदद देती है। नर पक्षी वैसे ही अक्सर मादा से सुन्दर होते है, जिससे वे उसे रिझा कर अपना जीवन साथी बनाने मे समर्थ हो सके। पर जोड़ा बॉधने का समय आने पर तो उनकी पोशाक और भी भड़कीली हो जाती है। मोर आदि रंगीन चिड़ियो मे यह परिवर्तन बड़ी आसानी से देखा जा सकता है।

पेगुइन

वैसे ज्यादातर चिड़ियो की पोशाक उनके आसपास की चीजों के रंग से मिलती जुलती हुई होती है, जिससे दुश्मनों की निगाह जल्दी मे उन पर न पड़ सके। प्रकृति ने जहॉ तीतर को मटमैला और हारिल को हरा रग दिया है, वही कुररी (Tern) को रेत से ऐसा मिलता जुलता रग दिया है कि बहुत पास जाने पर भी उन्हे जल्दी मे देखा नही जा सकता।

परों का वर्णन दुम और डैनों के जिक्र के बिना अधूरा ही रह जावेगा इससे दो-चार बाते इनके बारे मे भी जान लेना जरूरी है।

दुम जहॉ हवा मे तैरते समय चिड़ियों के लिए पतवार का काम करती है, वही चिड़ियॉ अपनी तेजी रोकने के लिए इससे ब्रेक (Brake) का भी काम लेती हैं। यही नही चील, भुजगा और अबाबील आदि दुफकी दुम वाली चिड़ियॉ हवा मे उड़ते समय अपनी दुम के ही सहारे इतनी आसानी से घूम सकती है। लेकिन मोर की तरह बहुत लबी दुम नाचने और मादा को रिझाने के लिए भले ही कुछ सहायक होती हो, उड़ने के समय तो वह एक प्रकार से बाधा ही पहुॅचाती है।

डैनो के बारे मे इतना जान लेना जरूरी है कि चिड़ियॉ उड़ते समय पख नही मारती जैसा बहुधा कहा जाता है। वे तो अपने डैनो को क्रम से आगे, नीचे, पीछे और ऊपर की ओर इस प्रकार गोलाकार घुमाती है जैसे कोई तैराक पानी मे तैरता हो। सिर्फ ऊपर नीचे पख मारने से तो आगे बढ़ने के बजाय वे उसी जगह उलट कर गिर जावेगी।

डैने और पर की तरह चोच और पैर की उँगलियों से भी हमे चिडियों की आदत का बहुत कुछ पता चलता है। टेढी चोच वाले बाज और लहटोरा जहाँ अपने शिकार को नोच-नोच कर खाते है वहीं चहा की लबी चोच जैसे कीचड़ खाने के लिए ही बनी है। इसी तरह कुररी और कौड़िल्ला आदि की लबी और नोकीली चोच को देख कर जहाँ हमको उनकी मछली की खूराक का पता चल जाता है वही दाना खाने वाली गौरैया अपनी मोटी चोच के कारण अपनी आदत और खूराक को छिपा नही सकती।

अबाबील और पतेना आदि चिड़ियाँ जो उडते समय कीडे पतगे पकड़ती है यदि बहुत चौडे मुँह की न हों तो उन्हे भूखा ही रह जाना पडे। पर जहाँ कीडों से पेट भरनेवाली चिडियों का काम मुलायम चोंच से ही चल जाता है वहाँ दाने पर जिन्दगी बसर करने वाली चिडियो के लिए मोटी और सख्त चोच एक बहुत जरूरी चीज मानी जावेगी।

पैर भी चिड़ियो को उनकी जरूरत और सहूलियत के ही मुताबिक मिले है। टीभू आदि पुरइन के पत्तों पर दौड़ने वाली छोटी चिडियो को मकड़ी की तरह के इतने बडे बड़े अगूठे मिले है कि उनके पैर का जोर एक जगह पर न पड़ कर पूरे पत्ते पर पडे, जिससे वे पानी मे डूब न सके। लेकिन बत्तखो को ज्यादातर पानी मे तैरने की जरूरत रहती है, इससे उनके अगूठे आपस मे जुडे रहते है कि और उनसे वे तैरने का काम अच्छी तरह ले सकती है। सारस की जात की लम्बी टाँग वाली चिडियो को तैरना नही पडता, इससे उनकी लम्बी टाग और भारी शरीर को सभालने के लिए कुछ बडे अगूठे जरूर दे दिए गए है, पर उनको आपस मे जोड़ने की कोई जरूरत प्रकृति ने नही समझी।

पेड़ पर बसेरा लेने वाली चिडियों का पिछला अगूठा बहुत मजबूत होता है, नही तो सो जाने पर उन्हे जमीन पर गिरने मे देर ही न लगे। शिकारी चिड़ियो के सब पजे बहुत मजबूत होते है क्योंकि उन्हे अक्सर अपने से भी वजनी शिकार को झपट्टा मार कर ऊपर ले जाना पडता है।

पैर, पर और चोंच से चिडियो को पहचानने मे हमे तभी आसानी होगी जब हम चिडियो को देख सके। लेकिन बाज-बाज पेड़ो मे छिपी रहने वाली या रात मे निकलने वाली चिडियो को पहचानने के लिए हमे बहुत कुछ उनकी बोलियों का सहारा लेना पडेगा। उनके बोलने और गाने के बारे मे हमे काफी ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि चिडियो के गाने या बोलने का कुछ मतलब जरूर होता है। वैसे तो चिड़ियो की बोली से हम थोडे दिनों मे ही उन्हे पहचानने लगेगे, पर उनके स्वर के उतार चढाव से उनके हृदय के भावो का कुछ अदाजा लगाने मे काफी समय लगाना पडेगा।

चिड़ियाँ हृदय के उद्वेग के कारण गाती है। उनका यह उद्वेग प्रसन्नता और क्रोध, दोनो ही रूप मे हो सकता है। हमको बसत मे चिडियों के गाने इसी कारण अधिकतर सुनाई देते है कि उस समय पक्षी अपने जोडे की तलाश मे इधर-उधर घूमते और प्रसन्न होकर गाते रहते है। कुछ चिड़ियाँ पतझड़ मे गाती है, कुछ गुस्सा होने पर और कुछ तो ऐसी भी है जो बारहो-मास गाती और प्रसन्न रहती है।

चिडियों की बोली हम चाहे न समझ सकें, लेकिन उसी जाति की दूसरी चिड़ियाँ उसका अर्थ समझ लेती है। उड़ने के लिए, उड़ते समय एक साथ रहने के लिए, अपने बच्चो को खतरे से होशियार करने के लिए, अपना गुस्सा दिखाने के लिए और चुप रहने के लिए चिड़ियॉ अलग-अलग तरीके से बोलती है, जिन्हे हम आसानी से नही समझ पाते। तो भी उनके क्रोध-पूर्ण कर्कश स्वर और अपने बच्चों के लार की मीठी और कोमल आवाज को तो हम सभी पहचान लेते है। भूख के समय का बच्चों का कातर शब्द भी हमसे छिपा नही रहता। पर जो लोग यह समझते है कि चिड़ियों की प्रत्येक बोली समझी जा सकती है, उनसे हम सहमत नही। किसी विशेष चिड़िया के साथ अपना यथेष्ट समय बिताने पर, और उसकी प्रत्येक बोली पर काफी ध्यान देने पर, हम उसकी बोली के बारे मे थोड़ा बहुत ज्ञान चाहे प्राप्त भी कर ले, पर सभी चिडियो की सभी बोलियों को आसानी से समझ लेना तो असंभव ही है।

चिड़ियो के स्थान-परिवर्तन (Migration) का ढंग भी कम मनोरजक नही है। हर साल मौसमी चिड़ियॉ अपने निर्दिष्ट मार्ग से—जो ज्यादातर समुद्र और नदियो के किनारे-किनारे होते है—लाखो की तादाद मे जाड़ो के प्रारभ मे उत्तर से दक्षिण की ओर, और जाडा समाप्त होने पर दक्षिण से उत्तर की ओर आती जाती रहती है।

हमारे देश मे भी सितम्बर से अक्टूबर मे उत्तर की ओर से मौसिमी चिड़ियो की बाढ सी आनी शुरू हो जाती है, जो सरदी के बढने के साथ ही साथ दक्षिण की ओर बढती जाती है। सरदी कम होते ही उनकी यह लहर फिर उत्तर की ओर लौटने लगती है और अप्रैल मई तक ये सब हमारे देश को छोडकर फिर उसी ओर लौट जाती है।

ये चिड़ियॉ ऐसे ही हवा के बहाव मे पड़ कर बह आती हों, सो बात नही है। इनमें दिशा-ज्ञान की ऐसी जबरदस्त समझ होती है कि इन्हे किस ओर जाना है, यह इन्हे भलीभॉति ज्ञात रहता है। यदि हवा अनुकूल न हुई तो भी ये अपनी यात्रा जारी रखती है। और कभी कभी तो अपने इच्छित स्थान पर पहुॅचने से पहले ही, इनको थक कर गिर जाते देखा गया है। समुद्र पार करते समय तो उलटी हवा अक्सर इनकी जान ले लेती है।

ऊॅची उड़ान मे भी इनको ज्यादा दिक्कत नही होती। हमारे देश मे प्रवेश करते समय ऊॅचा हिमालय भी इन्हे रोक नही पाता। हालॉकि इस पर जल्द विश्वास नही होता, पर यह सत्य है कि बाज बाज चिड़ियॉ काफी दूर तक, सौ मील फी घटे की रफ़्तार से उड़ लेती है। टिटिहरी की रफ्तार औसतन ५० मील फी घटा मानी जाती है। कुछ बत्तखे भी तेज उड़ने मे अपना सानी नही रखती।

यह तो हुआ मौसमी चिड़ियो के स्थान-परिवर्तन का हाल, पर हमारे यहॉ सदा रहने वाली बारह-मासी चिड़ियॉ भी ऋतु के साथ साथ थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेती है, जिसका कारण वही भोजन की तलाश है। लेकिन यह हमारे देश को छोड़ कर विदेश की ओर कभी नहीं जाती।

और बातो की तरह चिड़ियों के जोडा बॉधने का भी एक समय होता है, जब ज्यादातर चिड़ियों के नर को—अपना नाच, गाना, सुन्दर पोशाक तथा और तरह तरह के करतब दिखा कर—मादा पक्षी को प्रसन्न करना पड़ता है, तब कहीं जाकर वह अपनी स्वीकृति देती है।

मोर आदि सुन्दर भड़कीले पोशाक वाले पक्षी तो अपनी दुम फैलाकर इसीलिए नाचते ही है, पर और दूसरे पक्षी भी—जिनके बदन मे जरा भी सुन्दर या रगीन हिस्सा रहता है—मादा को दिखाने में नही चूकते। वे कभी दुम हिलाते है, और कभी आसमान में उडकर इस तरह की कलाबाजी दिखाते है कि, मादा मुग्ध होकर उनसे जोडा बॉध ले। कभी-कभी तो नर चिडियो की आपस मे अच्छी खासी लडाई हो जाती है, जिसमे हारनेवाला तो भाग जाता है, और जीतनेवाले से मादा जोडा बॉध लेती है।

बत्तखे नाच नही सकती, इससे वे मादा को खुश करने के लिए दोनो पेरा से खूब पानी उछालती है। और अपनी चोंच से फौआरे की तरह ऊपर की ओर पानी फेंकती है, जो देखने में बहुत सुन्दर लगता है। कुछ चिडियो के नर ऐसे भी है जो पहले ही से घोंसला बनाकर मादा की प्रतीक्षा करते है, और अपने घोसले मे अकेले बैठ कर तब तक गाते रहते है जब तक कोई मादा आकर्षित होकर उसका घर नहीं बसाती।

जोडा बॅध जाने के बाद घोंसला बनने की पारी आती है। जिसमे ज्यादातर नर और मादा दोनो मिल कर काम करते है, पर कोई कोई नर ऐसे भी होते है जो घोसले के निर्माण में मादा का किसी प्रकार हाथ नही बटाते। पक्षियो के घोसला बनाने का तरीका भी अलग अलग है। बया वगैरह कुछ चिडियॉ तो बहुत ही सुन्दर और आरामदेह घोसला बनाती हैं, पर कौए की तरह ऐसी भी कुछ चिड़ियॉ मौजूद है जो दूसरो के पुराने घोंसलो से अपना काम चला लेती है। कोयल और पपीहे इन सब से आगे बढ जाते है। ये घोसला बनाने का झंझट ही नही उठाते और अपने अडे दूसरो के घोंसलो मे चोरी से सेने के लिए रख आते है।

किनारे पर रहने वाली चिड़ियॉ अक्सर रेत में ही अडे देती है, और यही हाल तीतर बटेर आदि झाडी मे रहने वाले पक्षियो का है। बया के सुन्दर घोसले की तो बात ही निराली है, पर दर्जिन आदि कुछ चिडियॉ और भी है, जिनके घोसले कारीगरी के नमूने कहे जा सकते है। अबाबील और बतासी के घोंसले भी कम सुन्दर नहीं होते। प्याले की शकल के ये घोंसले खूबसूरत ही नही काफी गर्म भी होते है।

कुछ चिड़ियॉ पेड़ के तने काट कर अपना सुन्दर और सुरक्षित घोसला बनाती है। लेकिन जिनको प्रकृति ने लकडी काटने वाली चोंच नहीं दी, वे पेड़ के खोथो मे ही घास फूस रख कर अपना काम चला लेती हैं। शिकारी चिडियो के घोंसले तितरे बितरे से रहते हैं, पर धनेश (Horn Bill) अपनी मादा के बैठने वाले खोथे के मुँह को मिट्टी से ऐसा ढक सा देता है कि जिसमे बन्द रह कर वह दो तीन महीने अडे सेती रहती है। उसकी चोंच खोथे से बाहर जरूर निकली रहती है जिससे वह नर के लाए हुए दाना पानी से जिन्दा रह सके।

तालाबी चिड़ियों के घोंसले अक्सर पानी के किनारे घनी घास में छिपे रहते हैं। पर फ़ाखता के घोंसले की हालत बिल्कुल उससे उलटी होती है। इसके घोंसले को घोंसला न कह कर मचान कहें तो ज़्यादा ठीक होगा। तितरी बितरी दस बारह टहनियों को किसी दो फकी डाल पर बिछा कर सभी पँड़कियाँ ऐसे खुले में अंडे देती हैं कि जो ऊपर से ही नहीं बल्कि नीचे से भी दिखाई पड़ते रहते हैं।

धनेश

घोंसला तैयार हो जाने पर अंडों का वर्णन जरूरी हो जाता है। अंडों की तादाद, चिड़ियों के छोटे बड़े शरीर के अनुसार न होकर, किस नियम से तै की गई है यह तो मालूम नहीं, पर अक्सर देखा गया है कि जिन चिड़ियों के अंडों को शत्रुओं के द्वारा नष्ट होने का कम डर रहता है, वे साल में एक बार और एक ही दो अंडे देती हैं। पर जिनके अंडे अक्सर दुश्मनों के शिकार हो जाते हैं वे चिड़ियाँ ज़्यादा अंडे तो देती ही हैं, साथ ही साथ साल में इनके अंडे देने का समय भी दो बार हो जाता है।

अंडो के रंग में भी बहुत भेद रहता है। जिस प्रकार चिड़ियों की पोशाक का रंग मादा को आकर्षित करने के अलावा अपने छिपने में भी मदद देता है, उसी प्रकार अंडों के रंग भी अपने पास पड़ोस की वस्तुओं के रंग से इसीलिए मिलते-जुलते होते हैं कि वे जल्दी से दुश्मनों की निगाह में न पड़ें।

मिट्टी के सूराखों में दिए जाने वाले अंडे अक्सर सफ़ेद होते हैं। क्योंकि उस अंधकार में प्रकृति को बेकार किसी तरह के रंग खर्च करने की जरूरत नहीं जान पड़ती। पँड़की आदि के सफ़ेद अंडे खुले में रहने के कारण तेज रोशनी के चमक में एक प्रकार से छिप से जाते हैं। पर झाड़ियों के नीचे रहने वाले तीतर आदि के अंडे यदि मटमैली चित्तियों से भरे न रहें तो उन्हें देखने में देर ही न लगे।

अंडे पर बैठने का भी कोई खास नियम चिड़ियों में नहीं है। बहुत सतर्क रहने के कारण कौए के नर मादा दोनों बारी-बारी से अंडों पर बैठते हैं। कुछ की मादा अंडों पर से हटती ही नहीं और नर का काम सिर्फ उसे खिलाना भर रहता है। कोई कोई नर ऐसे होते हैं कि मादा को अंडे सेते समय कोई मदद ही नहीं देते। और कुछ चिड़ियों में ऐसा भी होता है कि नर मादा दोनों में से कोई भी अंडों की परवाह नहीं करता।

अंडे फूटने के बाद बाज बच्चे बिना पर के ऐसे भद्दे निकलते है, जिनकी शकल से उनके मा बाप का कोई अदाज ही नही लग सकता। कुछ चिडियो के बच्चों को तो काफी दिनों तक घोंसले में रहना पड़ता है, पर मुरगी बत्तख आदि के बच्चे फौरन ही चलने और तैरने लगते हैं। छोटे बच्चों के खिलाने का भार भी अक्सर नर मादा दोनो पर रहता है। गौरैया दाना खाने वाली चिडिया होने पर भी अक्सर अपने बच्चो के लिए कीडे मकोडे बिन लाती है। कबूतर तो अपने बच्चे के मुँह में अपनी चोंच डाल कर एक प्रकार का दाने का दूध सा रस भर देते हैं, जो गरदन के पास की एक थैली में जमा रहता है। जलकौआ की गरदन की थैली से तो उसके बच्चे खुद ही अपनी चोंच डाल कर मछलियाँ निकाल लेते है।

पर यह सब मुहब्बत थोडे ही दिनों तक रहती है। और पख निकलने पर बच्चो को घोंसला छोड़ कर चला जाना पड़ता है। इस प्रकार की बेमुरौवती अगर चिडियाँ न करे तो. एक ही दो साल मे उनके घोंसले भर जावे और उन्हे खुद ही अपनी जगह छोडनी पडे।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है—चिड़ियो की चोंच की बनावट से उनके खाने के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है। पर इसके यह माने नही है कि वे दूसरे क़िस्म का खाना खाती ही नही। अक्सर मौसम के साथ ही साथ कुछ चिड़ियो का खाना भी बदल जाता है।

खास तौर पर दाने पर गुजर करनेवाली चिडियां मे गौरैया आदि आती है जिनकी चोंच मोटी और इतनी मजबूत होती है कि बेर की गुठली के भी टुकड़े कर दे। पर ये दाने के अलावा मुलायम कलियाँ और कभी-कभी कीडे पतिंगे भी खा लेती है। कीडे पतिंगों से पेट भरने वाली चिड़ियों की चोंच पतली और नोकीली होती है, पर ये भी अपनी जबान का जायका बदलने के लिए जगली फल वगैरह खा लेती है।

तीसरी श्रेणी में मछली खाने वाली चिड़ियाँ आती है। इनकी चोंच या तो कौडिल्ले और बगलों की तरह लबी और नोकीली होती है या फिर जलकौए की तरह आगे की ओर मुडी हुई, जिससे एक बार पकडी जाने पर फिर मछली इसमे से फिसल कर निकल न जावे।

तोते, हारिल आदि पक्षी फलाहारी होते है और चहा आदि कीचड खाने वाले। इन सबके अलावा कुछ ऐसी सर्वभक्षी चिड़ियाँ भी हैं जिनको किसी चीज से परहेज नहीं होता। इनमे हमारे चिरपरिचित कौए का नाम सब से आगे है।

अन्त में गोश्तखोर चिड़ियों का नम्बर आता है जिसमें गिद्ध आदि कुछ तो मुर्दाखोर है, पर ज्यादातर ऐसे है जो छोटी चिड़ियों, चूहों और छिपकलियो का शिकार करते है।

चिडियों के दुश्मनों की भी कमी नही है। आदमियों के अलावा बाज, बहरी और उल्लुओ से इन्हे सदैव सतर्क रहना पडता है। और इसी लिए सतर्क रहने की एक ऐसी अनुभूति का विकास इनमें हुआ है कि ज़रा सा खतरा होने पर ही जैसे इन्हे पता सा लग जाता है, और ये अपने बचाव

का कोई न कोई उपाय ढूँढ़ लेती हैं। तीतर आहट पाते ही ऐसी चुप्पी साध कर झाड़ी में दुबक जाता है कि उसकी मौजूदगी का किसी को ख्याल भी नहीं होता। बतख आदि कुछ चिड़ियों के तो बाक़ायदा पहरेदार रहते है, जो दुश्मनों के आने की खबर उन्हे फौरन दे देते हैं। लेकिन चरखी आदि कुछ चिड़ियाँ जो आठ-दस के गोल मे रहती हैं, हमेशा आपस मे शोर मचा कर एक दूसरे को आगाह करती रहती हैं।

यह तो हुई चिड़ियों के दुश्मनों की बात, अब अन्त में हमे यह देखना है कि वास्तव मे ये चिड़ियाँ हमारी दोस्त है या दुश्मन? इनसे हमे कुछ लाभ भी होता है, या ये हमे सदा हानि ही पहुँचाती रहती हैं। इस प्रश्न पर विचार करने के अलग अलग दृष्टिकोण हैं। जहाँ उल्लू चूहों का शिकार करने के कारण किसानो का सहायक समझा जाता है, वहीं शिकारी लोग इससे इसलिए नाराज़ रहते हैं कि यह शिकार की चिड़ियो के चूजो को खाकर उनकी तादाद नही बढ़ने देता। तोतों पर जहाँ बालो के काट देने का इलजाम है, वही मछुओं को कुररियो से यह शिकायत है कि वे उनके हिस्से की मछलियों मे हिस्सा बँटा लेती हैं। इस प्रकार यदि सब अपने ही फायदे का पहलू देखने लगे तो, कोई न कोई चिड़िया जरूर किसी न किसी के लिए थोड़ी बहुत नुकसानदेह साबित होगी। पर यदि इस प्रश्न को सारी मनुष्य जाति की भलाई का ख्याल करके देखे तो, हमे पता चलेगा कि चिड़ियाँ हमारे लिए ही जरूरी नही हैं बल्कि, प्रकृति का समतुलन ठीक रखने के लिए भी इनकी बहुत आवश्यकता है।

मीठे गाने और सुंदर स्वरूप से दिल बहलाने की बात को यदि अधिक मूल्य न भी दिया जावे तो भी चिड़ियो के उपकार को हम भुला नही सकते। गिद्धो के न रहने पर, मरे हुए जानवरों की दुर्गन्धि से गाँवो मे रहना ही कठिन न हो जावेगा बल्कि—हम लोगों की तन्दुरुस्ती भी सुरक्षित न रह सकेगी। इसके अलावा कीड़े पतिंगे खाने वाली चिड़ियाँ न रहेगी तो, हमारे खेतो और बाग बगीचों की जो हालत होगी सो होगी ही—शायद किसी भी प्रकार की वनस्पति का तब रहना असभव हो जावेगा। यदि इतनी ज्यादा तादाद मे कीड़े मकोड़े इन चिड़ियो के द्वारा खा न लिए जावे तो, यह जो हरियाली हमारी पृथ्वी पर फैली है इसे ये कीडे देखते-देखते चट कर जावे। इस तरह एक के नाश से दूसरे की रक्षा, और दूसरे की रक्षा से तीसरे के नाश का, ससार का चक्र चलता रहता है। प्रकृति के इस नाश और सृजन के क्रम को समतुलन में रखने के लिए हमारी चिडियो को किसी से कम श्रेय नहीं दिया जाना चाहिए।

कालाकाँकर
२०-८-४१

सुरेश सिंह

अंडे फूटने के बाद बाज बच्चे बिना पर के ऐसे भद्दे निकलते है, जिनकी शकल से उनके मा बाप का कोई अदाज ही नही लग सकता। कुछ चिडियो के बच्चों को तो काफी दिनो तक घोसले में रहना पड़ता है, पर मुरगी बत्तख आदि के बच्चे फौरन ही चलने और तैरने लगते है। छोटे बच्चों के खिलाने का भार भी अक्सर नर मादा दोनों पर रहता है। गौरैया दाना खाने वाली चिड़िया होने पर भी अक्सर अपने बच्चो के लिए कीडे मकोडे बिन लाती है। कबूतर तो अपने बच्चे के मुँह मे अपनी चोंच डाल कर एक प्रकार का दाने का दूध सा रस भर देते हैं, जो गरदन के पास की एक थैली में जमा रहता है। जलकौआ की गरदन की थैली से तो उसके बच्चे खुद ही अपनी चोंच डाल कर मछलियाँ निकाल लेते है।

पर यह सब मुहब्बत थोडे ही दिनों तक रहती है। और पख निकलने पर बच्चो को घोंसला छोड कर चला जाना पड़ता है। इस प्रकार की बेमुरौवती अगर चिडियाँ न करे तो, एक ही दो साल मे उनके घोंसले भर जावे और उन्हे खुद ही अपनी जगह छोडनी पडे।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है—चिड़ियों की चोंच की बनावट से उनके खाने के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है। पर इसके यह माने नही है कि वे दूसरे क़िस्म का खाना खाती ही नहीं। अक्सर मौसम के साथ ही साथ कुछ चिडियो का खाना भी बदल जाता है।

खास तौर पर दाने पर गुजर करनेवाली चिडियों मे गौरैया आदि आती है जिनकी चोंच मोटी और इतनी मजबूत होती है कि बेर की गुठली के भी टुकडे कर दे। पर ये दाने के अलावा मुलायम कलियाँ और कभी-कभी कीडे पतिंगे भी खा लेती है। कीडे पतिंगो से पेट भरने वाली चिडियों की चोंच पतली और नोकीली होती है, पर ये भी अपनी जबान का ज़ायका बदलने के लिए जगली फल वगैरह खा लेती है।

तीसरी श्रेणी में मछली खाने वाली चिडियाँ आती है। इनकी चोंच या तो कौडिल्ले और बगलों की तरह लबी और नोकीली होती है या फिर जलकौए की तरह आगे की ओर मुडी हुई, जिससे एक बार पकडी जाने पर फिर मछली इसमे से फिसल कर निकल न जावे।

तोते, हारिल आदि पक्षी फलाहारी होते है और चहा आदि कीचड़ खाने वाले। इन सबके अलावा कुछ ऐसी सर्वभक्षी चिड़ियाँ भी हैं जिनको किसी चीज से परहेज नहीं होता। इसमे हमारे चिरपरिचित कौए का नाम सब से आगे है।

अन्त में गोश्तखोर चिडियों का नम्बर आता है जिसमें गिद्ध आदि कुछ तो मुर्दाखोर है, पर ज़्यादातर ऐसे है जो छोटी चिड़ियों, चूहों और छिपकलियो का शिकार करते है।

चिडियों के दुश्मनों की भी कमी नहीं है। आदमियों के अलावा बाज, बहरी और उल्लुओं से इन्हें सदैव सतर्क रहना पडता है। और इसी लिए सतर्क रहने की एक ऐसी अनुभूति का विकास इनमें हुआ है कि जरा सा खतरा होने पर ही जैसे इन्हे पता सा लग जाता है, और ये अपने बचाव

का कोई न कोई उपाय ढूँढ़ लेती हैं। तीतर आहट पाते ही ऐसी चुप्पी साध कर झाड़ी में दुबक जाता है कि उसकी मौजूदगी का किसी को ख्याल भी नही होता। बतख आदि कुछ चिड़ियों के तो बाक़ायदा पहरेदार रहते है, जो दुश्मनों के आने की खबर उन्हे फौरन दे देते हैं। लेकिन चरखी आदि कुछ चिड़ियाँ जो आठ-दस के गोल में रहती हैं, हमेशा आपस में शोर मचा कर एक दूसरे को आगाह करती रहती हैं।

यह तो हुई चिड़ियों के दुश्मनों की बात, अब अन्त मे हमे यह देखना है कि वास्तव में ये चिड़ियाँ हमारी दोस्त है या दुश्मन ? इनसे हमें कुछ लाभ भी होता है, या ये हमे सदा हानि ही पहुँचाती रहती हैं। इस प्रश्न पर विचार करने के अलग अलग दृष्टिकोण हैं। जहाँ उल्लू चूहों का शिकार करने के कारण किसानों का सहायक समझा जाता है, वही शिकारी लोग इससे इसलिए नाराज रहते हैं कि यह शिकार की चिड़ियो के चूजो को खाकर उनकी तादाद नही बढ़ने देता। तोतों पर जहाँ बालो के काट देने का इलजाम है, वही मछुओ को कुररियो से यह शिकायत है कि वे उनके हिस्से की मछलियों मे हिस्सा बँटा लेती हैं। इस प्रकार यदि सब अपने ही फायदे का पहलू देखने लगे तो, कोई न कोई चिड़िया जरूर किसी न किसी के लिए थोड़ी बहुत नुकसानदेह साबित होगी। पर यदि इस प्रश्न को सारी मनुष्य जाति की भलाई का ख्याल करके देखे तो, हमे पता चलेगा कि चिड़ियाँ हमारे लिए ही जरूरी नही हैं बल्कि, प्रकृति का समतुलन ठीक रखने के लिए भी इनकी बहुत आवश्यकता हैं।

मीठे गाने और सुदर स्वरूप से दिल बहलाने की बात को यदि अधिक मूल्य न भी दिया जावे तो भी चिड़ियो के उपकार को हम भुला नही सकते। गिद्धो के न रहने पर, मरे हुए जानवरों की दुर्गन्धि से गाँवो मे रहना ही कठिन न हो जावेगा बल्कि—हम लोगों की तन्दुरुस्ती भी सुरक्षित न रह सकेगी। इसके अलावा कीडे पतिंगे खाने वाली चिड़ियाँ न रहेगी तो, हमारे खेतो और बाग बगीचों की जो हालत होगी सो होगी ही—शायद किसी भी प्रकार की बनस्पति का तब रहना असभव हो जावेगा। यदि इतनी ज्यादा तादाद मे कीड़े मकोड़े इन चिड़ियों के द्वारा खा न लिए जावे तो, यह जो हरियाली हमारी पृथ्वी पर फैली है इसे ये कीडे देखते-देखते चट कर जावे। इस तरह एक के नाश से दूसरे की रक्षा, और दूसरे की रक्षा से तीसरे के नाश का, ससार का चक्र चलता रहता है। प्रकृति के इस नाश और सृजन के क्रम को समतुलन में रखने के लिए हमारी चिडियो को किसी से कम श्रेय नही दिया जाना चाहिए।

कालाकाँकर
२०-८-४१

सुरेश सिंह

सूची

बस्ती बाग़ की चिड़ियाँ

शिकारी चिड़ियाँ

शिकार की चिड़ियाँ

तालाबी चिड़ियाँ

किनारे की चिड़ियाँ

बस्ती बाग़ की चिड़ियाँ

बस्ती और बाग़ की चिड़ियाँ

इस अध्याय मे तैंतीस ऐसी चिड़ियो का वर्णन दिया जा रहा है, जिन्हे हम अपनी पड़ोसी चिड़ियाँ कह सकते है। पड़ोसी चिड़ियाॅ इसलिए कि इनमे से प्रायः सभी चिड़ियाॅ या तो हमारी बस्ती मे, या हमारे बाग, या पास के जगलो मे रहती है और इनको हम रोज ही देखा करते है।

इनमे से कुछ तो मौसमी है ; जो जाड़ों मे उत्तर से यहाॅ आकर गरमी शुरू होते होते फिर उत्तर की ही ओर लौट जाती है, और बाकी ऐसी है जो बारहो मास यहाॅ रहती हैं। इन बारहमासी चिड़ियों मे भी कुछ ऐसी है जो जाड़े मे हमारा देश तो नही छोड़ती पर थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेती है।

स्थान-परिवर्तन के अलावा भी इन चिड़ियों का विभाजन इनके रग-रूप, भोजन, आदत और बोलियो के द्वारा किया जा सकता है। पर सब के गुण दोष इनके बयान के साथ दिए जा रहे है, इससे उनको यहाॅ दोहराना फ़िजूल ही होगा।

अबाबील और बतासी

[Swallow and Swift]

यहाँ पर जितनी चिडियो का हाल बताया जावेगा उनमे कुछ तो जमीन पर रहने वाली है और कुछ पानी मे। कुछ ऐसी भी है जो अपनी खूराक के लिए जमीन पर तो उतर आती है पर वैसे हमेशा पेड़ों पर ही रहती है। लेकिन अबाबील का हाल सब से विचित्र है। इसके पजों मे कोई अंगूठा पीछे की ओर नही होता जिससे यह डाल पकड सके। इसलिये यह अपने घोसले ही मे रहती है और वहीं से उड कर फिर वही वापस चली जाती है, चिड़िया होकर भी अपने छोटे पैर और लम्बे डैने के कारण यह एक बार जमीन पर उतर कर फिर नही उड़ सकती।

इसकी तलाश मे दूर नही जाना पडेगा। किसी पुराने मकान, बडे मन्दिर या मस्जिद के आस पास, जहाँ इनके घोसलों की कतारे रहती है, इनके झुन्ड के झुन्ड उड़ते हुए मिलेगे। यह दिन भर उड़ कर भी जैसे थकती ही नही, और यह बात नही है कि इसकी उड़ान की तेजी यही गाँवो तक ही रहती हो, जब यह कही बाहर उड़ कर जाती है तो इसकी रफ्तार ७०, ८० मील फी घन्टे हो जाती है। उड़ते समय अपने लम्बे पखो को ताने हुए यह उनके कोने थोड़ा थोड़ा हिला कर जैसे हवा को चीरती चली जाती है।

अबाबील हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो थोडा बहुत स्थान परिवर्तन तो जरूर करती है, पर हमारे देश को छोड कर कहीं बाहर नही जाती। इसका मुख्य भोजन हवा मे उडने वाले पतिगे है, जिन्हे यह अपने चौडे मुँह मे उड़ते ही उड़ते पकड़ लेती है।

अबाबील

इसके नर और मादा का रग-रूप एक ही सा होता है। लम्बाई मे यह ६ इन्च से ज्यादा नही होती।

अबाबील का ऊपरी हिस्सा कुछ नीलापन लिए चमकीला काला होता है। जिसमे दुम की जड के पास खैरा चित्ता रहता है। सर के बगल के हिस्से भूरे, गले के चारो ओर एक कत्थई पट्टी और नीचे का हिस्सा कत्थई छूकर हलका ललछौंह हो जाता है। इस पर छोटी छोटी खड़ी भूरी लकीरे पड़ी रहती हैं।

इसकी आँख की पुतली भूरी तथा चोच और पैर काले होतें है। दुम लबी और दोफकी रहती है।

यह अडे देने और घोंसला बनाने मे भी अन्य चिड़ियों से अलग है। इसके घोंसले घास-फूस या टहनियों के न होकर मिट्टी के होते हैं, जो प्राय. स्थायी रूप से बने रहते हैं। इन घोंसलों के लिए यह उड़ते-उड़ते ही किसी मिट्टी के भीटे मे चोंच मार कर मिट्टी खुरच लेती है, जो इसके थूक मे मिल कर नरम और चिपचिपी हो जाती है। इसी पदार्थ से यह बहुत सुंदर और मजबूत घोंसला बनाती है, जिन्हे देखने से ऐसा जान पड़ता है कि जैसे किसी ने छत पर मिट्टी का कटोरा चिपका दिया हो, इसके भीतर जाने के लिए छत के पास एक छेद रहता है, जिसमे से इसे बराबर आते जाते देखा जा सकता है।

यह घोंसला भीतर से परो वगैरह से मुलायम कर दिया जाता है, जिसमे मादा अप्रैल मे अगस्त तक मे तीन चार दूध से सफेद अडे देती है।

अबाबील से मिलती जुलती एक और चिड़िया होती है जिसे अक्सर लोग अबाबील ही समझते है। इसका असली नाम बतासी (Swift) है। इसमे और अबाबील मे बहुत सी बाते एक जैसी होते हुए भी ये दोनो दो जाति की चिड़िया है।

इसकी खूराक, उड़ान और अडो की सख्या, रग तथा नाप अबाबील से मिलती जुलती होने पर भी इन दोनो के रग-रूप और घोंसले मे काफी फर्क रहता है।

बतासी का रग कलछौंह लिए स्याह होता है, जिसमे ठुड्डी, गला तथा दुम की जड़ के पास का कुछ हिस्सा सफेद रहता है। माथे और दुम के निचले हिस्से का रग कुछ हलका हो जाता है। पर आंख के पास एक गाढ़ा चित्ता साफ दिखाई पड़ता रहता है।

आंख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली और पर कलछौंह भूरे होते हैं। इनके नरमादा एक ही शकल के होते है।

बतासी
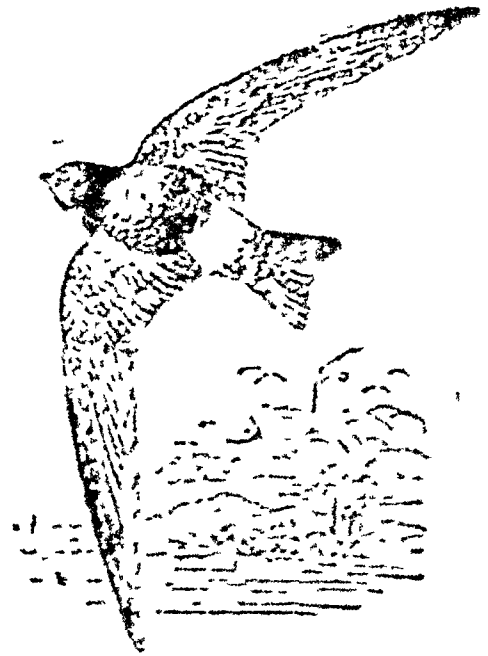
कठफोर

[Wood Pecker]

कठफोर के बारे मे यह जानना जरूरी है कि अपने नाम के मुताविक यह हमेशा लकड़ी नहीं काटा करता। यह तो सिर्फ पेड़ के तने को अपनी चोच से ठोकता भर रहता है जिससे पपड़ियों के नीचे रहने वाले कीडे जरा ऊपर आ जावे और उसकी लम्बी जबान वहाँ तक पहुँच सके। उसकी जबान ऐसी चिपचिपी होती है कि उसको छूते ही कीड़े उनमे चिपक जाते है और फिर सीधे उसके पेट मे पहुँच जाते है। इसका कठफोर नाम इसलिए पड़ा है कि यह अपने रहने भर के लिए पेड़ के तने को काट कर सूराख बना लेता है, जिसका वर्णन आगे आवेगा।

वैसे तो इसे हर एक बाग मे पेड़ के तनो मे चिपका देखा जा सकता है, पर जब यह एक पेड़ से उड कर दूसरे पर जाता है तो अपने रग-रूप और तेज बोली के कारण इसका छिपना कठिन हो जाता है। जमीन पर इसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा।

कठफोर यहाँ का बारह मासी पक्षी है जो घने जगलों से ज्यादा खेतों से मिले हुए पुराने बागों मे रहना पसन्द करता है, क्योंकि वहाँ उसे पपड़ियो के नीचे रहने वाले कीड़े काफी मिलते है जो उसकी खास खूराक है। इसकी कई जातियाँ होती है पर आदत प्राय सबकी एक सी ही होती है। इससे यहाँ सिर्फ उसी कठफोर का वर्णन किया जा रहा है जिसे हम अक्सर देखते है।

११ इच की इस सुन्दर चिडिया के नर और मादा मे थोड़ा सा ही फर्क होता है। नर का माथा और चोटी सुर्ख और गर्दन काली जिसमे आँख के नीचे से डैने तक एक सफेद धारी चली आती है। पेट और सीना चितकबरा, दुम और उसका निचला हिस्सा काला और पीठ सुनहली रहती है। मादा मे सीने का रग ज्यादा सफेद होता है। इसके अलावा वह और बातो मे नर से मिलती जुलती होती है।

कठफोर

आँख की पुतली भूरापन लिए लाल, चोच सिलेटी और पैर हरापन लिए गाढ सिलेटी होते है।

कठफोर के घर बनाने का ढग निराला ही है। फरवरी से जुलाई के बीच मे जब इसके अन्डे देने का समय आता है तो यह किसी मोटे पेड़ के तने मे अपनी तेज़ और नोकीली चोच से इतना बड़ा सूराख कर लेता है कि जिसमें यह आसानी से आ जा सके। बाहर तो यह छेद २ इन्च व्यास तक का होता है पर भीतर ही भीतर बढ़ाकर यह छ सात इंच व्यास तक का कर लिया जाता है जिसमे बैठ कर मादा अन्डे सेती है।

कठफोरिया

[Nuthatch]

पेड़ की डाल-डाल पर गिलहरी की तरह फिरने वाली इस चिड़िया का नाम कठफोरिया न होकर 'पेड़ घुमनी' होता तो ज्यादा सही होता, क्योंकि कठफोर की तरह यह लकड़ी नहीं काटती; बल्कि पेड़ की पपड़ियों से छोटे छोटे कीड़ों की तलाश में ही यह पेड़ भर का चक्कर लगाती रहती है। खंजन की तरह इसको एक जगह पर स्थिर देखना सम्भव नहीं। फिर कोई बाग-बगीचा शायद ही ऐसा मिले जिसमें यह देखी न जा सके।

यह गौरैया के बराबर की हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जिसके नर और मादा अलग अलग रंग के होते हैं। नर का ऊपरी हिस्सा सिलेटी मायल नीला और नीचे का कत्थई रहता है। चोंच से दोनों कंधों तक एक एक काला पट्टा सा रहता है और गले का निचला हिस्सा सफेद होता है। जब तक कठफोरिया उड़ती नहीं इसके नीचे का कत्थई रंग दिखाई देना कठिन है। मादा में थोड़ा ही फर्क रहता है। इसके नीचे का रंग कत्थई न होकर बादामी होता है और गाल के पास की सफेदी उतनी स्पष्ट नहीं होती जितनी नर की।

आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली और पैर हरापन लिए गाढ़ सिलेटी होते हैं।

कठफोरिया पेड़ की शाखों पर आसानी और तेजी से ऊपर नीचे घूमती रहती है; क्योंकि इसके पंजे का पिछला अंगूठा काफी लम्बा होता है। इसकी चोंच भी बहुत तेज और नोकीली होती है जिससे पेड़ की पपड़ियों में से यह आसानी से कीड़े चुन सके, जो इसका मुख्य भोजन है।

कठफोरिया मार्च में पेड़ के खोखलों में मुलायम अंडे देती है। पेड़ के खोखले को पत्तियों से कर लिया जाता है। इसमें मादा सफेद रंग के दो से छः तक सुन्दर अन्डे देती है; जिन पर लाल चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। अपने अंडों को गिलहरी, कौओं आदि दुश्मनों से बचाने के लिए कठफोरिया आने जाने के लिए एक छोटा सूराख छोड़कर खोखले का भाग में एक प्रकार की चिकनी मिट्टी से बन्द कर देती है जो सूखने पर सीमेन्ट की तरह कड़ी हो जाती है।

कठफोरिया

कोयल

[Koel]

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने कोयल का नाम न सुना होगा। हा यह जरूर सच है कि इसको देखा बहुत ही कम लोगों ने होगा। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी यह प्यारी चिडिया कभी जमीन पर उतरती ही नहीं। घनी अमराइयों मे इस पेड से उस पेड पर जाते हुए भी अक्सर इसे कौआ समझकर लोग इसे पहचानते नही। कोयल हमारी चिडियो मे सबसे मीठी बोली बोलने वाली चिडिया मानी जाती है और वास्तव मे यह है भी ऐसी ही। वसन्त के बाद आम मे बौर आए नही कि कोयलों की एक बडी सख्या हमारे प्रान्त मे फैल जाती है और कू ऊ ऊ ऊ, कू ऊ ऊ ऊ करके गर्मी के आगमन की सूचना देने लगती है।

कोयल

यह हिन्दुस्तान के लिए तो बारहमासी चिडिया है पर हमारे प्रान्त को जाड़ों में छोड कर धुर दक्खिन चले जाने के कारण इसको यहाँ मौसमी चिडियो मे शामिल कर लिया जाता है। इसका नर धुर चमकीला काला रहता है पर मादा भूरी होती है। इसके पेट पर जहाँ हलका रग रहता है वहाँ गहरी भूरी और डैने आदि पर जहाँ गहरा रग रहता है वहा सफेद चित्तियाँ रहती है। दुम पर गहरी भूरी और सफेद धारियाँ रहती हैं। मादा की शकल थोडी बहुत पपीहे से मिलती जुलती होती है इसी कारण कुछ लोगों में यह गलतफहमी फैल गई है कि पपीहा कोई अलग पक्षी नही बल्कि कोयल की मादा ही है। पर बात ऐसी है नही। पपीहा एक दूसरी ही चिडिया है।

कोयल की लम्बाई लगभग १७ इंचके होती है। इसकी आँख की पुतली सुर्ख, चोंच धूमिल हरी और पैर गहरे सिलेटी रग के होते है। यह मुख्यतया फल खाने वाली चिड़िया है और इसी कारण ज्यादातर पेड़ों पर ही रहती है। इसके अडा देने का समय तो जून है पर इसके अडा देने का हाल बहुत दिलचस्प है।

यह स्वय घोंसला न बनाकर कौए के घोसले मे अपने अन्डे सेने के लिए दे आती है; और चूँकि कौआ अपने अंडो को अकेला नही छोड़ता और नर या मादा कोई न कोई अन्डों पर बैठा ही रहता है इससे कोयल को उसे धोखा देना पड़ता है। नर कोयल जो कौए की शकल की होती है घोंसले के पास जाकर इतना उत्पात मचाती है कि वहाँ के सब कौए जिसमें अन्डा सेने वाली मादा भी रहती है उसे खदेड़ लेते है। वह भागती है और तेज उड़ने के कारण कौओ के पकड़ाई मे न आकर उन को इधर उधर दौड़ाती रहती है। तब तक मादा घोसले मे जाकर कौए के कुछ अडे गिराकर स्वयं अडे दे देती है। अंडा फूटने और बचों के वडे होने पर कहीं जाकर असली भेद खुलता है और तब वे कौए के घोंसले से खदेड़ दिए जाते है।

इसके अडो का रग नीलापन लिए हरा होता है जिस पर कत्थई चित्तियाँ पडी रहती है।

कोयल

[Koel]

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने कोयल का नाम न सुना होगा। हाँ यह जरूर सच है कि इसको देखा बहुत ही कम लोगों ने होगा। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी यह प्यारी चिड़िया कभी जमीन पर उतरती ही नहीं। घनी अमराइयों में इस पेड से उस पेड पर जाते हुए भी अक्सर इसे कौआ समझकर लोग इसे पहचानते नहीं। कोयल हमारी चिड़ियों में सबसे मीठी बोली बोलने वाली चिड़िया मानी जाती है और वास्तव में यह है भी ऐसी ही। वसन्त के बाद आम में बौर आए नहीं कि कोयलों की एक बडी संख्या हमारे प्रान्त में फैल जाती है और कू ऊ ऊ ऊ, कू ऊ ऊ ऊ करके गर्मी के आगमन की सूचना देने लगती है।

कोयल

यह हिन्दुस्तान के लिए तो बारहमासी चिड़िया है पर हमारे प्रान्त को जाड़ों में छोड कर धुर दक्खिन चले जाने के कारण इसको यहाँ मौसमी चिड़ियों में शामिल कर लिया जाता है। इसका नर धुर चमकीला काला रहता है पर मादा भूरी होती है। इसके पेट पर जहाँ हलका रंग रहता है वहाँ गहरी भूरी और डैने आदि पर जहाँ गहरा रंग रहता है वहाँ सफेद चित्तियाँ रहती हैं। दुम पर गहरी भूरी और सफेद धारियाँ रहती हैं। मादा की शक्ल थोडी बहुत पपीहे से मिलती जुलती होती है इसी कारण कुछ लोगों में यह गलतफहमी फैल गई है कि पपीहा कोई अलग पक्षी नहीं बल्कि कोयल की मादा ही है। पर बात ऐसी है नहीं। पपीहा एक दूसरी ही चिड़िया है।

कोयल की लम्बाई लगभग १७ इचके होती है। इसकी आँख की पुतली सुर्ख, चोंच धूमिल हरी और पैर गहरे सिलेटी रग के होते है। यह मुख्यतया फल खाने वाली चिड़िया है और इसी कारण ज्यादातर पेड़ों पर ही रहती है। इसके अडा देने का समय तो जून है पर इसके अडा देने का हाल बहुत दिलचस्प है।

यह स्वय घोंसला न बनाकर कौए के घोसले में अपने अन्डे सेने के लिए दे आती है; और चूँकि कौआ अपने अडो को अकेला नही छोड़ता और नर या मादा कोई न कोई अन्डों पर बैठा ही रहता है इससे कोयल को उसे धोखा देना पड़ता है। नर कोयल जो कौए की शकल की होती है घोंसले के पास जाकर इतना उत्पात मचाती है कि वहाँ के सब कौए जिसमें अन्डा सेने वाली मादा भी रहती है उसे खदेड़ लेते है। वह भागती है और तेज उडने के कारण कौओ के पकडाई मे न आकर उन को इधर उधर दौड़ाती रहती है। तब तक मादा घोसले में जाकर कौए के कुछ अडे गिराकर स्वयं अडे दे देती है। अडा फूटने और बच्चा के बडे होने पर कही जाकर असली भेद खुलता है और तब वे कौए के घोंसले से खदेड़ दिए जाते है।

इसके अंडो का रग नीलापन लिए हरा होता है जिस पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती है।
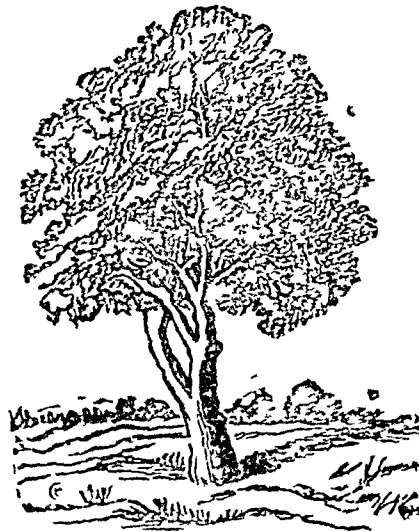
कौआ

[Crow]

कौए के ज्यादा परिचय की जरूरत नही। इससे हम सभी परिचित है। कोई बस्ती या कोई घर शायद ही ऐसा हो जहाँ सवेरा होते ही ये न पहुँच जाते हों। गौरैयों की तरह कौए भी आदमियों में इतने हिलमिल गए हैं कि एक तरह से ये हमारे घर के प्राणी ही हो गए हैं। लेकिन गौरैयों के समान ये सीधे नही होते, इनसे तो परेशान हो जाना पड़ता है।—सर्वभक्षी होने के कारण यह मुमकिन नही कि कोई खाने पीने की चीज इनके चोंच मारने से बच जावे। चोरी और ढिठाई के साथ ये मक्कार भी परले सिरे के होते हैं इससे मनुष्यो को इनके हमलो से हमेशा सतर्क ही रहना पड़ता है।
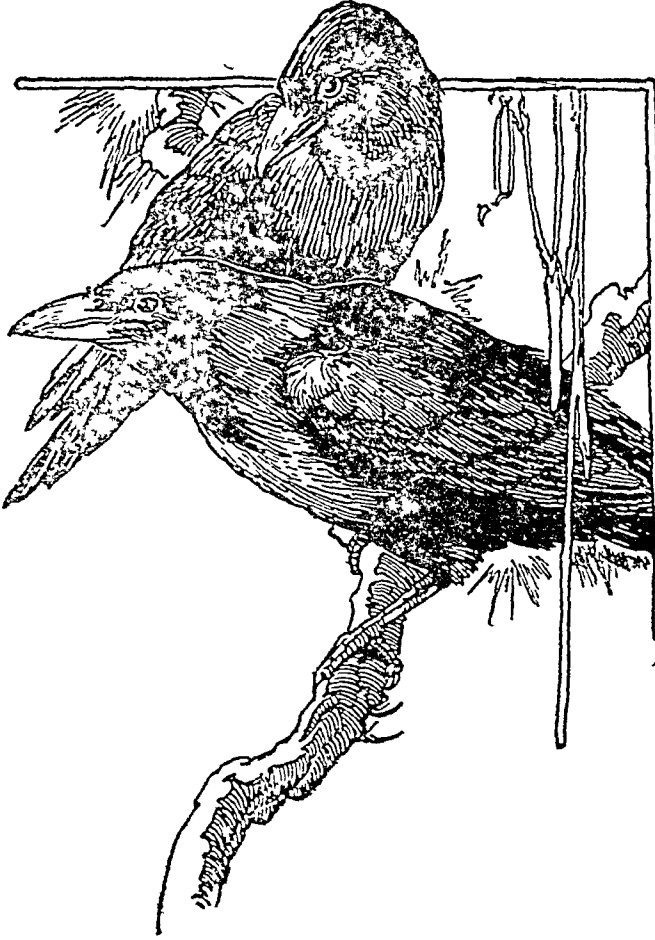
नौआ कौआ

कौआ यही का बारहो महीने रहने वाला पक्षी है जो ज्यादातर आबादी के निकट ही रहता है। इसकी दो मुख्य जातियाँ हैं—एक मामूली छोटा कौआ और दूसरा बडा या काला कौआ। छोटा कौआ १७ इंच लबा और बडा २४ इंच तक का होता है। रग-रूप मे दोनो मे फर्क जरूर रहता है पर आदत दोनों की एक जैसी ही होती है।

काला कौआ धुर काला और चमकीला होता है। इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी और पैर काले होते हैं। इसके नर और मादा एक शकल के होते हैं। इसको 'डोम कौआ' कहते है।

लेकिन छोटे कौए की आँख की पुतली, चोच और पैर का रग बडे कौए की तरह होने पर भी उसके वदन का रग कुछ दूसरा ही होता है। इसकी गरदन से लेकर सीने तक सिलेटी रंग की चौड़ी पट्टी होती है और बाकी रग काला होता है। इसके भी नर मादा एक ही शकल के होते हैं। इसे देहातो में 'नौआ कौआ' के नाम से पुकारा जाता है।

दोनो कौओं के अडे देने के समय मे भी थोड़ा फर्क है। डोम कौआ फ़रवरी के अत में अडे देने के लिए घोसला बनाने लगता है पर छोटा या नौआ कौआ जून के आखीर तक इन्तजार करता है। दोनो सूखी टहनियो या पेड़ की किसी ऊँची डाल पर भद्दा सा घोसला बनाते है जिसका भीतरी हिस्सा सूखी नारियल की जटा तथा बाल वगैरह लगा कर मुलायम कर लिया जाता है।

घोसला बन जाने पर और समय आने पर मादा चार से छः तक अडे देती है। काले कौए के अडे हरे रग के होते है जिन पर गहरे बादामी रग की चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। पर छोटे कौए के अडो का रंग नीलापन लिए हरा होता है। धब्बे इन पर भी होते हैं पर गाढ़े पीले और भूरे रग के। वैसे बनावट मे तो दोनों एक जैसे होते है पर छोटे कौए के अडे कुछ छोटे होते हैं।

दूसरी चिड़ियो के अडे चुराने मे कौए बडे उस्ताद होते है यही कारण कि अडे के बारे में ये सबसे सतर्क समझे जाते है। दूसरों के अडे चुराते चुराते इन्हे अपने अंडों को अकेले छोड़ने मे डर लगा रहता है, इससे नर या मादा दोनों में से एक घोसले मे पहरे के लिए बैठा ही रहता है लेकिन कोयल इनकी आँख मे धूल झोक कर अपने अडे सेने के लिए इनके घोसले मे रख ही देती है।

डोम कौआ

गौरैया

[Sparrow]

कौए की तरह गौरैया भी घर की चिडिया है। दिन भर घर मे चूहे की तरह घूमने वाली यह छोटी चिड़िया, कौए की तरह कॉव-कॉव करके हमे परेशान नही कर देती। मनुष्यों पर यह इतनी निर्भर रहती है कि कोई घर ऐसा न मिलेगा जहॉ इसके दर्शन न होते हों।

इसके नर मादा की शकल मे फर्क होता है। नर के सर का ऊपरी भाग सिलेटी, चोंच से दोनों आँखों तक बगल और चोंच से गरदन के नीचे सीने तक काला रहता है। पीठ और डैने कत्थई भूरे जिसमें छोटी-छोटी काली और सफेद धारियॉ, दुम गहरी भूरी, जिसके किनारे हलके बादामी और गाल तथा बाकी निचला हिस्सा हलका राख के रग का रहता है। मादा की गरदन से लेकर निचला हिस्सा नर जैसा, ऊपरी हिस्सा भूरा, डैने गहरे भूरे जिस पर नर जैसी काली और सफेद धारियॉ और ऑख के ऊपर एक आडी सी हलकी बादामी रेखा होती है।
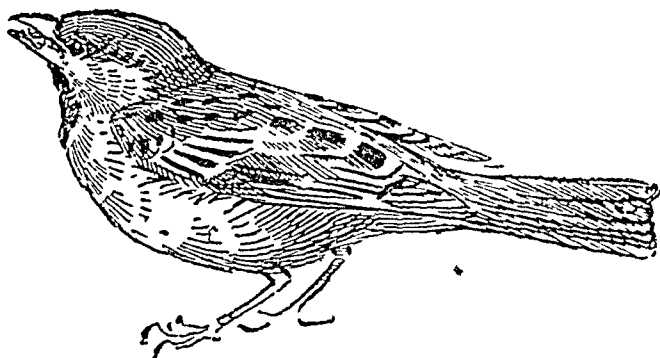
इसकी ऑख की पुतली, चोंच और पैर भूरे रग के होते हैं। चोच दाना खानेवाली चिड़ियों जैसी मोटी होती है। नर की चोंच वैसे तो भूरी रहती है पर गरमी मे इसका रग काला हो जाता है।

गौरैया छोटी सी छः इच की प्यारी सी चिडिया है जिसके बिना सचमुच घर सूना लगने लगे। यह हमारा कुछ नुकसान नही करती। हॉ, अपना घोसला बनाने के लिए यह किसी भी ऊँचे सूराख या कोने को जरूर नहीं छोडती और तब काफी गन्दगी फैलाती है। घोसले का काम बारहों महीना चलता ही रहता है और इसके घोसले मे साल मे सभी महीनो मे अडे मिल सकते है। घोसले इसके कद को देखते हुए बडे और बदशकल होते है जिसमे यह घास-फूस, रुई, ऊन, कागज आदि जिस चीज के भी छोटे टुकडे पाती है लगाती रहती है।

इसके अन्डे राख के रग के होते है। जिन पर सिलेटी और भूरी चित्तियॉ पड़ी रहती है। तादाद मे यह चार पाच तक हो जाते है।

इनकी और भी कई जातियॉ हैं पर एक मुख्य जाति का यहॉ जिक्र कर देना अनुचित न होगा। यह 'तूती' कहलाती है। शकल सूरत तथा और सब बातों मे तूती मादा गौरैया की तरह होती है पर यह घर के भीतर न आकर बागों तक ही रह जाती है। इसके गले का निचला हिस्सा पीला होता है।

चरखी या सतबहिनी

[Babbler or Seven Sisters]

शहर या गाँव का कोई भी बगीचा ऐसा न होगा जिसमे चरखियाँ न दिखलाई पड़े। इनको पहिचानने के लिए ज्यादा तलाश नही करनी पड़ती। इस डाल से उस डाल पर फुदक कर और हद से ज्यादा शोर मचा कर यह स्वय ही अपनी ओर सब का ध्यान खींच लेती है।

इनका दूसरा नाम 'सतबहिनी' भी है। यह नाम शायद इसलिए पड़ा है कि ये हमेशा सात आठ की झुन्ड मे रहती है। यह गिरोह किस प्रकार बनते है यह तो मालूम नही पर देखा यह गया है कि एक बार का बना हुआ गिरोह एक साल तक कायम रहता है।

इनके शोर मचाने से हम भले ही परेशान हो जाते हो पर आपस मे इकट्ठा रखने के लिए इनको इससे बहुत सहायता मिलती है क्योकि जमीन पर कीड़े बिन-बिन कर खाते समय पूरे गिरोह को स्वय तो चौकन्ना रहना ही पड़ता है साथ ही साथ हर एक को शोर मचा कर दूसरो को सतर्क रखना पड़ता है।
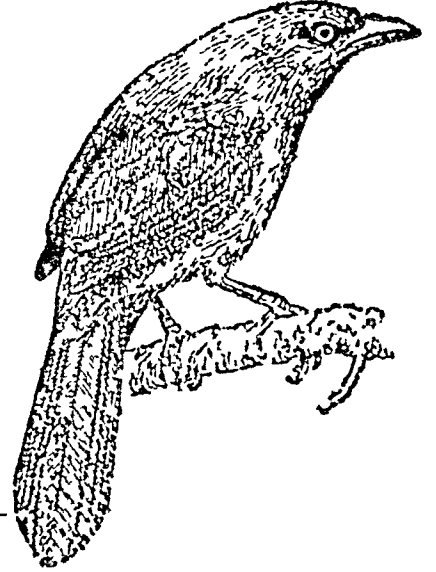
चरखी के रग रूप का वर्णन बहुत आसान है। दस इच की मटमैले रग की चिड़िया जिसका ऊपरी हिस्सा गदा मटमैला, निचला हिस्सा कुछ पीलापन लिए राख के रग का, दुम बिड़री और ढीली सी जान पड़ती है जैसे गिर पडेगी। इसकी आँख की पुतली पीलापन लिए सफेद रहती है। चोंच प्याजी और पैर भी प्याजी और पीलापन लिए सफेद रहते है।

चरखी यहीं की रहने वाली बारहमासी चिड़िया है—जो दूर देश तो क्या ज्यादा दूर तक भी नहीं उड़ सकती। वैसे तो यह गन्दी, सीधी और बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया होती है, पर इसमें बहादुरी की कमी नहीं होती। जहाँ कही किसी दुश्मन चिड़िया ने किसी एक पर हमला किया नहीं कि बाकी साथी उस पर टूट पड़ते हैं और फिर उसे मुशकिल का सामना करना पड़ता है।

इसके अन्डे देने का समय—मार्च से शुरू हो कर सितम्बर तक रहता है, पर जून जुलाई में इसके घोंसले मे अन्डे देखे जा सकते है। यह दस फीट से ज्यादा ऊँचाई पर घोंसला नहीं बनाती। छोटे और गहरे घोसले मे मादा वैसे तो तीन ही चार सुन्दर नीले चमकदार अन्डे देती है लेकिन अक्सर इनकी तादाद चरखी की सिधाई के कारण बढ़ जाती है। बात यह होती है कि इनके घोंसलो मे पपीहा की मादा अपने अन्डे सेने को रख जाती है, जो एक ही रग के होने के कारण इसके अन्डे से इतने मिल जाते हैं कि यदि चरखी सीधी न हो कर कौए सी चालाक भी होती तो भी उसे कोई सन्देह न होता।

चंडूल

[Lark]

चडूल हमारी गानेवाली चिड़ियो मे मैना और कोयल की तरह अपना एक विशेष स्थान रखता है। इसके भाई बन्धु तो कई है पर हमारे यहाँ दो ही एक के अलग नाम है, बाकी सबको 'भरत' कहते है। अगरेजी का मशहूर स्काई-लार्क (Sky Lark) जो गाने के लिए प्रसिद्ध है हमारे यहाँ भरत ही कहलाता है। चडूल भरत की वह जाति हुई जिसके चोटी होती है। इसमे और स्काईलार्क मे सिर्फ इतना फर्क होता है कि इसके चोटी होती है और उसके चोटी नही होती।
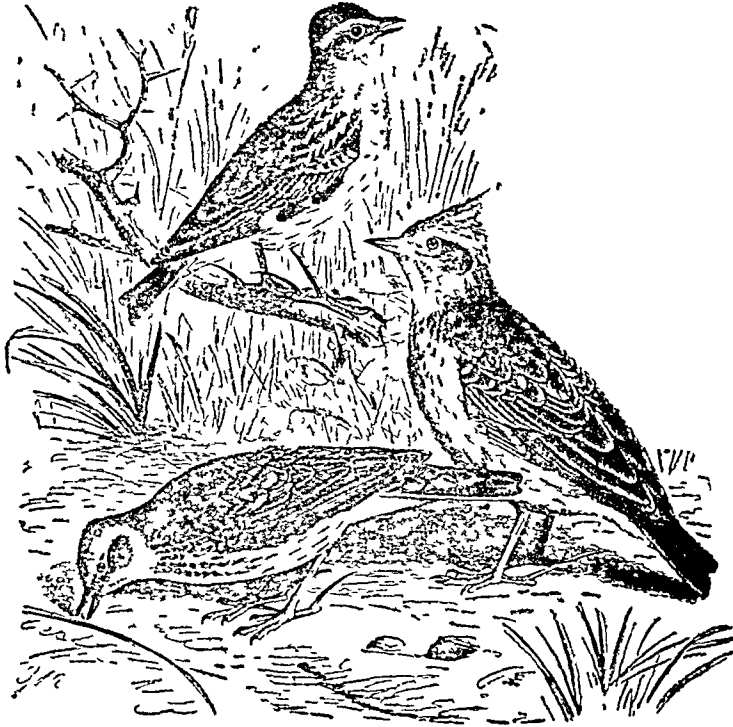
अगिन

दबक चिरई चडूल

चडूल यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो कद मे गौरैया से जरा बड़ा पर बनावट मे उससे पतला होता है। इसके नर और मादा का रग एक जैसा होता है। ऊपर का हिस्सा मटैला जिसमे कालापन लिए गहरी भूरी धारियाँ, डैने भूरे और दुम भी भूरी होती है। इसका सीना और पेट तक का हिस्सा पीलापन लिए भूरा होता है और आँख के ऊपर से गर्दन तक एक धूमिल पीली पट्टी चली आती है।

इसकी आँख की पुतली हलकी भूरी, चोच और पैर हरापन लिए सिलेटी रग के होते है। इसके सर पर चोटी रहती है।

चडूल को बलुही जमीन काफी पसद है। गाँव के बाहर खुले मैदानों मे इन्हे बडी आसानी से देखा जा सकता है। यह काफी निडर चिड़िया है और आदमियो को काफी पास तक जाने देती है।

अपनी तेज़ और सुन्दर बोली के कारण इसे अक्सर शौकीनो के पिजड़े का बन्दी होना पड़ता है। पर इसकी बोली तो उसी समय सुनने लायक होती है जब यह खुले मैदानो मे आजाद हो कर गाता है।

यह जमीन से ३०—४० फीट ऊँचा उड़ कर बहुत तेज स्वर मे बोलता है और फिर नीचे उसी स्थान पर आकर बोलता है जहाँ से उड़ा था। कुछ सेकन्ड रुक कर यह फिर उसी तरह उड़ कर बोलता है और इस प्रकार यह सिलसिला कुछ देर तक जारी रहता है।

इसकी एक जाति 'अगिन' (Bush Lark) कहलाती है और 'दूसरी दबक' चिरई (Finch Lark)। अगिन की शकल चंडूल से बहुत मिलती जुलती होती है। हाँ, उसके चोटी जरूर नही होती और पंख के बीच में एक लाल पट्टी रहती है जो उड़ने पर साफ दिखाई देती है।

अगिन भी गाने मे चडूल से कम नही होती। इसकी आवाज मे चडूल की सी तेजी जरूर नहीं होती लेकिन मिठास उतनी ही रहती है।

अगिन को चंडूल की तरह खुले मैदान ज्यादा पसद नही आते। यह पानी के आसपास के जंगलों और झाड़ियों के मैदानो मे ज्यादा पाई जाती है। इसे भी लोग इसकी बोली के लिए पिंजडों में पालते हैं।

दबक चिरई चडूल से छोटी होती है और इसकी शकल चडूल से ज्यादातर गौरैया से मिलती है, क्योंकि इसकी चोच एकदम गौरैया की तरह मोटी होती है। इनका रग तो चडूल की तरह भूरा होता है पर चोच की जड़ से एक कत्थई पट्टी आँख से होते हुए गर्दन तक चली जाती है। नीचे का रग कत्थई होता है जो आगे जाकर सीने और पेट तक फैल जाता है।

दबक चिरई को 'भरदूल' भी कहते है। ये बडे बडे गोल मे रहने वाले छोटे से पक्षी हैं जिन्हे खुले मैदान ज्यादा पसंद आते हैं।

इनका गाना मीठा होकर भी जी ऊबा देने वाला होता है क्योकि ये एक तरह की ही आवाज करते रहते हैं।

चडूल के अडा देने का समय मार्च से जून तक रहता है। इसका घास-फूस का घोसला जमीन पर छिछले प्याले सा रखा रहता है जिसमे भीतर बाल और ऊन वगैरह लगा रहता है।

अडों की तादाद ३ से ५ तक होती है। इनका रग हलका पीलापन लिए सफेद होता है, जिस पर भूरे और बैंगनी चिन्ह पडे रहते हैं।

ठठेरा

[Copper Smith]

बसता की एक छोटी जाति भी होती है जो शकल सूरत मे बसते से न मिल कर भी आदत में उससे बहुत कुछ मिलती है। इसे ठठेरा या छोटा बसता कहते हैं। यह भी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है पर फुदकी की तरह छोटी होने के कारण यह अक्सर हमारी निगाह के सामने आकर चली भी जाती है और हम इसकी ओर ध्यान भी नही देते।

ठठेरा

इसके डैने, पीठ और दुम धानी रग के होते हैं, लेकिन गर्दन और सर बहुत सुन्दर रग का रहता है, जिसमे माथा और गर्दन का निचला थोडा हिस्सा लाल रग का होता है। चोंच के नीचे, आँख के ऊपर नीचे तथा गरदन का बाकी हिस्सा चटकीला पीला होता है। चोंच से लेकर आँख से होती हुई गरदन तक एक काली पट्टी चली आती है जहाँ से वह सर के ऊपर की ओर घूम जाती है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली तथा पैर सुर्ख रग के होते है।

बडे बसते की तरह यह भी यहाँ के बागो मे रहने वाली चिड़िया है जो फलों से अपना पेट भरती है और जिसे पेड़ पर से नीचे आने की जरूरत ही नही पड़ती। इसके नर और मादा एक ही रग के होते है, जो पत्तियों मे ऐसे छिप जाते है कि यदि यह बोले नहीं, तो पता भी न चले कि यह किसी पेड पर है भी या नही। इसकी बोली दिन भर सुनी जा सकती है और जब यह बोलने लगती है तो ऐसा जान पडता है जैसे कोई ठठेरा काम कर रहा है। इसी से इसको ठठेरा नाम दिया गया है।

फरवरी से मई तक ठठेरा के अन्डे देने का समय है। बसते की तरह यह भी किसी डाल को काट कर अपना घर बना लेती है। इसके घर का सूराख बाहर से देखने से एक रुपये के बराबर ही होता है, जिसका मुँह ऊपर की ओर यह इस डर से नहीं रखती कि कही बरसात का पानी इसमे न भर जावे।

मादा ठठेरा तीन-चार अडे देती है जो दूध से सफेद होते हैं।

तोता

[Parakeet]

उन पालतू चिड़ियों मे तोता सब से आगे है जिसे लोहे के पिंजड़े में सारी उम्र बिता देनी पड़ती है। यदि इनकी कैद का कारण थोड़ी देर के लिए हम अपने खेतो का नुकसान भी मान लें, तब भी हमको यह मानना ही पडेगा कि जहॉ कौओ को इसके लिए कतई कोई सजा नही मिलती, वहॉ इनको जरूरत से ज्यादा सजा दी जाती है। पर ये कैद अपनी बदमाशी के कारण नही बल्कि अपनी बोली के कारण किए जाते है।

तोते की वैसे तो अनेको जातियॉ हैं पर हमारे यहॉ ज्यादातर इनकी दो ही जाते आती है। हरा तोता या ढेलहरा (Green Parakeet) और टुइयॉ (Blossom headed Parakeet) पहिले ढेलहरा का वर्णन दिया जा रहा है।

ढेलहरा मय अपनी लम्बी दुम के कद मे १६ इच का पक्षी है। इसके नर का ऊपरी हिस्से का रग चमकीला हरा होता है, जो गर्दन तक पहुँच कर धानी हो जाता है। डैने गहरे हरे और दुम के बीच के पर आसमानी और बाक़ी धानी होते है। गर्दन के ऊपरी हिस्से मे एक लाल कंठानुमा पट्टी रहती है और निचली चोंच और इस कठे तक दोनों गालो पर चन्द्राकार काली धारियॉ रहती है। निचला हिस्सा भी धानी ही होता है। मादा भी करीब-करीब इसी रङ्ग की होती है। इसका गुलाबी कठा और गाल की काली लकीरे गाढ हरे रङ्ग में जरूर बदल जाती है।
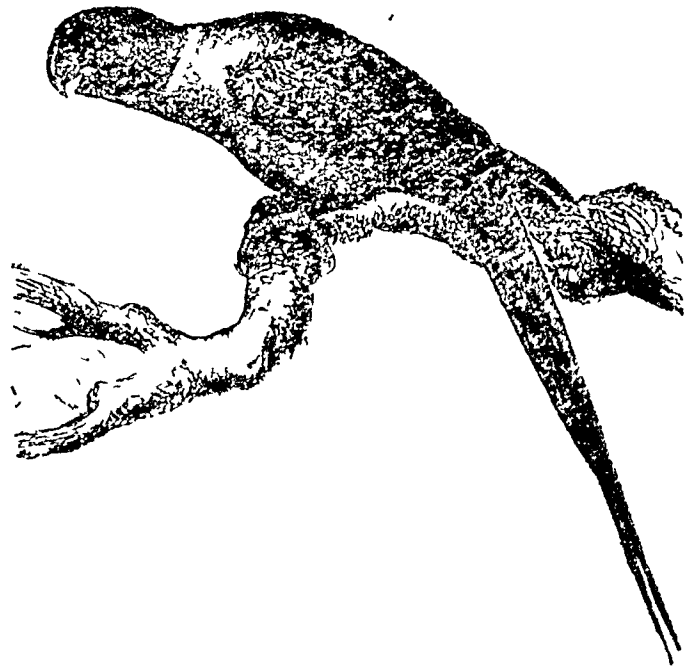
ऑख की पुतली हलकी बादामी, चोंच लाल और पैर हरापन लिए हलके सिलेटी रग के होते हैं।

इसकी ऊपर की चोंच बहुत टेढी होती है जो निचली चोंच पर काफी ऊपर तक चढी हुई रहती है। तेज़ तो यह इतनी होती है कि यदि इसे लोहे के पिंजड़े में न बन्द किया जावे तो यह लकड़ी का पिजडा काट कर फ़ौरन उड़ जावे।

ढेलहरा या हरा तोता यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो गिरोह ही मे रहता और बसेरा करता है। फल और खेतो की बाल पर जो इनके हमलों को जानते है, उनसे इनकी खूराक के बारे मे बताने की ज्यादा जरूरत नही। यह इतनी तेजी से उड़ते है कि इनकी लम्बी दुम किसी प्रकार इसमे बाधा नही डाल सकती। वैसे तो इनकी बोली बडी कर्कश होती है, पर पढ़ाने से यह शरारती होते हुए भी बहुत जल्द पढ जाते हैं और आदमियो की बोली की नकल करने लगते है।

तोते घोंसले नही बनाते। पेड के खोथों मे इनकी मादा चार से छ. तक अडे देती है जो धुर सफेद रहते है। खोथे न मिलने पर इन्हे अपनी तेज चोंच का सहारा लेना पडता है और कठफोर की तरह ये पेड के तनो को छेद कर सूराख बना लेते है।

टुइयाँ तोता हरे तोते से कुछ छोटा होता है पर इसकी शकल सूरत और बाकी सब आदते एक जैसी होती हैं। हाँ रग मे जरूर फर्क रहता है। इसके नर का सर बैगनी लिए हुए लाल रग का होता है—जैसे अधपकी जामुन। इसके बाद ही गर्दन के चारो ओर एक काला कठा रहता है और उसके बाद से चटक हरा रंग शुरू होता है जो दुम तक चला जाता है। निचला हिस्सा धानी और डैने गाढे हरे होते हैं, जिन पर दोनो ओर एक-एक लाल चित्ता रहता है। मादा के गले के कठे का रंग पीला होता है और उसके सर का रग जामुन के रग की जगह कुछ बैंगनीपन लिए हुए ऊदी रग का होता है।

इनकी आँख की पुतली हलकी पीली, ऊपरी चोंच नारगी और नीचे की कलछौंह रहती है। पैर धुमैले हरे रग के होते है।

इन दोनों तोतो के अलावा एक बडा या पहाड़ी तोता भी हमारे यहा अक्सर पिजड़ो मे दिखाई पडता है। इसको 'परवत्ता' या 'करन तोता' भी कहते हैं। शकल सूरत मे तो यह ढेलहरा तोता जैसा ही रहता है लेकिन इसका कद उससे बडा होता है। पढाए जाने पर यह बहुत बोलता है और फिर घर मे जो बाते यह रोज रोज सुनता है उसकी हूबहू नकल उतार लेता है। यह हमारे उत्तरी पहाड़ो का निवासी है।

तोते को पढाने के समय उसको लोग अक्सर खाने के लिए लाल मिरचे देते है। कहते हैं इससे वे बहुत जल्द बोलना सीख लेते है।

एक और तोता यहा के पहाडों पर पाया जाता है जिसकी पोशाक नीली होती है—यह 'मदन-गोर' तोता कहलाता है। इसकी आदते और दूसरे तोतो जैसी ही होती है।

थरथर कँपनी

[Red Start]

थरथर कँपनी को तलाश करने के लिए दूर नही जाना पड़ेगा। मकान के छज्जो के नीचे और साएदार वृक्षो की निचली डालियो पर इसे आसानी से देखा जा सकता है। वैसे यह गन्दे काले रग की छोटी सी चिड़िया है, इससे निगाह से बच जाती है, पर थोड़ी देर इधर उधर निगाह दौड़ाने से यह दिखाई न पड़े यह सम्भव नही। जो ऊपर नीचे दुम हिलाने की इसकी आदत को जानते है, वह इसे देखते ही पहचान लेते है। क्योकि नीची डालो पर से जमीन पर कीड़े-मकोडो के लिए आने पर इनकी दुम हिलती ही रहती है।

थरथर कँपनी

यह मौसमी चिड़िया सितम्बर के आखीर मे हमारे देश मे आती है और अप्रैल के शुरू होते होते फिर अपने देश को लौट जाती है।

यह छः इच की धूमिल काले रग की चिड़िया है। जिसके नर का ऊपरी हिस्सा धुँधला काला होता है और दुम के निचले हिस्से से लेकर पेट तक का रग नारगी भूरा होता है। दुम का ऊपरी हिस्सा कत्थई रग का होता है। मादा के पेट का रग कुछ बादामी लिए हुए भूरा रहता है। इसकी आँखो के चारों ओर एक पीला छल्ला सा रहता है। बाकी कुल बाते नर की तरह होती है।

इसके अडे देने का समय जून है जब यह यहाँ नही होती। इससे इसका घोसला हम यहाँ नही देख सकते पर उसका वर्णन तो पढ़ ही सकते है। यहाँ तो यह पेड़ के खोखलो मे रात बिता लेती है, पर जब अडे देना होता है तो यह पुराने मकान के छज्जो के नीचे या पहाड़ियों पर पत्थर के नीचे अपना, छोटी-छोटी टहनियों का, घोसला बनाती है; जिसमे मादा चार से छः तक अडे देती है। इसके अडे प्रायः दो रग के होते है—पीले और हरापन लिए हुए नीले या एकदम सफ़ेद और चमकदार।

दँहगल

[Magpie Robin]

छोटी सी यह चितकबरी चिडिया देखने मे ही सुन्दर हो यह बात नही—गाने में भी यह अपना सानी नही रखती। श्यामा और चङूल की तरह इसे भी लोग पिंजडे मे पालते है, पर इसकी मीठी बोली आधे अप्रैल से आधी जुलाई तक ही सुनने को मिलती है। इसे बारहमासी चिडिया कह सकते हैं। हालाँकि जाड़ो मे यह अपने रहने के स्थान मे कुछ तब्दीली कर लेती है।

दँहगल

दँहगल को न तो घनी झाड़ियाँ पसद है और न एकदम खुले मैदान। बाग़ मे, जहाँ इसके रग की तरह धूप छाया फैली रहती है, हम इसे अक्सर देख सकते है।

इसके पहिचानने के लिए इसका रग ही काफी है। फिर भी कीडों के लिए जमीन पर दौड़ना और थरथर-कँपनी की तरह रुक कर दुम उठाना गिराना इसकी विशेषता है।

दँहगल आठ इच की छोटी चिडिया है, जिसके नर मादा मे थोडा फर्क होता है। नर का सर, गरदन, सीना और पीठ चमकीले काले रग की होती है। नीचे का हिस्सा सफेद होता है। पूँछ उठी हुई, जिसमें बीच के दो पख काले और बाकी सफेद होते हैं। डैने काले जिसके बीच मे सफेद धारी होती है। मादा भी करीब करीब ऐसी ही होती है। फर्क इतना ही रहता है कि नर के जिस हिस्से मे स्याही रहती है मादा के वहाँ कलछौह भूरा होता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और पैर गाढ सिलेटी होते है।

दॅहगल के अडा देने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है लेकिन इनके घोसलो मे अडे ज्यादा-तर अप्रैल और मई ही मे मिलते हैं। यह अपना घास, पर और पत्तियो का छोटा मुलायम घोसला—पेड़ के खोथों, मकान के छज्जों या नदी किनारे ऊँचे कगारो पर बनाती हैं। जिसमे मादा चार-पाँच नीला और पीलापन लिए हरे रग के चमकदार अडे देती है।

अडे फूटने पर दॅहगल के बहुत शोर मचाने वाले बच्चे निकलते हैं। बच्चो की बोली पहले तो सूखी और कर्कश रहती है, पर शीघ्र ही वह पुराने दॅहगलों की तरह—सुबह शाम पेड़ की ऊँची शाख पर बैठ कर ऐसी मीठी बोली बोलने लगते है कि सुन कर तबीयत खुश हो जाती है।

दॅहगल की जात की एक और चिड़िया हमारे गाँवो के आसपास अक्सर दिखाई पड़ती है जिसको 'दामा' या 'कलचिरी' कहते है।

दामा हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जिसे घने जगलो से ज्यादा बाग-बगीचे और बस्ती का पासपड़ोस पसद आता है। यह अपनी दुम थोड़ी थोड़ी देर मे ऊपर की ओर उठाया करती है जिससे इसको पहचानने मे देर नही होती।

दामा का नर चमकीले काले रग का होता है और मादा गाढ़ भूरे रग की। नर के कधो पर सफेद चित्ते रहते हैं और नर मादा दोनो की दुम के नीचे का हिस्सा कत्थई रहता है। यह लाल हिस्सा इसके बार बार दुम उठाने से साफ दिखाई पड़ता है। गाँव मे इसी से इसको 'ललगडी' भी कहते हैं।

दामा काफी ढीठ चिड़िया है जिसका मुख्य भोजन कीडे फतिगे हैं। इसे दॅहगल की तरह मीठी बोली प्रकृति ने जरूर नही दी लेकिन इसके जोड़ा बाँधने के समय की बोली किसी कदर मीठी जरूर कही जा सकती है।

दामा

मार्च से अगस्त के बीच मे मादा दामा कई अडे देती है जो किसी दीवाल, भीटे या पेड़ के सूराख मे मिल सकते हैं। अंडो का रंग वैसे तो सफेद होता है लेकिन उन पर भूरी या कत्थई चित्तिया पड़ी रहती है।

नीलकंठ

[Blue Jay]

नीलकठ को तो बहुत से ऐसे लोगों को भी नजदीक से देखने का मौका मिला होगा जिन्हे चिडियो से प्रेम नही है। इसका दर्शन शुभ माना जाता है और दशहरे आदि त्योहारों पर छोड़ने के लिए बहेलिए अक्सर इन्हे पकड़ लाते हैं।

नीलकठ
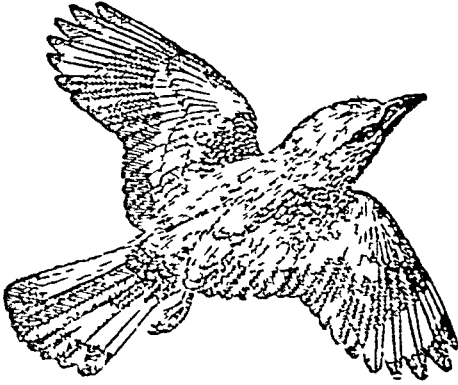
नीलकठ का कठ ,तो नीला नही होता, हाँ! पख जरूर नीले होते हैं। इसके नर और मादा एक शकल के होते है। इसके सर के बीच मे एक आसमानी चित्ती होती है, इसके बाद पीठ तक भूरा रग चला आता है फिर हरी और आसमानी हलकी और गहरी नीली लकीरे रहती है। डैने और दुम की भी यही हालत रहती है, आगे आसमानी फिर हलका नीला और बाद को गहरा नीला हो जाता है। दुम के बीच के दो पख गन्दे हरे रग के होते है, और सीना ललछौह कत्थई रग का होता है जिसमें छोटी २ खड़ी धारियाँ पड़ी रहती है। पेट का रङ्ग बादामी और दुम के नीचे फिर आसमानी रग आ जाता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच कालापन लिए गहरी भूरी और टाँगे गहरी बादामी रग की होती है।

नीलकठ मैदान मे रहनेवाली हमारी बारहमासी चिड़ियो मे से एक है, जो कीड़ों-मकोड़ो को तलाश मे दिन भर खेतों मे घूमा करता है। देखने मे तो यह काहिल और सुस्त सा जान पड़ता है पर तेज यह इतना होता है कि—जहाँ कोई कीड़ा जमीन पर हिला नही कि इसने कूद कर उसे पकड़ा।

इसके जोड़ा बाँधने का ढग भी मजे का है। कुछ अन्य चिडियो की भाँति नर नीलकंठ मादा को खुश रखने के लिए उसके आगे अपना करतब दिखाता है। पहले वह ऊपर उड़ जाता है, फिर नीचे की ओर ऐसे गिरता है मानो मर गया हो, पर जमीन पर आने से पहले ही वह सँभल कर ऊपर उड़ जाता है। इस प्रकार यह मादा को खुश करके जोडा बाँध लेता है। और तब दोनों घोसला बनाने की फिक्र मे लग जाते है।

इसके अडा देने का समय मार्च से जुलाई तक है। जब मादा किसी पेड़ के खोथे मे चार-पाँच चीनी मिट्टी के रग के सफेद अडे देती है।

पतेना

[Bee Eater]

पतेना हरे रग की चिड़िया होते हुए भी हरियाली में छिप जावे—यह बात नही। इसके सुन्दर हरे रंग के साथ साथ सुनहले रग की एक ऐसी मिलावट रहती है जो सूरज की किरण पड़ने पर चमक उठती है। यह ज्यादातर अपने छोटे छोटे पंख फैलाए कीडे-पतिगो के फिराक में उडा ही करती है। बागो के अलावा इसे हम नहर और नदी के किनारे अक्सर देख सकते है।

यह यहाँ की बारहमासी सुन्दर चिडिया है जो जाड़े में यही थोड़ा सा स्थान परिवर्तन कर लेती है। इसका मुख्य भोजन पतिंगे है जिनका यह उड़ते ही उडते शिकार कर लेती है।

पतेना

पतेना के नर मादा एक जैसे होते है। वैसे तो इसकी लम्बाई सात ही इञ्च की होती है, पर अपनी दुम के बीच के दो पतले लम्बे पंखो को लेकर यह नौ इञ्च की हो जाती है। इसका समूचा रग चटक हरा होता है, जिसमें चोच के नीचे से लेकर गले का निचला हिस्सा नीला रहता है। उसके आगे फिर एक काला कठा होता है। चोच की जड से आँख होते हुए एक काली लकीर चली जाती है। गर्दन के दोनो बगल थोड़ा-थोड़ा और डैने के ऊपर का कुछ और नीचे का समूचा हिस्सा सुनहला

रहता है। दुम के बीच के दोनों पतले पंख काले होते हैं। आँख की पुतली खूनी, चोंच काली और पैर गहरे सिलेटी रङ्ग के होते है। चोच लम्बी, नुकीली और नीचे की ओर कुछ झुकी हुई रहती है।

पतेना की एक और जाति होती है जिसे बडा पतेना या 'पतरिग' कहते हे। इस जाति के पक्षी कुछ वडे तो होते ही है—उनके रग मे भी कुछ थोड़ा फरक होता है। इनकी दुम नीली, गरदन पीली और सीना कत्थई होता है। बाकी आदतें एक जैसी होती हैं।

पतेना खुद तो अक्सर गोल बाँध कर पेड़ की किसी डाल पर बसेरा लेता है, पर अंडा देने के लिए यह अपनी नोकीली चोच से मिट्टी खोद कर कगारों मे सूराख बना लेता है। ये बिले ५--६ फीट तक गहरी होती है, साथ ही साथ ये भीतर जाकर टेढी भी हो जाती है। इन्हे दरिया के किनारे ऊँचे कगारों मे बडी आसानी से देखा जा सकता है।

बिलों के भीतर जमीन पर ही मादा अप्रैल से जून तक ३ से लेकर ५ तक दूध से सफेद अडे देती है, जिन पर किसी किस्म की चित्तियाँ नहीं होतीं।

पपीहा

[Hawk Cuckoo]

कोयल के नाम के साथ पपीहा का नाम जुड़ा सा है, पर कोयल की तरह पपीहे को भी कम ही लोगों ने देखा होगा। इसे न देख कर भी इसकी 'पी कहाँ', 'पी कहाँ' की तेज बोली से हम सभी परिचित हैं। जब पपीहा बोलने लगता है तो एक के बाद दूसरा स्वर ऐसा ऊँचा चढाता जाता है कि जान पड़ता है कि इसका गला फट जावेगा। इसकी यह बोली वसन्त के बाद से बरसात तक अक्सर सुनी जाती है।

कोयल की तरह यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो जाड़ों में दक्खिन की ओर चला जाता है। कुछ पपीहे यहाँ हमारे प्रान्त मे रह भी जाते है, पर चूँकि ये ज्यादातर पेड़ों पर ही रहते हैं इससे हम लोग इन्हे नही देखते। और देखते भी होंगे तो इनको शिकरा समझ कर न पहिचानते होंगे। पपीहे के नर मादा एक जैसे होते है, और इनकी शकल सूरत शिकरे से बहुत मिलती जुलती है। हाँ, लम्बाई मे १५-१६ इन्च का होने के कारण ये उसके बच्चे जान पड़ते हैं।

पपीहा
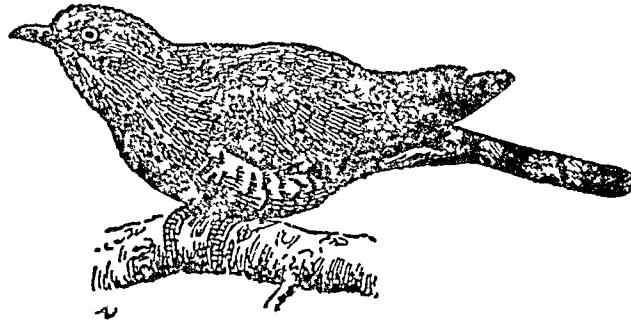
पपीहे के डैने और ऊपरी हिस्से का रग हलका सिलेटी भूरा होता है; जिस पर दुम के पास से चल कर कुछ सफेद छोटी-छोटी धारियाँ रहती है। दुम लम्बी जिसके बीच दो चार काली और सफेद आडी पट्टियाँ और दुम के छोर पर एक सफेद धारी रहती है। नीचे चोंच से लेकर सीने तक सफेदी लिए हुए हल्का सिलेटी रग रहता है और पेट के पास भूरी धारियाँ रहती है।

इसकी आँख की पुतली पीली, चोन्च हरापन लिए पीली, जिसका आगे का हिस्सा काला रहता है। टाँगे भी पीली ही होती है।

पपीहे की एक और जाति होती है, जो हमारे प्रान्त में सिर्फ बरसात में दक्खिन की ओर से आती है। इसे काला पपीहा या 'चातक' कहते है। कद मे यह भूरे पपीहे के बराबर ही होता है पर इसके बुलबुल या चण्डूल की तरह चोटी भी होती है। चोटी से लेकर इसका ऊपर का हिस्सा चमकीले काले रग का होता है। पख के सिरे के पास एक सफेद आड़ी धारी जरूर रहती है। दुम लम्बी होती है,

जिसका बाहरी किनारा सफेद होता है। इसके नीचे का हिस्सा भी सफेद होता है। इसकी बाकी और सब आदतें भूरे पपीहे जैसी होती है।

पपीहा वैसे तो फल खाने वाली चिड़िया है पर कीडे मकोड़ो से भी इसे परहेज नही है। रोएँदार जुरई (कमरा) को तो यह बडे स्वाद से खाता है जिसे बहुत चिडियाँ शायद खाना पसन्द न करें।
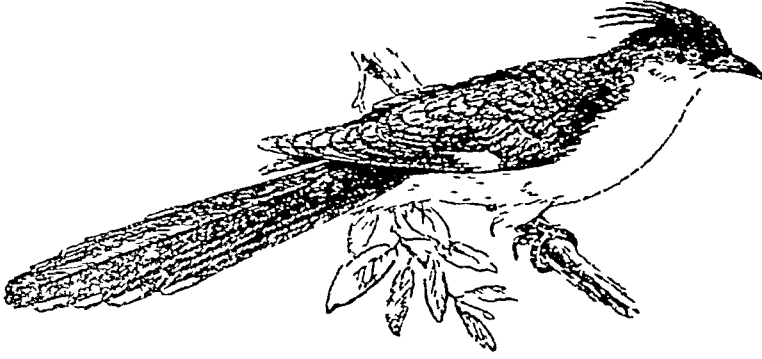
चातक

इसके अडे देने का समय अप्रैल से जून तक रहता है। कोयल की तरह यह भी अडे न सेकर दूसरो से ही यह काम लेता है। कोयल को तो कौए जैसे मक्कार पक्षी को धोखा देना पडता है पर इसको यह दिक्कत नहीं उठानी पड़ती। यह चरखी जैसी सीधी चिडिया से यह काम लेता है। चरखी को पता भी नही चलता और इसकी मादा उसके अडों के पास अडे दे आती है। अडे फूटने के बाद भी चरखी को पता नही चलता और इसके बच्चों को वह पाल-पोस कर बडा कर देती है।

पपीहे के अडे चरखी के अडे की तरह नीले रग के होते हैं। पर नाप मे ये उससे कुछ बडे होते हैं।

पिद्दा

[Bush Chat]

पिद्दा लगभग पाँच इंच का सुन्दर चितकबरा पक्षी है जो हमारे देश के मैदानो मे काफी सख्या मे फैला हुआ है। इसकी एक नहीं अनेकों जातियाँ हैं जो सारे देश मे पाई जाती है लेकिन इसके छोटे कद के कारण सबको फुदकी ही समझा जाता है।

पिद्दे का सारा बदन वैसे तो काले रग का होता है लेकिन इसके दोनो कन्धो पर एक एक सफेद चित्ते रहते है। सीने से दुम के नीचे तक का हिस्सा भी सफेद रहता है। इस प्रकार देखने से यह चितकबरा लगता है। पिद्दी काली न होकर भूरी होती है और उसके दुम का निचला हिस्सा भी सफेद न होकर खैरा रहता है। दोनो की आँख की पुतली गाढ भूरी और चोंच तथा पैर काले रहते है।

इसके चितकबरे नर और भूरी मादा को हम अक्सर किसी झाड़ी, सरपत या और किसी ऊँची घास की फुनगी पर बैठा देख सकते है। इसे घने जगलों से खुले मैदान, घास और झाड़ियों का पास पड़ोस ज्यादा पसद आता है।

पिद्दा हमेशा चोटी पर ही बैठा रहता हो सो बात नही है। खाने के लिए तो इसे जमीन पर उतरना ही पड़ता है, क्योकि हवा मे उड़ने वाले कीड़े पतिगों से जब इसका पेट नही भरता तो इसे मजबूरन कीडे मकोड़ों के लिए जमीन की शरण लेनी पड़ती है।

जोड़ा बाँधने के समय पिद्दा मादा को रिझाने में कोई कोर कसर नही उठा रखता। वह बार-बार अपने डैनो पर के सफेद चित्तों को मादा को दिखाता है और उसके बाद किसी ऊँची फुनगी पर से दुम फैलाकर गाता हुआ ऊपर उड़ता है। कुछ दूर ऊपर जाकर वह फिर धीरे धीरे गाता हुआ नीचे उतरता है और इसी प्रकार नाच गाकर वह एक को रिझा लेता है। वैसे तो पिद्दे की बोली बहुत कर्कश होती है लेकिन इस समय इसके गाने में न जाने कहाँ से बहुत मिठास आ जाती है।

पिद्दा के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक है जब इनके सुन्दर कटोरानुमा घोसले किसी सूराख, झाड़ी या घास के नीचे ज़मीन पर रखे मिल सकते है। ये घोसले घासफूस और पतली जड़ों से बनाए जाते है जिनमे ऊन बाल या परो का नरम अस्तर दे दिया जाता है। मादा इसमे चार पाच सफेद अडे देती है जिनपर कत्थई चित्तिया पड़ी रहती हैं।
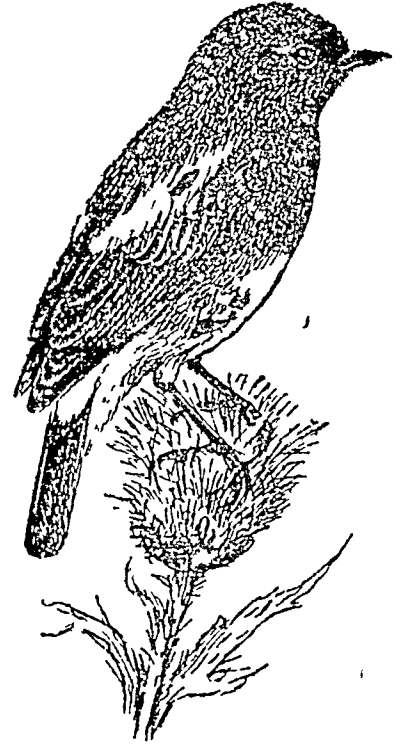
पीलक

[Oriole]

सुन्दर और रगीन चिड़ियो मे पीलक या पियल्ला का नाम बहुत आगे रहता है। यह जितनी सुन्दर होती है उतनी ही शरमीली भी। कौन जाने इसे अपनी चमकीली पोशाक ही के कारण इतना छिपना पडता हो।

यह उन मौसमी चिड़ियों मे से है जो हमारे यहाँ आमों के साथ-साथ आती है और अगस्त के अन्त तक फिर दक्खिन की ओर लौट जाती है। इसकी दो मुख्य जातियाँ है—सुनहली पीलक और टोपीदार पीलक या हरदुआ।

हरदुआ
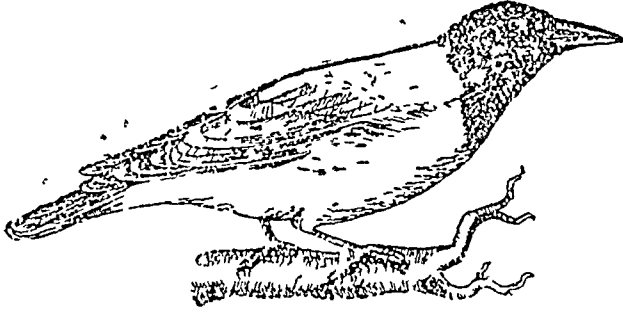
दोनो वैसे तो एक जैसी है पर टोपीदार का सर काला होता है। टोपीदार के नर मादा एक जैसे होते है लेकिन सुनहले का नर गहरे सुनहले पीले रङ्ग का होता है। इसके डैने और दुम के बीच का हिस्सा काला होता है और आँख के दोनों कोने पर भी गहरी काली लकीर रहती है। मादा के काले रङ्ग की जगह गहरा भूरा ले लेता है। पीठ हरापन लिए पीली और सीना हलका पीला होता है। आँख की पुतली लाल या गाढ नारगी, चोच गहरी गुलाबी या अबीरी और पैर गहरे सिलेटी रग के होते है।

जैसा ऊपर बता चुका हूँ पियल्ला बहुत सीधी और शरमीली होती है। ९ इच की इस चिड़िया को इस पेड से उस पेड पर उड कर जाने के सिवा हम वैसे ज्यादा नही देखते, क्योंकि यह ज्यादातर ऊँची घनी डालियों पर ही रहती है। पीपल, पाकर, बरगद आदि के फलों के अलावा यह कीड़े मकोडे भी खाती है, पर बहुत कम।

इसके घोंसले बनाने का ढग बड़ा विचित्र है। मई से लेकर जुलाई के बीच मे—जो इसके अडे देने का समय है—यह किसी ऊँची दो फकी डाल को अपने घोसले के लिए चुनती है, जिसकी दोनों शाखों को यह शहतूत आदि किसी ी पतली छाल से इस तरह लपेटती है कि जिस पर इसका घोंसला रुक सके, फिर यह सूखी घा रह से अपना बडा सुन्दर गोल सा घोसला बनाती है, जिसमें मादा दो तीन सफेद अडे देती है। अडों पर एक ओर काली चित्तियाँ पडी रहती है।

(सुनहली पीलक के लिए रगीन चित्र देखिए)

फुदकी (दरजिन)

[Tailor Bird]

फुदकी की तो वैसे भी अनेकों जातियाँ हैं, पर हमारे यहाँ सभी फुदक कर चलने वाली छोटी चिड़ियों को फुदकी ही कह देते है। इनकी भूरी फुदकी, घास फुदकी, खरबुसा आदि जातियों का जिक्र

यहाँ न करके केवल दरजिन फुदकी का वर्णन दिया जा रहा है, क्योंकि करीब-करीब सब फुदकियो का रहन-सहन और आदत एक जैसी होती है।

दरजिन यहाँ की बाग मे रहने वाली बारहमासी फुदकी है और जैसा अभी बता चुका हूँ फुदकी नाम ही जाहिर करता है कि यह छोटी सी चार पाँच इच की चिडिया है। इसके अलावा इसका दरजिन नाम भी सार्थक है क्योकि यह अपना घोसला बनाने मे दर्जियो के भी कान काट लेती है। इसके नर मादा एक रग के होते है पर जोड़ा बाँधने के समय नर की दुम के बीच के दोनो पख कुछ लम्बे हो जाते है, जिससे नर बडी आसानी से पहिचाना जा सकता है।

दरजिन वैसे तो काफी ढीठ होती है और बाग मे बने हुए मकानों के बरामदे तक मे निडर हो कर घूमा करती है, पर अपने छोटे कद और हरे रङ्ग के कारण यह हरियाली मे छिप सी जाती है और इसकी ओर जल्द ध्यान ही नही जाता। इसका मुख्य भोजन छोटे-छोटे कीडे-मकोडे है।

इसका ऊपर का हिस्सा तो कुछ पीलापन लिए हरा या धानी होता है पर नीचे सफेद रहता है। सर का ऊपरी हिस्सा कत्थई, पर दोनो बगल आँख के चारों ओर राख के रङ्ग को लिए हुए हलका भूरा रहता है। गर्दन के दोनों तरफ एक एक काली लकीर चोच की जड से शुरू होकर आँख के नीचे होते हुए गर्दन तक चली जाती है। इसकी आँख की पुतली सुर्खी मायल पीली, चोच सीग के रङ्ग की और पैर पीलापन लिए भूरे होते है। चोच नोकीली तेज और दुम ऊपर की ओर उठी रहती है।

दरजिन को यह नाम इनके घोसला बनाने की वजह से ही मिला है। यह अपने मुलायम घोसले को दो बडी या कई छोटी पत्तियों को सीकर उनके बीच मे रह लेती है। यह घोसले देखने मे इतने सुन्दर होते हैं कि इन्हे देख कर बया के बाद फिर इन्ही को कारीगर कहा जा सकता है। पहिले यह अपनी तेज चोच से पत्तियों के किनारों पर छेद कर लेती है, फिर उनमे मकडी के जाले और रुई आदि को मिला कर बनाए हुए डोरे को, इस तरह पिरो देती है जैसे कोई होशियार दर्जी कपडे के दो टुकड़ों को थैले जैसा सी दे। पत्तियो के यह थैले—जिनमे फुदकी के सेमल की रुई आदि के मुलायम घोंसले रहते हैं—जमीन से पाँच छ फीट की ऊँचाई पर लटकते रहते हैं।

इसके अन्डा देने का समय मई से जुलाई तक है, जिस बीच मे मादा दरजिन तीन चार छोटे छोटे अन्डे देती है। अडो का रग पीला, हलकी ललाई लिए सफेद, या पीलापन लिए हलका नीला होता है। इन पर गाढ बैंगनी, भूरे और कत्थई चित्ते पडे रहते हैं।

फुलचुही और शकरख़ोरा

(Flower Pecker and Sun Bird)

फूलों की तरह फुलचुहियों की किस्मे तो बहुत नही होती, पर इनकी तीन मुख्य जातियाँ तो हैं ही, जो हमारे यहाँ बड़ी आसानी से देखी जा सकती है। इनमें दो बड़ी है जिन्हे हम शकरखोरा कहते है और एक छोटी है जो फुलचुही कहलाती हैं। शकरखोरे की दोनो जातियों के रङ्ग मे कुछ फर्क जरूर होता है। बाकी कद, आदत और शकल सूरत मे दोनों एक जैसी होती है। रङ्ग मे भी ज़्यादा फ़र्क नहीं होता। एक हलके बैगनी रंग की होती है, दूसरी गाढ बैगनी रंग की। इसलिए दोनों का बयान साथ ही दिया जा सकता है।
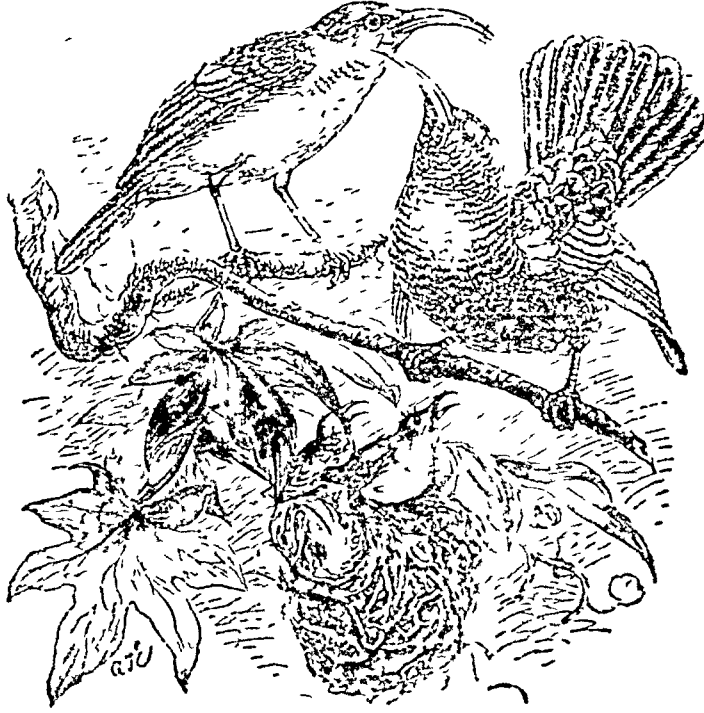
शकरखोरा

शकरखोरा हमारे बाग मे रहने वाली बारहमासी चिडिया है जिसे शायद हममें से सभी ने फूलो पर उड़-उड़ कर रस चूसते देखा होगा। वैसे तो यह ४ इच की छोटी सी चिड़िया है, फिर भी इसे छोटे फूलो मे अपनी पैनी चोंच गड़ाकर अपनी लम्बी और पोली जबान से रस चूसने के लिए कौड़िल्ले की तरह एक जगह पर हवा मे उड़ते रहना पड़ता है। पर बड़े फूलो पर तो यह बैठ कर या उसके पेंदे में छेद करके रस खींच लेती है। अपने नाम के अनुसार यह फूलो के रस पर ही रहती हो सो बात नहीं है। फूलों के रस के साथ फूलों में रहने वाले छोटे-छोटे कीड़े भी खिंच कर इसके पेट में चले जाते ह।

इसके नर और मादा का रग जाड़ो मे तो करीब-करीब एक जैसा ही रहता है। हाँ, नर के निचली गर्दन से लेकर सीने तक गाढ बैगनी रहता है, पर गर्मियों में यही गाढ़ बैगनी रंग ऊपरी तमाम हिस्से मे फैल जाता है और नर दूर से एक दम काला दीख पड़ने लगता है। सूरज की किरण पड़ने पर

जरूर इसका हरा और नीला रग चमक उठता है। मादा का ऊपरी हिस्सा हरापन लिए भूरा होता है। इसकी दुम गहरी भूरी और नीचे का हिस्सा पीला रहता है।

इस छोटी सी सुदर चिडिया की आँख की पुतली भूरी और चोंच तथा पैर काले होते है।

फुलचुही शकरखोरे से भी कुछ छोटी होती है और इसके नर मादा एक ही रग के होते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा गर्दन से पीठ तक हलका हरापन लिए कजई रहता है। डैने भूरे और दुम गहरी भूरी होती है और नीचे का हिस्सा पीलापन लिए सफेद रहता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच पीलापन लिए सिलेटी और पैर नीलापन लिए गाढ़ सिलेटी होते है। इसकी और सब बाते शकरखोरे की तरह ही है। हाँ, यह फूलो के रस और कीडों के अलावा छोटे-छोटे फूल भी खा लेती है।

शकरखोरे और फुलचुही का मुख्य भोजन फूलो का रस होने के कारण इन दोनो की चोंच भी पतली, लम्बी, नुकीली और आगे की ओर मुडी होती है।

इनके अडा देने का समय फरवरी से अगस्त तक है, क्योंकि बुलबुल की तरह यह भी बहुत नीचा घोसला बनाती है और इसके अडे अक्सर कौए मुटरियो और गिलहरियो के शिकार हो जाते हैं, जिसकी कमी को यह दो बार अडे देकर पूरा कर लेती है।

इनके घोसले बया की तरह सुन्दर और कलापूर्ण न हो कर भी उनसे कुछ मिलते जुलते ही होते है। पहिले यह मकडी के जाले मे मिट्टी आदि सान कर खूब मजबूत राल की तरह का चिपचिपा पदार्थ बनाती है, जिसको यह किसी झाडी की तीन चार फीट ऊची डाल मे खूब लपेट देती है। फिर इसी के सहारे घोसला लटकाया जाता है। घोसला बनाने मे भी उसी राल का इस्तेमाल होता है। घास-फूस और रेशो से यह छोटा सा सुन्दर घोसला बनाती है, जिसमे बगल से आने जाने का छेद रहता है। इस सूराख के ऊपर बरसात का पानी रोकने के लिए एक बरसाती भी होती है। भीतर सेमल की रुई और ऊन आदि से घोसले खूब नर्म कर लिए जाते है।

शकरखोरे के अडे हलका हरापन लिए सफेद होते है जिनपर भूरी और बैगनी चित्तियाँ पड़ी रहती है। लेकिन फुलचुही के अडे बिना किसी प्रकार की चित्ती और रंग के एकदम दूध से सफेद होते है। दोनों की सख्या दो तीन से ज्यादा नही रहती।

बबूना

(White Eye)

बबूने को हम पियल्ले का छोटा भाई कह सकते है। बाग में पत्तियों-पत्तियों पर घूम-घूम कर कीडो को खाने वाली इस छोटी चिड़िया को देखने मे जरा कठिनाई होती है क्योंकि यह पत्तियों मे छिपी सी रहती है।
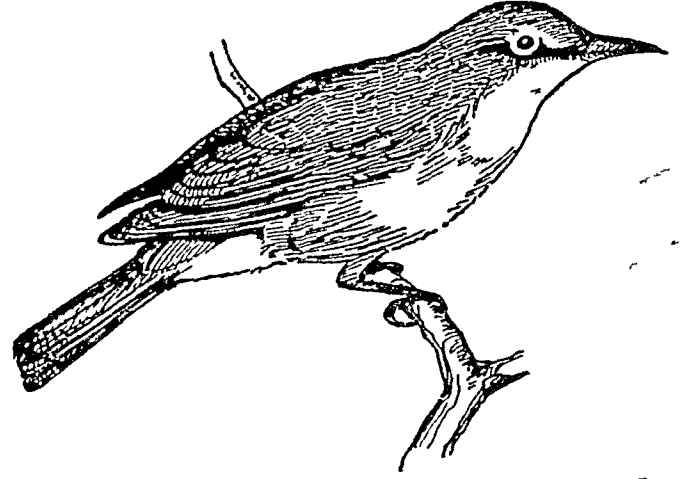
बबूना का छोटा सा कद चार इच से बडा नही होता। नर और मादा का रग एक सा होता है। ऊपरी बदन हरापन लिए हुए सुनहला पीला और डैने का छिपा भाग और दुम गहरी भूरी होती है। गला पीला, सीना और पेट, ऊदी और दुम के नीचे भी पीला रहता है। आँख के चारो ओर एक सफेद छल्ला सा रहता है। जैसे यह सफेद रिम का ऐनक लगाए हो। चोंच टेढ़ी और नोकीली होती है।

इसकी आँख की पुतली हलकी बादामी, चोंच काली और पैर गाढ सिलेटी होते है।

बबूना उन चिडियो मे से है जो जमीन पर नही उतरती। यह पत्तियो पर रहने वाले कीड़ो से तो अपना पेट भरती ही है साथ ही साथ जगली फल भी इसके हमले से नही बचते। इसे बस्तियों से ज्यादा बाग-बगीचे पसन्द है जहाँ मौसम आने पर नर बबूने का लाल मुनियों का सा मीठा स्वर सुना जा सकता है। यह पहिले धीरे-धीरे शुरू होकर पपीहे की तरह हर बार तेज ही होता जाता है।

बबूना यहाँ की बारहमासी चिड़िया है। वैसे तो यह गोल मे रहती है और एक दूसरे को होशियार करने के लिए सदा धीमे स्वर मे बोलती रहती है पर अडा देने का समय आने पर यह जोडा बाँध लेती है। इसके अडे देने का समय फरवरी से सितम्बर तक रहता है जिसमे मादा दो बार अडे देती है।

समय आने पर बबूना झाडियो से लेकर ऊँचे पेड़ों पर अपना सुन्दर घोंसला बनाती है। किसी पतली दो फाँकी शाख मे इनका हथेली से भी छोटा गोल घोंसला देखकर जान पड़ता है जैसे पियल्ले का घोंसला छोटा करके रख दिया गया हो। यह और चिडियो की तरह अपने घास-फूस, बाल और रुई के घोंसले मे मकड़ी के जाले को लपेट-लपेट कर उसे मजबूत बना लेती है। इसका भीतरी हिस्सा सेमल की रुई और मदार के भुए से मुलायम बना लिया जाता है। मादा इसमे दो या कभी-कभी तीन-चार तक छोटे-छोटे अडे देती है। अडो का रग हरापन या पीलापन लिए हल्का नीला होता है जिस पर किसी प्रकार के चित्ते नही रहते।

बया

[Weaver Bird]

बया को घोंसले के मामले मे सबसे होशियार चिडिया कहे तो अनुचित न होगा। इस पक्षी को न पहचान कर भ हम इनके सुन्दर घोसलो को अच्छी तरह पहचानते है। देहात मे बबूल आदि नीचे पेडो मे बीसियों की तादाद मे इनके तुबी की शकल के घोसले अक्सर लटकते हुए दिखाई पडते हैं। इन्हे देखकर ऐसा जान पडता है कि किसी अच्छे कारीगर ने छोटी-छोटी लम्बी झबियाँ बिन कर लटका दी हैं।
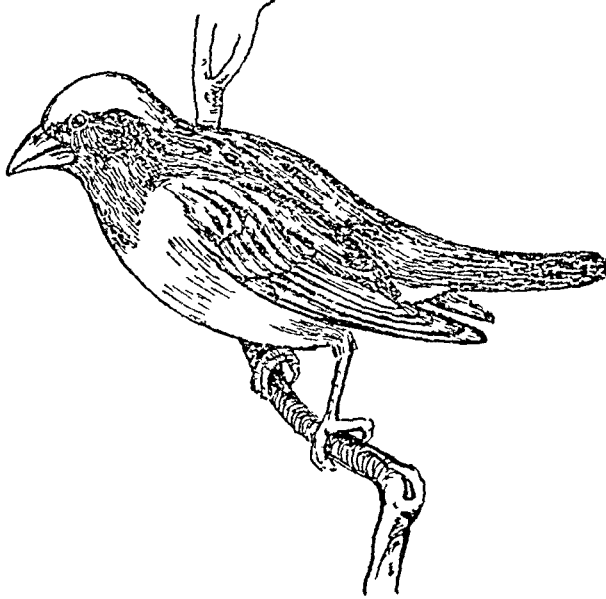
बया

इन सुन्दर घोंसलों के कारीगर, यहाँ की यही बारहमासी चिडिया है, जो जाडो मे इसी देश मे थोडा स्थान परिवर्तन जरूर कर लेती है पर हमारा देश छोड कर कहीं बाहर नही जाती।

बया गौरैया के बराबर और उसी शकल की छः इच की छोटी चिड़िया है, जिसके नर और मादा भी गौरैया की तरह अलग-अलग रङ्ग रूप के होते हैं। मादा बया को देखकर अक्सर मादा गौरैया या तूती का धोखा हो सकता है। क्योंकि उसका रङ्ग और उसकी शकल-सूरत ही नही, बल्कि उसकी चोच भी गौरैयो की तरह मोटी होती है, जो दाना चुनने वाली चिडियो की खासियत है।

नर बया जोड़ा बाँधने के समय को छोडकर बाकी महीने मादा की शकल का ही रहता है। पर जोडा बाँधने का समय आने पर उसकी पोशाक सुन्दर और भडकीली हो जाती है। तब उसकी आँख के नीचे से लेकर सीने के ऊपर तक का हिस्सा—स्याही मायल गहरा भूरा हो जाता है। सर का ऊपरी हिस्सा और सीना पीला हो जाता है, जो पेट तक पहुँचते-पहुँचते सफेदी मे बदलता जाता है। डैने भूरे रहते है। जिन पर गहरी कत्थई और सफेद खडी-खडी धारियाँ पडी रहती है। दुम भूरी होती है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच पीलापन लिए बादामी और पैर स्याह रग के होते है।

बया को घना जगल पसद नही। यह गाँव के खेतों के आसपास बबूल आदि के पेड़ो पर रहता है। गौरैया की तरह दाना ही इसका मुख्य भोजन है लेकिन अपने बच्चों को कीडे मकोड़े खिलाने मे इसे परहेज नही।

इसके घोसले का हाल बताए बिना, इसका वर्णन अधूरा ही रहेगा। अप्रैल मई के बाद इनको हम घोसला बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत करते देख सकते है। ये अपनी चोंच से सरपत, रामबाँस, केला और कास के पतले-पतले रेशों से अपना सुन्दर घोंसला बनाते है, जो देखने मे लम्बे होने पर भी इतने हल्के होते है कि हवा से ज़्यादा हिलने के डर से, इसमे इनको मिट्टी के टुकड़े रखने पड़ते है। ये घोंसले नीचे गोल होकर ऊपर पतले हो जाते है, जहाँ पेड़ की डाल से इनको इस तरह लटका दिया जाता है कि यह झूले की तरह झूलते रहे। इसमे घुसने के लिए नीचे से रास्ता रहता है। भीतर दो हिस्से होते है—एक तो वही जिसमे बाहर से आने का रास्ता बना रहता है और दूसरा जिसमे कुछ ऊपर जाकर फिर नीचे की ओर उतरना पड़ता है। इसमें अडे रहते है। इस तरह किसी दुश्मन का अन्डे के खाने तक पहुँचने का डर नही रहता। यही नही उनकी इतनी मेहनत के कारण उनके बच्चे आँधी पानी से भी बचे रहते है।

इनके एक दूसरी तरह के भी घोसले होते है, जिन्हे झूला कहते है। यह छातानुमा होता है जिसका ऊपरी हिस्सा पेड़ से लटका रहता है और जिसके नीचे एक अड्डे की तरह लकड़ी लगी रहती है जिन पर बैठ कर ये चिड़ियाँ झूला करती है।

घोंसलों को भारी करने के लिए बया जो मिट्टी के ढेले घोसले के भीतर रख देते है, उसके बारे मे कुछ लोगो मे यह गलतफहमी है कि इस मिट्टी मे बया जुगनुओं को चिपका देते है, जिससे घोसले मे रोशनी रहे। पर यह केवल किस्सा ही है, इसमे असलियत कुछ भी नही है। यह मुमकिन है कि किसी ने इनके घोसले मे और कीड़ो के साथ—जिसे ये अपने बच्चों के खाने के लिए ले जाते है—जुगनुओं को भी पाया हो, लेकिन वे रोशनी के लिए नही बल्कि बच्चो का पेट भरने के लिए ही वहाँ पहुंचाए गए होगे।

मादा बया अक्सर दो अन्डे देती है, पर कभी-कभी इनके तीन-चार अडे भी पाए गए है।

ये अन्डे धुमैले सफ़ेद होते है जिन पर किसी क़िस्म की चित्ती नही रहती।

बसंता

[Green Barbet]

कठफोर की तरह हमारे गावो मे एक चिडिया और होती है जिसकी बोली से तो हम सब परिचित जरूर होगे पर जिसको देखा बहुत कम लोगो ने होगा। इसे बडा बसता या 'पुदरुप' कहते है। कही कही इसे 'कुतुरझा' के नाम से भी पुकारा जाता है। यह गाव के निकट के बागो मे पेड़ो पर ऐसा छिपा रहता है कि इसकी बोली सुन कर भी इसे देख लेना आसान नही। इसे हम एक पेड से दूसरे पेड पर उड़ कर जाते समय ही अक्सर देखते है। क्योंकि पीपल, बरगद आदि के फल इसकी मुख्य खूराक होने के कारण, इसे जमीन पर उतरने की जरूरत ही नही रह जाती।
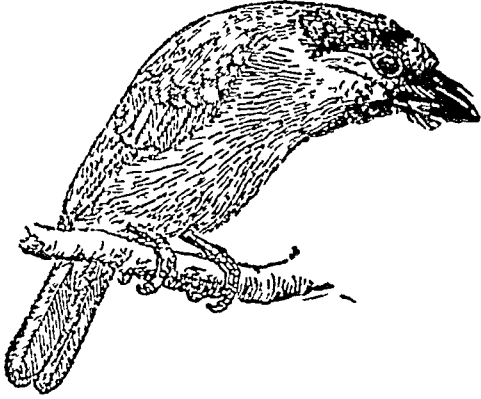
बसता

बसता यहाँ की बारहमासी चिडिया है जिसके नर और मादा एक ही रग-रूप के होते है। इस की लम्बाई दस इच के लगभग रहती है। इसकी गरदन, सिर और सीना भूरा होता है, जिसमे पतली पीली लकीरे, पडी रहती है। ऊपरी हिस्सा और दुम चमकीली हरी रहती है जो पतली पीली आडी लकीरों से भरी रहती है। डैने भूरे रग के होते है। इसकी आँख की पुतली खैरी, चोच प्याजी और पैर हलके बादामी रग के होते है।

बसता बोलता बहुत है। बारहो मास दिन को बागो मे इसकी बोली सुनी जा सकती है। जाडो मे इसकी बोली कुछ कम जरूर हो जाती है लेकिन वसन्त के बाद अडे देने का समय आने पर, इसकी बोली की तेजी बहुत बढ जाती है। मादा बसता वैसे तो मार्च अप्रैल मे अडे देती है पर कठफोर की तरह इसे अपने रहने का सूराख पहले ही से बनाना पडता है। किसी ऊची मोटी डाल मे छेद करके यह अपने रहने के लिए सूराख बना लेता है, जिसके भीतर मादा लकड़ी के टुकडो पर ही दो चार अडे देती है। ये अडे एकदम सफेद होते है।

बुलबुल

[Bulbul]

बुलबुल हम लोगो की उन पहचानी हुई चिड़ियों मे से है—जो अपनी मीठी बोली के कारण जहाँ सब की प्यारी है वहाँ आपस मे लड़ने की आदत से, उसकी एक बड़ी सख्या को—दो तीन महीने तक शौकीनो के यहाँ बन्दी होकर रहना पड़ता है। हमारे प्रान्त मे शायद ही कोई गाव ऐसा बचा हो जिसमे लोग बुलबुल न पालते हों। कातिक से मकर की सक्रान्ति तक पालतू बुलबुलो को लोहे के अड्डे पर, जिसे 'चक्कस' कहते है रहना पड़ता है, और तब तक उनकी पेटी मे एक लम्बा डोरा बँधा रहता है जिससे वे उड़ न जावे।

गुलदुम-बुलबुल

इनकी वैसे तो दो मुख्य जातियाँ है—मामूली गुलदुम बुलबुल और सिपाही बुलबुल। लेकिन एक और बुलबुल जो कागड़ा कहलाता है, हमारे यहाँ कम सख्या में नही आता। इन तीनों की शकल सूरत मे फर्क जरूर रहता है। वैसे आदत तीनो की एक ही जैसी होती है।

सिपाही और गुलदुम बुलबुल लगभग ८ इञ्च के होते है और इनके नर मादा की शक्ल भी एक सी होती है। इनका सर और गला चमकीला काला और बाकी सब शरीर गहरा भूरा रहता है, जिस पर मछली के सेहर से हलके निशान रहते है। पीठ के परों का सिरा पीला, दुम का सिरा सफेद और दुम के नीचे का हिस्सा खूनी सुर्ख होता है। सिर पर छोटी चोटी होती है जो अक्सर दबी रहती है। सिपाही की चोटी जरा और बडी होती है और उसके दोनो गालो पर सुर्ख बालो के गलमुच्छ से उभरे, रहते है जिससे इसको 'सिपाही बुलबुल' का नाम मिला है। इसका सीना सफेद होता है और पेट मे एक काली धारी पड़ी रहती है।

इनकी आँख की पुतली गहरी भूरी और पैर काले होते हैं।

बुलबुल अक्सर जाड़ो में दिखाई पड़ते है। ये वैसे तो अकेले या जोड मे रहते है पर कभी कभी इनको फल के पेडो पर झुड में भी देखा जा सकता है। फल इनका मुख्य भोजन है पर यह कीडे मकोडे भी खा लेते हैं।

बुलबुल वैसे तो यहाँ की बारहमासी चिडिया है पर इसकी इतनी जातियाँ है और ये इस तरह प्रायः सभी देशो मे फैली हुई है कि इनका कौन असली देश है यह कहना कठिन है। सदा गाने वाली और खुश रहने वाली बुलबुल (Nightingale) जिसने उर्दू और फारसी के साहित्य मे अपना एक स्थान बना रखा है, हमारे देश मे नही होती। वहाँ जरूर इसे 'बुलबुल हजारदास्ताँ' का खिताब मिला हुआ है लेकिन वह हमारे देश के बुलबुला से भिन्न पक्षी है।

कागडा

बुलबुलों के अडा देने का समय फरवरी से सितम्बर तक है, जिसमे मादा बुलबुल दो बार अंडा देती है। और तभी ये अपना छोटा गहरा घोसला किसी नीची झाडी, झाऊ या सरपत के घने बूटे मे बनाती है, जिसे मुलायम घास, चीथडे और बालो से नरम बना लिया जाता हैं। बहुत नीची जगह पर घोसले बनाने के कारण इनके काफी अडे दुश्मनों के शिकार हो जाते है। पर दोबार अडे देने के कारण इनका औसत पूरा हो जाना नामुमकिन नही।
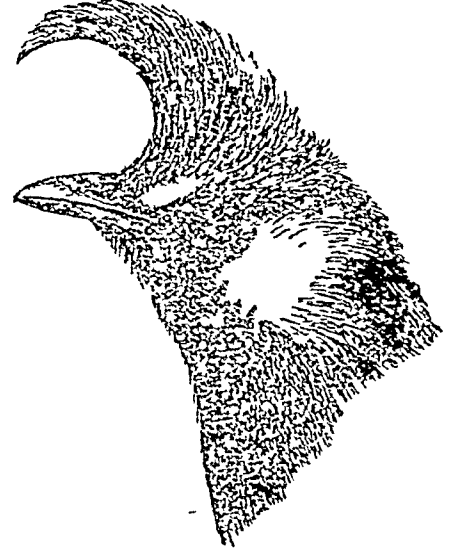
सिपाही बुलबुल

अडो की तादाद अक्सर तीन तक होती है। इनका रग हलका गुलाबी होता है जिस पर लाल बादामी और ललछौंह बैगनी रङ्ग की चित्तिया पड़ी रहती है।
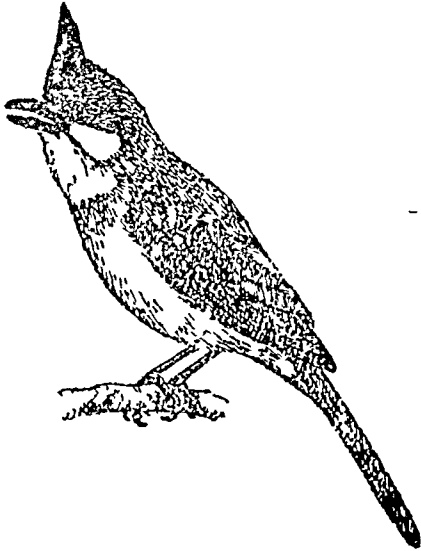
भुजंगा

[King Crow]

भुजैठे या भुजगे से हम सभी परिचित है, भले ही उसकी बहादुरी से परिचित न हो। टेलीग्राफ के तारो पर इनकी कतार की कतार अक्सर बैठी रहती है।— इनको गाय बैलो की पीठ पर भी बडी आसानी से बैठा देखा जा सकता है, जहाँ ये उनकी पूँछ की मार के बाहर उनके कूबड के पास बैठे रहते है।

भुजगे की अपनी औकात से बड़ी दुम तो होती ही है, साथ ही साथ अपने कद से ज्यादा बहादुरी भी इसमें रहती है। अपने अडो पर हमला होते देख कर यह कौआ और चील ही नहीं, बदरो तक पर वार कर बैठता है। और इसके अचानक इस तेज हमले से जान बचा कर भागने मे ही खैरियत समझी जाती है। चील या कौओं का पीछा करते हुए भुजैठे के जोड़े को तो हमने अक्सर देखा होगा, पर यह कभी नही देखा गया कि यह किसी बेगुनाह चिड़िया पर हमला करता हो। जिस पेड़ पर इसका घोसला रहता है उस पर कौए आदि आ ही नहीं पाते। पीलक, बबूना आदि सीधी चिडियाँ इसे तलाश करके अक्सर अपना घोसला इसके साथ बनाती है क्योंकि इसके घोसला बना लेने से वह पेड़ दुश्मनो के हमलों से बहुत महफ़ूज हो जाता है। और शायद इसी से इसका दूसरा नाम कोतवाल भी प्रसिद्ध है।

भुजगा

वैसे तो यह ६-७ इंच की छोटी सी चिडिया है पर दुम को मिला कर यह १३ इच से कम नही होती। यह चोटी से दुम तक धुर काली होती है जिसमे कभी-कभी नीली चमक सी दीख पड़ती है। नर और मादा दोनो एक ही रग के होते है। इसकी आँख की पुतली लाल और चोच पैर काले होते है। इसकी लम्बी दुम सिरे की-ओर चलकर कैंचीनुमा दोफकी हो जाती है, जिसकी नोक पर कभी-कभी सफेद चित्ता भी पडा रहता है।

भुजगे का मुख्य भोजन कीडे-पतिङ्गे हैं जिन्हे यह जमीन से बिन-बिन कर नहीं पकडता बल्कि पतेना की तरह उडते ही उडते इनका शिकार कर लेता है। घास-फूस के ऊपर होकर, इसके उडने से जो कीडे उडते है, वे इससे बच कर नहीं जाने पाते।

इसका घोंसला बहुत सुन्दर होता है। छोटा सा गोल छिछले प्याले सा घास-फूस का घोंसला, जिसे यह मकडी के जाले से किसी दो फॉक वाली ऊँची शाख मे जकड देता है, पहले तो भद्दा रहता है पर धीरे-धीरे भुजगे का जोडा इसमे बैठ-बैठ कर इसे एक दम गोल और सुन्दर बना देता है।

मादा अप्रैल से अगस्त के दरमियान चार-पॉच सफेद अडे देती है। कभी-कभी इन अडो पर छोटे-छोटे काले चित्ते भी होते है, और कभी-कभी इसके अडे हलके प्याजी रग के भी पाए जाते है, जिन पर छोटे-छोटे ललछौंह भूरे चित्ते रहते है।

भुजगा बहुत मीठी बोली भी बोलता है—पर बहुत सबेरे—जिसके कारण इसे गॉव के लोग 'ठाकुर जी' भी कहते है।

भुजगे की जाति का एक और पक्षी हमारे देश मे होता है जिसे 'भृगराज' कहते है। यह पहाड का पक्षी है जो मैदान की ओर नही आता। कद मे तो यह भुजगे से बडा होता ही है, अपनी मीठी बोली मे भी यह भुजगे से आगे ही रहता है।

मछमरनी

[Fly Catcher]

मछमरनियाँ भी हमारे यहाँ कई तरह की होती है जिसमें से यहाँ केवल दो का वर्णन दिया जा रहा है। काली मछमरनी तो यहाँ की बारहमासी चिड़िया है पर इसकी दूसरी सुन्दर जाति जिसे शाह बुलबुल कहते है यहाँ कभी-कभी रह जरूर जाता है, पर है वह वास्तव में मौसमी पक्षी। यह मछमरनी की जाति का ही है पर शकल-सूरत मे बुलबुल की तरह होने के कारण इसका नाम शाह बुलबुल पड़ गया है। इसकी शक्ल तो बुलबुल से मिलती जरूर है पर इसके नर की दुम इसके कद से बडी होती है, जिसे देख कर इसे दूर ही से पहचाना जा सकता है।
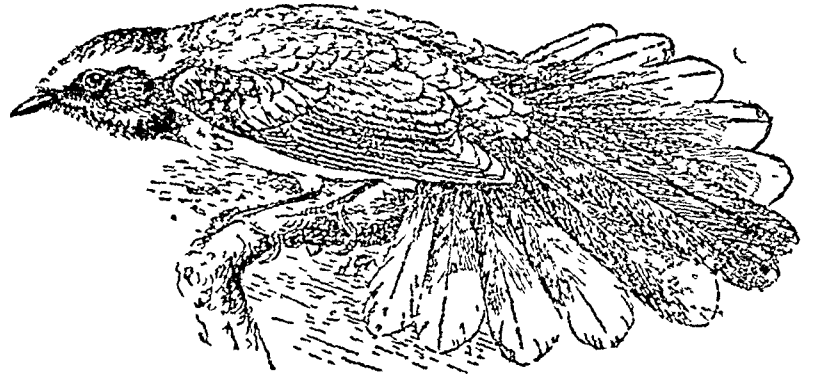
मछमरनी

काली मछमरनी हमारे बाग मे रहने वाली बारहमासी चिडिया है। जिसकी एक यही खासियत है कि यह एक स्थान पर एक तरह से थोडी देर भी थिर नहीं रह सकती। सर, पख और दुम, कुछ न कुछ यह हिलाती ही रहती है। यह बहुत ढीठ चिड़िया है—इसकी एक डाल से उड कर दूसरी डाल पर जाकर पखीनुमा दुम को फैला लेने की आदत हम बड़ी आसानी से देख सकते है। इसके बाद इसके पहिचानने मे कोई कठिनाई नही रह जाती। इसकी मुख्य खूराक उडने वाले पतिगे है जिन्हे यह उड़ कर अपनी चौडी चोच से पकड़ लेती है।

इस काली मछमरनी के नर और मादा लगभग ७ इच लम्बे होते है। ये दोनो करीब-करीब हमशक्ल होते है। मादा का रग कुछ हलका जरूर होता है पर रगो का बँटाव नर जैसा ही होता है। इनका सर से लेकर गर्दन तक का रंग काला होता है जिसमे माथे से लेकर आँख के ऊपर होते हुए गरदन तक एक सफेद धारी चली आती है। चोच गरदन के बगल और नीचे छोटी छोटी सफेद धारियाँ रहती है। पीठ, डैने और दुम गहरी भूरी होती है जिसके बीच के दो परो को छोड़कर बाकी का सिरा सफेद रहता है। पेट भी सफेद ही होता है। आँख की पुतली भूरी, चोच और पैर काले होते हैं।

मछमरनी के अडे देने का समय फरवरी से अगस्त तक रहता है क्योंकि यह भी दो बार अडे

देती है। इसका घोंसला कटोरानुमा होता है जिसे यह सूखी घास वगैरह में मकड़ी के जाले को लपेट कर बनाती है। यह अमरूद या आम की किसी निचली दोफकी डाल पर रखा रहता है।

मादा दो से चार तक सफेद अंडे देती है जिनपर, पेंदे की ओर भूरी चित्तियां पड़ी रहती हैं।

शाह बुलबुल

शाह बुलबुल के पट्टे और मादा का रंग चटक बादामी होता है पर नर दो तीन साल के होने पर सफेद हो जाते हैं। इस नर, गर्दन और चोटी चमकीले काले रंग की होती है और पीठ, डैने और दुम पर भी काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। मादा गर्दन राख के रंग की और सफेदी मायल होता है। दोनों आँख की पुतली गहरी भूरी और पैर सिलेटी नीले होते हैं।

इसकी चोंच नीली होती और आँख के चारों ओर इसी रंग का एक गोल घेरा रहता है।

शाह बुलबुल देखने में बहुत सुन्दर लगता है। यह बरामदे पेड़ पर रहने वाला पक्षी है जिसका एक कारण नर की लम्बी दुम भी हो सकता है। यह भी उड़ते हुए पतिंगों को पकड़ कर अपना पेट भरता है जो इसका मुख्य भोजन है।

बुलबुल की शकल का होकर भी शाह बुलबुल गा नहीं पाता। इसकी बोली बहुत कड़ी होती है।

शाह बुलबुल के अंडे देने का समय अप्रैल से जून तक है, जिसमें मादा ३-४ सफेद या हल्के गुलाबी रंग के अंडे देती है। इन पर ललछौंह कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। इसका घोंसला मछमरे की ही तरह होता है, जिसमें अंडा सेने के लिए नर और मादा दोनों पारी-पारी से बैठते हैं।

महोख

(Crow Pheasent)

जंगल की चिड़ियों मे महोख सबसे ढीठ होता है। बस्ती के आसपास सड़क के किनारे सूखती हुई तलैयों मे, अमराइयों और बॅसवाड़ियों मे महोख जरूर दिखलाई पड़ेगा। यह कीड़े-मकोडे खाने वाला गन्दा पक्षी है जो बराहो महीने यही रहता है। कीडे ही नहीं यह छोटे मोटे साँप भी खा लेता है।

महोख
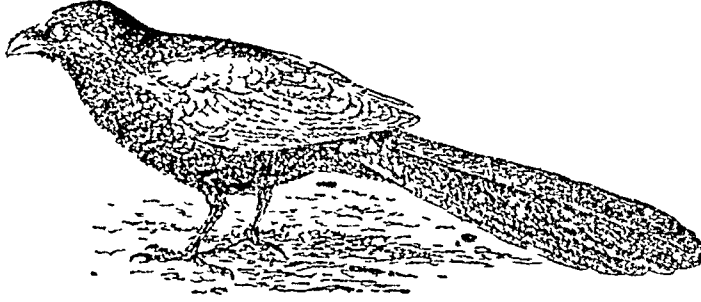
इसके बोलने का समय रात का पिछला पहर है—और जहाँ एक बोला - नही कि आसपास के सब महोख एक साथ बोलने लगते है। गाँव के लोग इसकी बोली से सबेरा होने का अदाजा कर लेते है।

महोख के नर और मादा की शक्ल एक जैसी होती है। गहरे खैरे डैनो को छोड़ कर, इसका सारा बदन काले रंग का होता है। इसकी दुम कद से बडी और डैने कद से छोटे होते है। इसकी चोच बाज की तरह टेढ़ी होती है और इसके बदन की लबाई १६—२० इन्च से ज्यादा नही होती।

इसकी आँखे लाल तथा चोंच और पैर काले होते है।

महोख के अडे देने का समय जून से सितम्बर तक है। जोडा बाँधने से पहिले नर महोख मादा को खुश करने के लिए अपनी लम्बी पूँछ फैला कर नाचता है। इसके बाद जोड़ा बाँधने पर दोनों घोंसला बनाने मे लग जाते है। इनका घोसला अक्सर गोल गुम्बज की शकल का होता है जिसमे बगल से घुसने का रास्ता बना रहता है। वैसे तो यह काफी बड़ा होता है, पर अडा सेते समय मादा की लम्बी दुम दरवाजे के बाहर निकली ही रहती है।

कभी-कभी महोख कटोरेनुमा घोसला भी बनाता है, जिसका ऊपरी हिस्सा खुला रहता है। यह घोंसला छोटी-छोटी टहनियों का होता है जिसको भीतर की ओर से घास-फूस से मुलायम बना दिया जाता है। इसके घोसलो के स्थान का कुछ तै नही रहता। ये कभी तो घनी झाडी या बाँस की कोठी के बीच मे और कभी इमली आदि ऊँचे पेडो पर रखे रहते है।

ये अडे धुर सफेद रंग के होते है।

मुटरी

[Tree Pie]

चालाकी मे मुटरी कौए से भले ही कुछ कम मानी जावे पर चोरी मे यह उससे भी आगे है। मैना के बराबर की लम्बी दुम वाली इस चिडिया से, गॉव वाले अच्छी तरह से परिचित है। अमराइयों के बीच के मकानो मे या बाग मे के बॅगलो मे इनका हमला जरूरी सा है। लम्बी दुम के कारण यह जमीन पर नही बैठती पर इसे किसी ऊँची जगह पर बैठ कर चोर की तरह ताकते हुए बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। कौए की तरह यह भी चोर और सर्वभक्षी पक्षी है—जिससे फल, कीडे, पतिगे, छिपकली आदि कुछ नही बचता। खुश रहने पर यह बहुत मीठी बोली बोलती है, पर गुस्सा हो जाने पर इतना शोर मचाती है कि जी ऊब जाता है।

मुटरी

मुटरी यहॉ की बारहमासी चिड़िया है, जिसका कद मैना के बराबर १८ इच का और दुम एक फुट लम्बी होती है। नर और मादा एक शकल के होते है। इसका सर, गर्दन और सीना काले रग का होता है, पर यह रग काले कौए सा चमकदार न होकर धूमिल काला रहता है। बाकी हिस्सा कत्थई रग का होता है। पख और दुम स्याही लिए हुए सफेद होती है जिसका आखिरी हिस्सा धुर काला रहता है। अपनी लम्बी दुम के कारण यह बड़ी आसानी से पहचानी जा सकती है।

इसकी ऑख की पुतली ललछौह कत्थई, चोच सिलेटी और पैर गहरे भूरे रङ्ग के होते है।

मुटरी के अडे देने का समय तो फरवरी से अगस्त तक है, लेकिन इसके घोंसले ज्यादातर अप्रैल से जून तक देखने को मिलते है। आम, नीम या किसी ऊँचे पेड पर, यह भी कौए की तरह भद्दा सा घोसला बनाती है। घोसले का भीतरी हिस्सा ऊन, बाल, पयाल आदि से मुलायम कर लिया जाता है, जिसमे मादा चार पॉच अडे देती है। इनके अडे कभी सफेद कभी ऊदी और कभी मटमैले होते है, जिस पर लाल, बादामी, बैगनी और हरे चित्ते पडे रहते है।

मैना

[Myna]

यदि हम बड़े पहाड़ी मैना को छोड़ भी दे तो भी मैना की ऐसी चार मुख्य जातियाँ हैं, जो हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया कही जा सकती है। यहाँ इन्ही चारो के विषय मे लिखा जा रहा है।

१—किलॅहटा (Common Myna)

२—किलनहिया या चही (Bank Myna)

३—अबलखा (Pied Myna)

४—पवई (Black headed Myna)

ये चारों हमारे बहुत परिचित पक्षी है। इससे इनके अधिक वर्णन की आवश्यकता नही। कौए और गौरैया की भाँति ये भी आदमियों के साथ इतने हिल-मिल गए हैं कि कोई भी आबादी इनसे खाली नही मिलेगी। गाँव के मैदानों मे, खेतो और ताल तलैयों के आसपास इनको तलाश करने मे जराभी दिक्कत नहीं उठानी पडेगी।
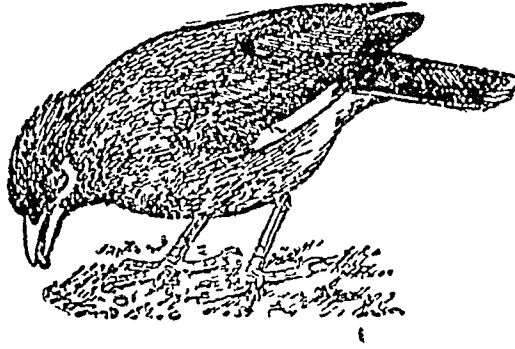
वैसे तो ये गोल बनाकर रहती और बसेरा लेती हैं पर दिन मे इन्हे अक्सर जोडे मे ही देखा जाता है।

किलहॅटा

किलॅहटा इनमे सबसे बड़ा होता है जिसके नर और मादा एक रग रूप के होते है। यह १०–११ इच का खैरे रग का पक्षी है जिसका सर, गर्दन, दुम और सीना काला होता है। पेट और डैने के कुछ हिस्से के अलावा, दुम का सिरा और दुम का निचला हिस्सा सफेद रहता है। इसकी आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच और चोंच की जड़ से आँख के नीचे तक का उभरा हुआ गोश्त, चटक पीला रहता है—पैर भी पीले ही होते है।

कौए की तरह किलॅहटा भी सर्वभक्षी पक्षी है पर इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोडे ही हैं। इसके अडा देने और घोसला बनाने का समय तो जून से अगस्त तक है, पर इसको शायद घोसला बनाना आता नही—क्योकि वैसे तो यह कौए आदि के पुराने घोसले को ही इस्तेमाल कर लेता है, लेकिन जब मजबूरी आ पड़ती है तो यह कच्चे मकान की छत या पुरानी दीवाल के किसी सूराख मे घास-फूस

और रुई इत्यादि को जमा करके टेढ़ा-मेढ़ा घोसला बना लेता है—जिसमे मादा ३ से ६ तक नीले रग के अडे देती है।

अबलखा

किलॅहटा के बाद किलनहियाँ या चही का नम्बर आता है। इसका यह नाम शायद नदी किनारे चरने वाले मवेशियो की सोहबत से मिला है, जिनकी किलनी आदि यह खाती रहती है। इसको दरिया मैना भी कहते है और यह है भी दरिया किनारे वाली मैना।

इसके भी नर और मादा एक किस्म के होते है और अपने कद, अपने घोसले बनाने के ढग और अपने रङ्ग-रूप के अलावा उसकी बाकी सब आदते किलॅहटे से मिलती जुलती होती है।
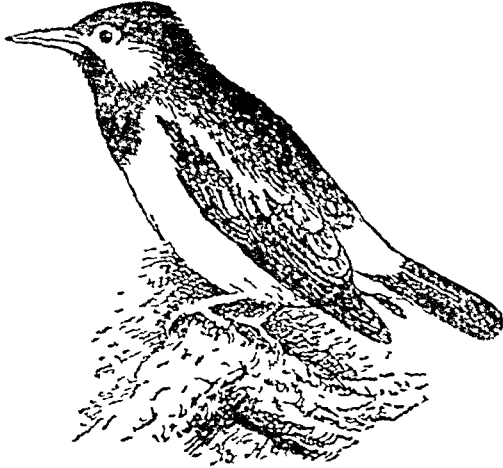
चही ६—१० इच की छोटी चिड़िया है जिसका सर के ऊपर और बगल तक का हिस्सा तो काला रहता है पर बाकी सब मिलेटी रङ्ग का होता है। पेट और पख के बीच मे एक-एक गुलाबी धब्बे रहते है तो उडने पर साफ दिखलाई पड़ते है। डैने और दुम भी काली होती है जिसका सिरा बादामी रङ्ग का होता है।

इसकी आँख की पुतली गाढ लाल चोच और पैर पीले होते है। चोच की जड से आँख के नीचे होते हुए एक सुर्ख धारी रहती है।

यह पतेना की तरह कगारो मे मिट्टी खोद कर छ-सात फीट गहरे सूराख मे अपना घोसला बनाती है, जिसमे मादा चार-पाँच नीले अडे देती है।

अबलखा, किलनहियाँ के बराबर ही होता है और इसके भी नर मादा एक रग के होते है। इसका पूरा सर और गरदन काली होती है जिसमे, चोच की जड से दोनो आँखों के नीचे होता हुआ एक गोलाकार सफेद चित्ता रहता है। ऊपरी हिस्सा, दुम और डैने खैरापन लिए काले होते है, जिसमे दुम की जड का ऊपरी हिस्सा भी सफेद रह जाता है। दोनों डैनो पर भी एक एक सफेद आड़ी लकीर रहती है और नीचे का तमाम हिस्सा बहुत हलका बादामीपन लिए हुए राख के रग का होता है।

इसकी आँख की पुतली और पैर पीलापन लिये सफेद और चोच नारङ्गी-भूरी होती है जिसका निचला हिस्सा सफेद रहता है। कीड़ो के अलावा इसकी खुराक मे फल भी शामिल है।

अबलखा भी अंडा देने का समय मई से अगस्त तक है। उसी समय किसी पेड में इनके गोल के गोल एक साथ ही घोंसले बनाते हैं। इसका भी घोंसला घास-फूस का भद्दा सा होता है जिसमें भीतर ऊन और पर वगैरह लगाकर मुलायम कर दिया जाता है। मादा इसी में बैठ कर चार से छः तक नीले अंडे देती है।

पवई का वर्णन अन्त में किया जा रहा है लेकिन गाने में यह इन तीनो से आगे है। यह इन सब से छोटी जरूर होती है पर इसकी बोली इतनी सुरीली होती है कि लोग इसे पिंजडों में पालते हैं।

इसके भी नरमादा की शक्ल-सूरत में कोई भेद नहीं रहता, पर इसके सर पर एक काली चोटी रहती है जो माथे के काले रङ्ग में मिली हुई और पीछे की ओर लटकी रहती है। इसका और बाकी शरीर गहरे बादामी रङ्ग का होता है। डैनों का कुछ हिस्सा काला और दुम के नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।

इसकी आँख की पुतली हरापन लिए सफेद रहती है। चोंच का सिरा पीला, बीच का हिस्सा हरा और जड़ नीली रहती है। पैरों का रङ्ग चटक पीला होता है।

इसके भी अंडा देने का समय मई से अगस्त तक रहता है। जब यह किसी पेड के खोथे या किसी मकान के सूराख में घास, फूस और पर की मदद से मादा के बैठने और अंडा देने की जगह बना देती है।
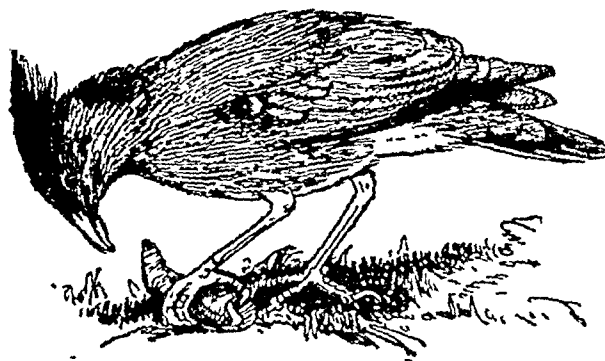
पवई

इसके अंडों की तादाद ३ से ५ तक होती है और जिनका रंग अन्य मैना के अंडों के समान वही नीला होता है, जो गहरा नीला न होकर सफेदी लिए हलका नीला ही रहता है।

रामगँगरा

[Tit]

रामगँगरा का अंग्रेजी का नाम 'टिट' बहुत प्यारा तो है ही साथ ही साथ बहुत प्रसिद्ध भी है। हमारे यहाँ देहातों मे तो लोग इसको भी फुदकी ही कहते है क्योंकि छोटे कद के कारण अक्सर लोगों को यह फुदकी ही जान पडती है। टिट को मैदान की चिडिया न कह कर पहाड की चिडिया कहे तो ज्यादा ठीक होगा। यह वैसे तो पहाडों पर ही रहती है पर जाडों मे इसके झुड मैदानों में भी उतर आते हे और तब इन्हे मैदान के जगली प्रान्तो मे देखना ज्यादा कठिन नही।

रामगँगरा

टिट हमारे यहाँ की मौसमी चिडिया है—जो शुरू जाडो मे हमारे यहाँ आकर जाडे के अन्त मे फिर उत्तरी पहाडी की ओर लौट जाती है, लेकिन बत्तखों की तरह यह हमारा देश छोड कर और पहाडों के उस पार न जाकर यहीं रहती है।

वैसे तो टिट जोडे मे भी दिखाई पड जाती है, पर ज्यादातर इसे अकेली ही देखा जाता है। यह पेड़ पर रहने वाली चिडिया है, जो अपना अधिक समय पेडो और झाडियो पर चक्कर लगाने मे ही बिता देती है पर अपने कीडे मकोडो की तलाश मे इसे कभी-कभी हम जमीन पर भी देख सकते है।

राम गँगरा चार पाच इच की छोटी सी चिडिया है जिसके नर और मादा एक रग-रूप के होते है। इनका सर, गरदन और सीना चमकीले काले रग का होता है। पेट के नीचे भी एक चौड़ी काली पट्टी रहती है और गाल, गुद्दी और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है। ऊपर का सारा हिस्सा राखी या कजई रहता है।

इसकी आँख की पुतली गाढी भूरी, चोच काली और पैर सिलेटी रग के होते है।

टिट ने जैसी सुदर शकल सूरत पाई है वैसी ही प्यारी टिसूस् टिसूस् की आवाज भी इसे मिली है। इसके अन्डे देने का समय मार्च से जुलाई तक है, जब यह मैदानो से पहाडो की ओर लौट गई रहती है। वहाँ यह ऊन, बाल, घास और मुलायम जडो को किसी पेड के खोथे या पहाड की दराज मे रख कर अपना भद्दा पर मुलायम घोसला बनाती है जिसमे मादा ४—६ अन्डे देती है।

अन्डो का रग सफेद रहता है जिन पर कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ पडी रहती हैं।

(देखिये रगीन चित्र)

लहटोरा

[Shrike]

लहटोरा का वर्णन सच पूछा जावे तो शिकारी चिड़ियों के साथ होना चाहिए क्योंकि यह एक तरह से शिकारी पक्षी ही है, पर कद में बहुत छोटी होने के कारण इसका बयान यहाँ बस्ती बाग की चिड़ियों के साथ किया जा रहा है।

इसकी दूधिया, मटिया और खरकटा आदि कई जातियाँ है, पर सब की आदत एक जैसी होने के कारण यहाँ सिर्फ दूधिया लहटोरा के बारे में लिखा जा रहा है। यही यहाँ और सब जातियों से ज्यादा पाया भी जाता है।
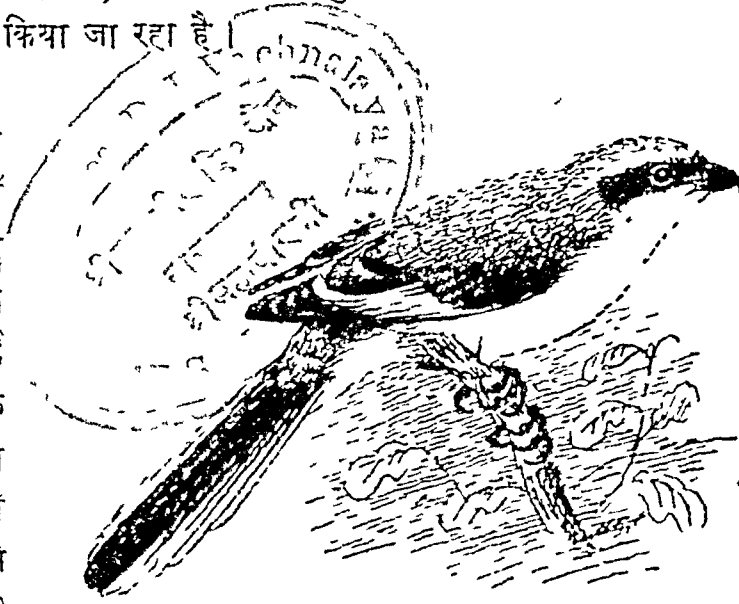
दूधिया लहटोरा

यह दस इंच लम्बी, मिलेटी और सफेद रंग की चिड़िया है, जिसके चोंच से लेकर आँख पर होते हुए गरदन तक एक काली पट्टी चली आती है। पीठ ऊदी और डैने काले होते है, जिसके ऊपरी हिस्से पर सफेद धारियाँ रहती है। लम्बी दुम बीच में काली और दोनों बगल सफेद होती है। आँखे गहरी भूरी और चोंच तथा पैर एकदम काले होते है।

इसकी चोंच शिकरे की तरह टेढ़ी होती है, जिससे लहटोरा अपने शिकार को फिर छूट कर जाने नहीं देता। कीड़े मकोड़े और टिड्डे ही क्या छोटी-मोटी चिड़ियाँ भी इसके हमले से अपने को नहीं बचा पातीं; और यदि कोई बड़ा शिकार मिल गया तो लहटोरा उसे पेड़ के किसी मजबूत काँटे में अटका कर पंजो से खूब नोच नोच कर खाता है। गाँव के बाहर किसी बबूल के पेड़ पर या किसी ऊँची झाड़ी पर लहटोरा को देखना कोई ताज्जुब की बात नहीं होगी। टेलीग्राफ के तार पर भी इनका अड्डा रहता है।

लहटोरा यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो मार्च से जून के बीच में घोंसला बना कर अंडे देती है। इसका घोंसला बहुत ही भद्दा सा होता है। बबूल के या और किसी कँटीले पेड़ या झाड़ी पर यह सूखी कटीली डालियों को जमा करके उसमें थोड़ा घास या ऊन लगा देती है। बस यही इसका घोंसला है, जिसमें मादा तीन से छः तक सफेद अंडे देती है। इन अंडों पर भूरे और बैगनी चित्ते रहते है।

लालमुनियाँ

[Red Munia]

जिन्हे पिजड़ो में चिडियाँ पालने का शौक है, उनसे लालमुनियाँ बच ही नहीं सकती और ये यदि झुंड की झुड इस प्रकार पिजडे मे बन्द न की जातीं, तो हम सब इन छोटी चिडियों को इतने निकट से शायद ही देख पाते। पिंजडे मे बद हो कर भी ये बहुत प्रसन्न दिखती हैं, और इधर-उधर फुदकने के अलावा ये उसी मे निडर हो होकर गाती रहती हैं। एक ने गाना बद किया नहीं कि दूसरी ने शुरू कर दिया और यही हाल तबतक चलता रहता है जबतक उनके बसेरा लेने का समय नहीं आ जाता। ये पिजडे में लगी हुई लकडी पर कतार बाध कर सोती है। और हर-एक चिडिया यह चाहती है कि—उसे कोने की नहीं बल्कि बीच की गर्म जगह मिले, इस लिए बीच मे घुसने के लिए इनमे बराबर धक्केबाजी होती रहती है।
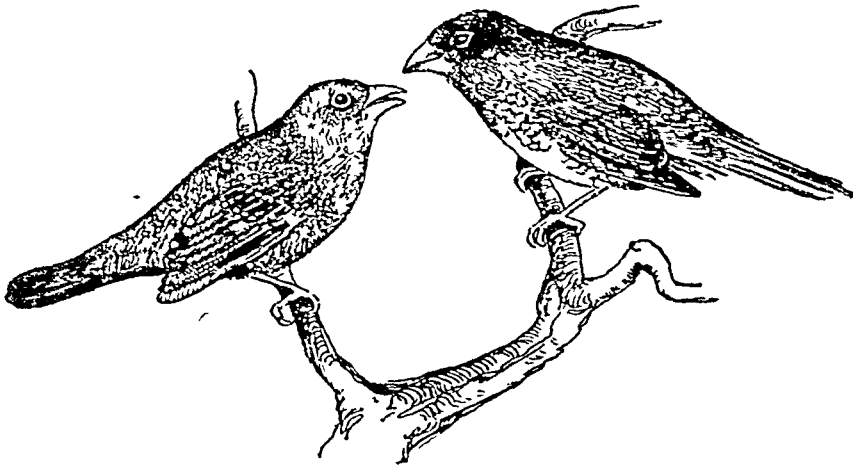
लालमुनियाँ तेलिया मुनियाँ

लालमुनियाँ ज्यादा तर जगलो मे नदी के निकट की घास मे रहती हैं और वही अपना घोसला भी बनाती हैं। यही से लोग इनको पिंजडों मे पालने के लिए पकड लाते हैं।

लालमुनियाँ यहाँ की ४ इच की छोटी सी बारहमासी चिडिया है, जिनके नर और मादा के रग मे जाडे मे तो थोडा सा ही फरक रहता है, पर जोडा बाँधने के समय नर का सारा शरीर लाल हो जाता है, जिसमे गर्दन से लेकर तमाम ऊपरी हिस्से मे छोटी छोटी सफेद बिन्दियाँ पडी रहती हैं। इसके पैर के पास से दुम तक का निचला हिस्सा काला रहता है। दुम का सिरा भी काला रहता है लेकिन डैने भूरे और दुम कलछौह होती है। नर अपने लाल रग के कारण 'लाल' कहलाता है।

मादा या मुनियाँ का ऊपरी हिस्सा भूरा होता है पर उसके डैने और पख लाल जैसे होते हैं। इसकी ठुड्डी और गला सफेद, सर के बगल से गर्दन और सीने तक का हिस्सा राख का रङ्ग लिए हुए भूरा और नीचे का भाग धूमिल केसरिया रहता है।

लालमुनियों की आँख की पुतली नारङ्गी, चोंच लाल और पैर प्याजी भूरे होते हैं। नर की चोच का रग चटक और मादा का धूमिल रहता है, पर बनावट मे दोनो की चोचे गौरैया आदि दाना खाने वाली चिड़ियो की तरह मोटी होती है।

गौरैया की तरह इनके घोंसले बनाने और अडा देने का समय बारहोमास रहता है, लेकिन इनके अडे ज्यादातर जून से लेकर सितम्बर के बीच मे ही मिलते है। इसके घास के बने हुए सुन्दर घोंसले, गेंद की तरह गोल होते है, जिसमें बगल से जाने को रास्ता रहता है। इन घोसलो को भीतर की ओर से नरम घास और पर की मदद से से लालमुनियाँ मुलायम बना देती हैं। ये घोंसले जमीन से दो-तीन फीट की ऊँचाई पर किसी झाड़ी या घनी घास मे बनाए जाते है, जिनमे मादा मुनियाँ छोटे-छोटे पाच-छः दूध से सफेद अडे देती है।

लालमुनियाँ की जाति की दो और चिड़ियाँ होती है जो हरी मुनियाँ (Green Munia) और तेलिया मुनियाँ (Spotted Munia) कहलाती है। इनके रग मे तो फर्क जरूर रहता है लेकिन शकल सूरत, शरीर की बनावट और कद मे ये एक दूसरे से बहुत मिलती जुलती होती है।

हरी मुनियाँ इधर कम आती है लेकिन तेलिया मुनियाँ तो हमारे प्रान्त मे लालमुनियाँ की ही तरह फैली है। इनके नरमादा एक ही रग के होते है। इनके बदन का ऊपरी हिस्सा और डैने धूमिल कत्थई होते है। दुम हलकी भूरी और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।

आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच निलछौंह काली, और पैर गाढ सिलेटी होते है।

तेलिया मुनियाँ गरोह मे रहने वाली चिड़ियाँ है जिन्हे लोग लालमुनियो के साथ पिजड़ो मे पालते है। इनकी आदतें बहुत कुछ लालमुनियो की तरह मिलती जुलती है लेकिन ये उनकी तरह न बोल कर किट् किट् किट् किट् की आवाज करती है।

इनका घोंसला बहुत बड़ा गोल और भद्दा सा होता है—जिसके भीतर जाने का रास्ता जल्द दिखाई नही पड़ता।

सहेली

(Minivet)

सहेलियाँ लहटोरो के भाई-बन्धु होते हुए भी अपने सुदर रग के कारण उनसे अलग समझी जाती है। इसी कारण इस पुस्तक मे भी उन्हे अलग ही रखा गया है।

सहेली

इनकी सुदर और भड़कीली पोशाक वाली जाति तो यहाँ जाडो मे ही आती है पर छोटी जाति के पक्षी जो 'बुलाल-चश्म' या राजलाल कहलाते हैं, यहाँ के मैदानो मे बारहो मास रहते है। राजलाल सहेली से छोटे तो होते ही है उनका रग भी सहेली की तरह आकर्षक नही होता।
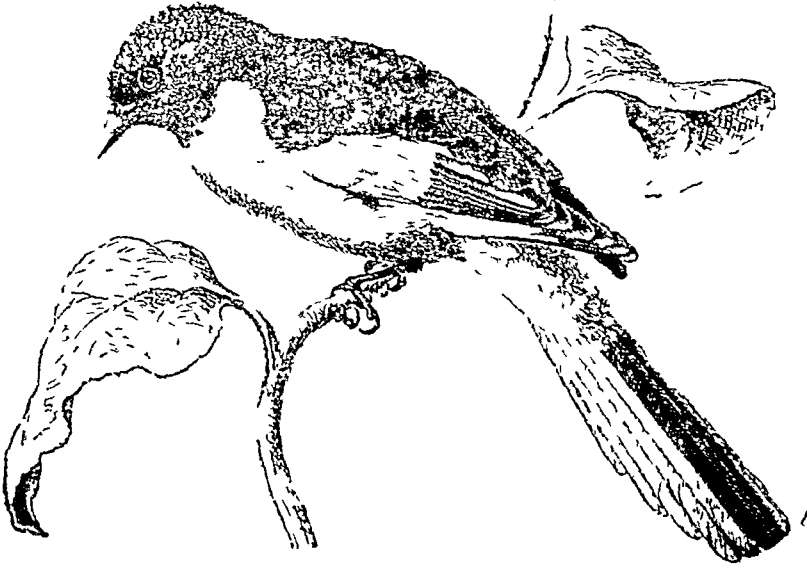
सहेली गौरैया के बराबर की हमारे यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो हमारे यहाँ के मैदानो मे जाडा शुरू होते होते आजाती है और फिर जाडे के अन्त उत्तरी पहाड़ो की ओर लौट जाती है। इन चचल पक्षियों को इनकी भड़कीली लाल पोशाक के कारण तलाशने मे जरा भी दिक्कत नही पड़ती। ये अक्सर ६-७ के गोल मे रहती हे, इससे इनका दूसरा नाम 'सात-सखी' भी काफी प्रसिद्ध है। इसके गोल मे अक्सर एक या दो नर और बाकी मादाएँ रहती है।

सहेली (Short billed minivet) के नर मादा एक रग के नही होते। नर की आधी पीठ तक का ऊपरी हिस्सा, और गले तक का निचला हिस्सा तो काला रहता है, पर डैने को छोड़ कर बाकी सारा बदन चटक लाल रहता है। डैने भी काले होते हैं, जिनके बीच मे एक आड़ी लाल पट्टी पड़ी रहती है। मादा भी करीब-करीब और सभी बातों मे नर ही जैसी होती है, जिसमे लाल रङ्ग का स्थान पीला ले लेता है।

इतनी सुदर पोशाक देकर भी प्रकृति ने इनको मीठी बोली नहीं दी—ये केवल सी सी सी सी ऐसी आवाज करती रहती है। इनका मुख्य भोजन कीडे मकोडे हैं।

इनके अडा देने का समय—अप्रैल से जुलाई तक है, जब ये पतली-पतली डालियो और जडो का सुदर कटोरेनुमा गहरा घोसला बनाती है, जो मकडी के जाले से बनाए हुए लसदार पदार्थ से किसी दुफकी डाल मे जकड़ा रहता है। इनके अडो का रग पत्थरी या हलका अगूरी रहता है, जिनपर कत्थई चित्तियाँ पडी रहती हैं। इनकी तादाद दो से चार तक रहती है।

राजलाल (Little'Minivet) सहेली से छोटे ज़रूर होते है पर चचलता मे ये उससे किसी तरह भी कम नही कहे जा सकते। अमराइयो या बाग के ऊँचे पेड़ो की फुनगियो पर इनका ५-७ का गोल इधर से उधर उडता ही रहता है। इनके गरोह मे भी सहेली की तरह एक दो नर और बाकी मादाएँ रहती है।

ये हमारे यहाँ की बारहमासी छोटी चिड़ियाँ है जो अपना ज्यादा समय पेडो पर ही बिताती है। क्योंकि वहाँ उनको अपनी कीडे-मकोड़ो की खूराक आसानी से मिल जाती है।

इनके नर सहेली से कम रङ्गीन होते है जिनका ऊपरी हिस्सा कजई होता है। दुम के पास का, और कलछौह खैरे डैनो के बीच का, कुछ हिस्सा जरूर चटक लाल रहता है। दुम के बीच के परो के सिरे भी लाल होते है, और सीने का रङ्ग भी लाल रहता है, जो नीचे जाते-जाते नारगी होकर सफेद मे बदल जाता है। मादा का ऊपरी हिस्सा तो कजई ही रहता है पर नीचे की और डैनों की ललाई पीलेपन मे बदल जाती है। सहेली की तरह इसकी आँख की पुतली भूरी और चोच तथा पैर काले होते है।

इनके अडा देने का समय तो वैसे मार्च से सितम्बर तक है पर इनके सहेली की तरह के घोसले गरमियो मे पेडो की फुनगियो पर आसानी से मिल सकते है। ये घोसले पेड़ की पत्तियो मे ऐसे छिपे रहते है कि सहसा उन पर निगाह ही नहीं पड़ती। ये छोटे से कटोरानुमा होते हैं जिन्हे राजलाल छोटी छोटी टहनियों, जड़ों परो और घासफूस से काफी मुलायम बना लेते हैं।

इनके अडो की संख्या प्रायः दो-तीन रहती है जो सहेली के अडो के रग के होते है। नाप में जरूर ये उनसे कुछ छोटे होते हैं।

(देखिए रगीन चित्र)

हुदहुद

[Hoopoe]

हुदहुद के बारे मे अक्सर धोखा होना है। कुछ लोग इसे कठफोर समझने है पर दरअसल बात ऐसी है नही। कठफोर से तो इससे किसी किस्म की रिस्तेदारी भी नहीं है। यह तो जमीन पर रहने वाली हमारी बारहमासी सुन्दर चिड़ियो मे से एक है, जिसकी भडकीली पोशाक इसे छिपेने नहीं देती। इसे गाँव के आस-पास खुले मैदानों में बिना किसी कठिनाई के देखा जा सकता है।

हुदहुद

हुदहुद के नर और मादा एक शकल के होते हैं। ये लम्बाई मे १८ इच से ज्यादा नही होते। दोनो के सर पर लम्बी चोटी होती है जो जमीन खोदकर कीड़े खाते समय तो दबी रहती है पर इसके जरा भी चौकन्ना होने पर खुलकर पखी नुमा हो जाती है। इसकी चोच भी तेज और नीचे की ओर झुकी हुई रहती है।
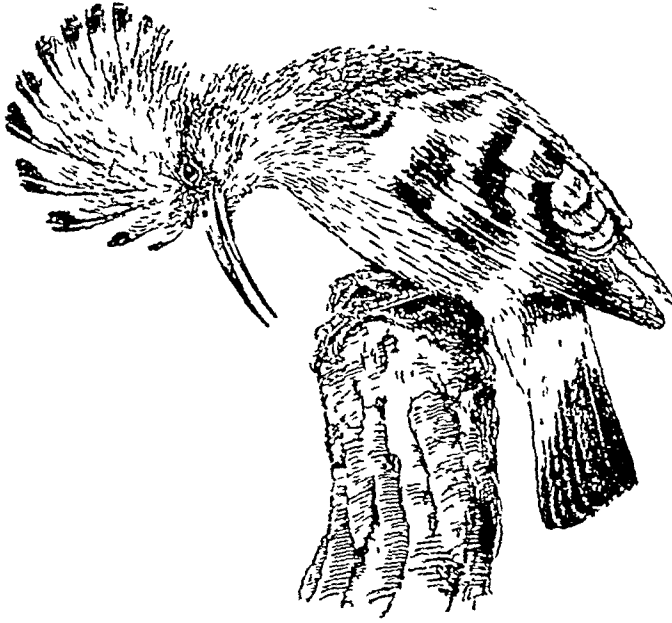
इसका चोटी से लेकर गले तक का रङ्ग हल्का बादामी, चोटी के सिरे काले और सफेद तथा आधी पीठ और कधे से लेकर सीने तक का हिस्सा ऊदी मिला हुआ हल्का बादामी रहता है। इसकी पीठ पर आडी-आड़ी सफेद और काली धारियाँ रहती है। दुम का भीतरी हिस्सा सफेद और बाहरी हिस्सा काले रङ्ग का होता है।

इसकी आँख की पुतली ललछौंह कत्थई, चोंच सीग के रङ्ग की काली और पैर गाढ सिलेटी रग के होते हैं।

हुदहुद का मुख्य भोजन कीडे-मकोड़े है, जिनकी तलाश मे यह सदैव इधर-उधर जमीन मे घास और दूब आदि खोदा करता है। इसीसे शायद इसका दूसरा नाम 'दुबया' प्रसिद्ध हुआ है। यह जरा सा

खटका पाने पर ही पेड पर चला जाता है। उडने मे तो यह इतना तेज़ और गिरहबाज़ होता है कि इसे आसानी से शिकरा और लगर आदि शिकारी चिड़ियाँ भी नहीं पकड़ सकतीं। इसे मुर्गियो की तरह मिट्टी मे नहाने का शौक है। इससे इसका शौक ही पूरा नही होता बल्कि इसके रोंए के भीतर के छोटे छोटे कीडे भी मर जाते हैं।

हुदहुद का एक और नाम कम प्रसिद्ध नहीं है। मुसलमान लोग इसे 'शाह सुलेमान' कहते हैं। और सचमुच जब यह किसी ऊँची जगह पर अपनी भड़कीली पोशाक और ताजनुमा चोटी फुला कर बैठता है तो किसी मुकुटधारी सम्राट से कम नहीं जान पड़ता।

इतना सुन्दर पक्षी होते हुए भी यह घोंसला बहुत भद्दा बनाता है। किसी अँधेरे खोखले, छज्जे या वीरान खँडहर की फर्श पर यह थोड़ी सी घास फूस और पंख वगैरह जमीन पर रखकर घोंसला बनाने से छुट्टी ले लेता है। मादा इसी पर तीन से दस तक अडे देती है जिनको छोड़ कर फिर वह उनके फूटने तक हटती नहीं। नर इसको बाहर से ला लाकर खाना दिया करता है। अडे फूटने पर, मादा को कहीं छुट्टी मिलती है और तब दोनों, बच्चों के लिए बाहर से कीडे पतिंगे लाते रहते है।

इसके अडे देने का समय फरवरी से जुलाई तक रहता है। पर इसके घोंसले ज्यादातर अप्रैल और मई मे मिलते हैं। अडों का रङ्ग बहुत हलका बादामी और हरापन लिए हलका नीला होता है।

शिकारी चिड़ियाँ

शिकारी चिड़ियाँ

शिकारी चिड़ियों के अध्याय मे यहाँ तीन किस्म की चिड़िया दी जा रही हैं।

१—बाज बहरी आदि जो छोटे जानवरों और चिड़ियों का शिकार करते हैं। २—गिद्ध की जाति के पक्षी जो मुर्दाखोर होते हैं। और ३—उल्लू की जाति की चिड़ियाँ जो रात में निकलती हैं और चूहों और छोटी छोटी चिड़ियों से अपना पेट भरती हैं।

इन सब में एक खास बात यह होती है कि इनके पंजे बहुत मजबूत होते हैं जिनमें से फिर शिकार का छूट कर निकल जाना असंभव ही होता है। पर इसके अलावा इन तीनों को—उनकी आवश्यकता को देखते हुए—प्रकृति ने कुछ अलग-अलग सहूलियतें भी दी हैं।

बाज की श्रेणी के पक्षियों को—जिन्हें अपने बराबर या अपने से बड़ी चिड़ियों पर आक्रमण करना पड़ता है—यह डर भी तो रहता है कि कहीं शिकार के पक्षी अपने बचाव के समय पंजे या खार न मार दे। इसीलिए उनकी टाँगें नीचे तक परों से ढकी रहती हैं। इस श्रेणी के पक्षियों की मादा अपने नर से कद में बड़ी होती हैं।

पर गिद्ध को किसी पर हमला न करके मुरदा जानवरों से ही अपना पेट भरना रहता है, इसीसे उनकी ऐसी लम्बी गरदन का विकास हुआ है जिस पर—रोआँ या पर नहीं होते और जिससे मुरदा पशुओं के पेट के भीतर डाल कर अपना पेट भरने में उन्हें बड़ी आसानी हो जाती है।

उक़ाब
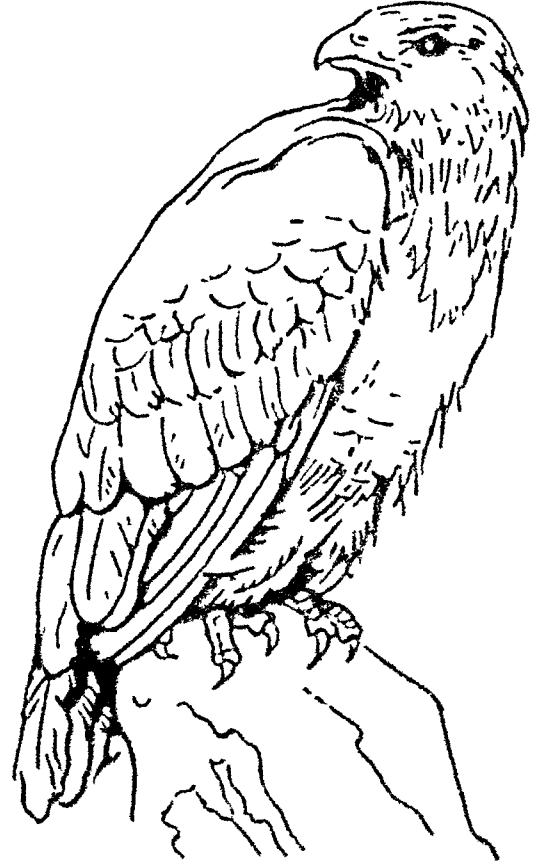
[Tawny Eagle]

उकाब हमारे यहाँ की अपने जात की शिकारी चिड़ियों मे सब से बड़ा होता है, इसे 'रगर' भी कहते है। यह चील से कुछ बड़ा होता है , पर शकल सूरत मे बहुत समानता होने के कारण दोनो के पहिचानने मे धोखा हो जाता है। लेकिन अगर हम इन दोनो की दुमो को ध्यान से देखे तो इनके पहचानने मे बड़ी आसानी हो सकती है। उकाब के दुम का सिरा गोल और चील का दुफका होता है।

उकाब
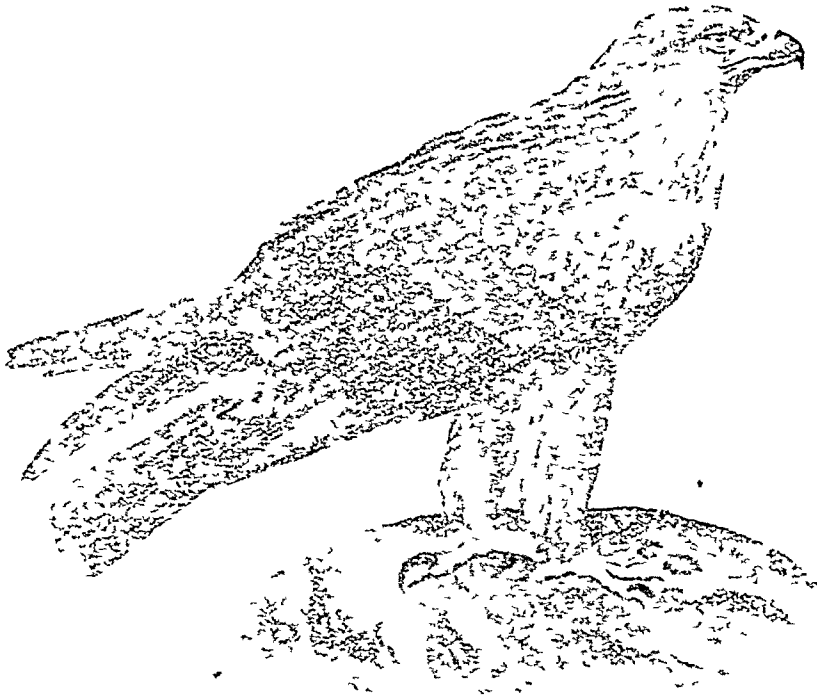
जैसा पहले बताया जा चुका है ज्यादातर शिकारी चिड़ियों की मादा नर से बड़ी होती है। चाहे रग-रूप मे कुछ भी भेद न हो। उकाब का भी ऐसा ही हाल है। इसकी मादा २८ इच और नर २५ इच का होता है , पर दोनो के रग-रूप एक जैसे ही रहते हैं।

उकाब यहाँ का बारहमासी शिकारी पक्षी है, जो चील की तरह आसमान मे चक्कर लगाता रहता है। इसे घने जगलो और नमी की जगह से कही ज्यादा खुले मैदान पसद हे, जहाँ इसे जमीन पर अपना शिकार देखने में आसानी रहती है।

उकाब देखने मे बहुत सुन्दर लगता है। इसकी शकल-सूरत से ही जैसे बहादुरी टपकती है पर बहादुरी और सीनाजोरी के साथ-साथ इसमे चोरी की आदत भी कम नहीं होती। खरगोश या किसी

बड़ी चिड़िया को अपने मजबूत पंजों से पकड़ने के अलावा इसे दूसरी चिड़ियों के घोंसले चुराते हुए भी देखा जा सकता है। साँप, मेंढक और छिपकलियाँ भी इससे बचने नहीं पाती।

इसके सारे शरीर का रंग वैसे तो भूरा, हलका बादामी या सुनहला भूरा होता है—पंख कलछौंह खैरे रंग के होते हैं जिसके सिरे पर सफेद चित्तियाँ रहती हैं। दुम भूरी होती है जिस पर सफेद आड़ी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच आगे कलछौंह और जड़ के पास पीलापन लिए सिलेटी और पैर पीले होते हैं।

उकाब की चोंच टेढ़ी, तेज और आगे की ओर झुकी हुई रहती है और इसका सर बहुत चपटा होता है। इसके पैरों पर घने रोएँ रहते हैं जिसमें हमला की जाने वाली चिड़ियाँ यदि पंजे मारें तो इनकी बचत हो जावे।

नवम्बर से जून तक इसके अंडे देने का समय है: जब यह काँटेदार सूखी टहनियों से किसी ऊँचे पेड़ की चोटी पर अपना छिछला सा घोंसला बनाता है, जिसका भीतरी हिस्सा घास और पत्तियाँ लगाकर नरम कर दिया जाता है।

इसके अंडों की तादाद १ से ३ तक होती है, जो रंग में हलके राखी या सफेद रंग के होते हैं। इनमें से कुछ तो सादे रहते हैं और कुछ पर भूरी, लाल और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

उल्लू

[Owl]

उल्लुओं की कहीं भी कमी नहीं है। हमारे देश में भी इनकी कई जातियाँ पाई जाती हैं। बड़े—उल्लू, मरचिरइया या घुघ्घू और छोटे-खूसट या चुगद कहलाते हैं। यहाँ दोनों का बयान अलग अलग दिया जा रहा है क्योंकि दोनों दो जाति के हैं और दोनों के कद में बहुत अन्तर रहता है। इसके अलावा वैसे और बातों में ये सब एक जैसे ही होते हैं।

उल्लू कई बातों में अन्य पक्षियों से निराला है। सब से बड़ा भेद तो यही है कि यह दिन के बजाय रात को अपने शिकार के लिए निकलता है, जब और सब चिड़ियाँ बसेरा ले लेती हैं। दूसरा बड़ा फर्क इसकी और दूसरी चिड़ियों की शकल सूरत में होता है। इसकी आँख, अन्य चिड़ियों की भाँति बगल यानी कान के नीचे न होकर, मनुष्यों की तरह सामने को होती है। जिसका नतीजा यह होता है कि यह सिर्फ अपने सामने की ही ओर देख सकता है, जब कि दूसरी चिड़ियाँ बगल और पीछे का भी काफी हिस्सा आसानी से देख सकती हैं। इसकी आँखों की इस तरह की बनावट का यही कारण हो सकता है कि यह—स्वयं शिकारी चिड़िया होकर भी—किसी दूसरी चिड़िया का शिकार नहीं है, क्योंकि रात को जब यह निकलता है तब चिड़ियाँ सोती रहती हैं। इसीसे अपनी बचत के लिए इसे चौकन्ना नहीं रहना पड़ता, और सामने की ओर देखने के लिए ही ज्यादातर इसकी आँखें इस्तेमाल में आती हैं। लेकिन इसकी एवज में प्रकृति ने इसकी आँखों को काफी बड़ा कर दिया है और एक और बड़ी आसानी यह दी है कि यह अपनी गर्दन बड़ी आसानी से घुमा कर पीछे की ओर भी देख सकता है।

घुघ्घू या मरचिरैया

तीसरा फर्क इसके परों में होता। जहाँ तोते और बाज-बाज बत्तखों के उड़ते समय एक तेज आवाज सी आती है—जैसे उनके डैने टीन के बने हों—वहाँ इसकी
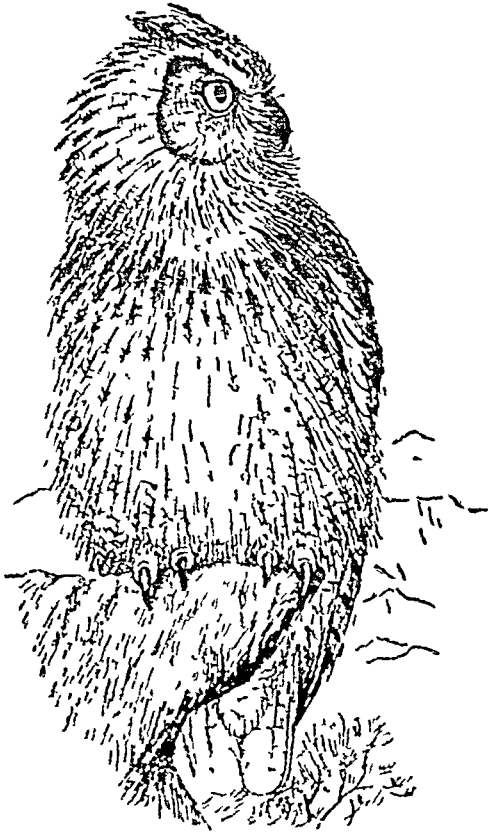
उड़ान ऐसी खामोशी की होती है कि अगर यह हमारे सर के एक गज ऊपर से भी उड़ जावे तो भी जान न पड़े। इसकी वजह यह है कि इसके पर बेहद मुलायम होते हैं, जिससे रात में जब यह अपने शिकार पर हमला करे तो उसे पता भी न चले।

चौथा फर्क इसमें यह होता है कि—इसके कान के सूराख और दूसरी चिड़ियों की तरह छोटे और परों में छिपे नहीं रहते बल्कि—काफी बड़े और खुले रहते हैं, जिससे यह रात में जरा सी भी आहट सुन सके। पाँचवाँ और आखीर भेद इसमें और बाकी चिड़ियों में यह होता है कि यह अपने शिकार को नोच-नोचकर नहीं खाता बल्कि समूचा निगल जाता है।

हमारे यहाँ बड़े उल्लुओं की दो मुख्य जातियाँ हैं। एक पानी के करीब रहने वाले मुआ या उल्लू। दूसरी खंडहरों में और पुराने पेड़ों पर रहने वाली मरचिरैया या घुघ्घू।

मुआ या उल्लू का कद २२ इंच का होता है, जिसके नर और मादा एक शकल के होते हैं। दूसरे उल्लुओं से इसका सर बड़ा होता है। इसके ऊपर के पर कत्थई, हल्के भूरे जिन पर सफेद और काले लहर जैसे निशान, दुम गहरी भूरी जिसके सिरे पर सफेदीपन लिए भूरे रंग की धारी और गला सफेद होता है। इसके नीचे के रंग में सफेदी का हिस्सा ज्यादा रहता है जिसमें गहरी भूरे रंग के छोटे चिह्न पड़े रहते हैं। दूसरी और ही

मुआ या उल्लू

यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो—नदी के किनारे के ऊँचे कगार, पानी की ओर झुकी हुई पेड की किसी डाल या किसी वीरान खडहर मे अक्सर दिखाई पडता है। इसका मुख्य भोजन चिडियाँ, चूहे, मेढक और मछलियाँ हैं। मछलियाँ इनके पजे से फिसल न जावे इसमे इनके पजे खुरदुरे बने हुए रहते हैं।

इसके अडा देने का समय दिसम्बर से मार्च तक है। जब यह या तो किसी पुराने पेड का खोखा या कगार का सूराख तलाश करता है या फिर गिद्ध वगैरह किसी बडी चिडिया के इस्तेमाल किये हुए घोंसले पर ही अपना दखल जमा लेता है। जिसकी मरम्मत हो जाने पर मादा उसमे दो अडे देती है। अडो का रग बहुत हलका बादामी लिए हुए सफेद रहता है।

मरचिरैया या घुघ्घू, मुआ से कुछ बडा होता है और इसके भी नर मादा एक रग-रूप के होते हैं। इनको मरचिरैया कहने का कारण यह है कि—कुछ लोगो का ऐसा विश्वास है कि आदमी की मृत्यु के समय इन उल्लुओ को पहले ही से इसका पता चल जाता है और यह आस पास के पेड पर अक्सर बोलने लगते हैं।

घुघ्घू के सारे शरीर का रग भूरा रहता है जिसमे डैने गहरे भूरे रग के होते हैं। इसका निचला हिस्सा सफेदी लिए हलका भूरा रहता है जिसमे काले और गहरे भूरे आडे-आडे निशान पडे रहते है। पेट और दुम भूरी होती है जिसके सिरे पर पीलापन लिए बादामी रग की धारियाँ पड़ी रहती हैं।

इनकी आँख की पुतली पीली, चोच सीग के रग की, पैर रोएँदार और काले होते हैं।

वैसे तो यह चूहे, मेढक आदि सभी कुछ खाता है, पर ज्यादातर यह पेडो पर बसेरा लेते हुए कौओं के अडो पर हमला करता है। इसके अलावा अन्य चिडियो को भी यह छोडता नहीं।

किसी घने जंगल, बस्ती या वीरान मे यह किसी बडे पेड पर दिन को छिपा सोता रहता है। पर रात को इसकी घुघ्घू ऊ ऊ ऊ की मनहूस आवाज मे हमको इसकी मौजूदगी का पता बडी आसानी से चल जाता है।

यह सितम्बर से मार्च के बीच मे किसी पेड की दोफकी शाख पर या तो सूखी टहनियों का भद्दा सा घोसला बनाता है, या किसी गिद्ध के पुराने घोसले की मरम्मत करके उसी से अपना काम चला लेता है। घोसला भीतर से घास-फूस से मुलायम कर दिया जाता है जिसमें मादा दो सफेद अडे देती है।

खूसट

[Owlet]

खूसट उल्लू का छोटा भाई है। शकल-सूरत और आदत मे एक जैसा होता हुआ भी केवल कद मे यह छोटा होता है। यह सूरज डूबते-डूबते अपने घोंसले से बाहर निकल आता है, इससे इसको देखना कठिन नही। वैसे दिन को यह इमारतों या पेड़ो के किसी सूराख मे छिपा रहता है जहाँ जरा सा छेडने से यह भाग कर किसी पास की डाल पर बिना किसी डर के जा बैठता है।

खूसट को कुचकुचवा भी कहते हैं। यह ८ इच का छोटा सा बारहमासी पक्षी है, जिसके नर मादा एक शकल के होते हैं। ऊपरी हिस्सा डैने और दुम भूरी, जिस पर सफेद आड़ी-आड़ी लकीरे। और नीचे का हिस्सा सफेद जिस पर भूरी आड़ी-आडी लकीरे रहती है। दरअसल यह एक चितकबरा पक्षी है, जिसका सर और आँखे बडी होती हैं, और जिसकी चोच की जड से आँख के ऊपर तक सफेद रग की भौ सी बनी रहती है।

इसकी आँख की पुतली पीली, चोच और पैर पीलापन लिए हरे रहते हैं।

खूसट
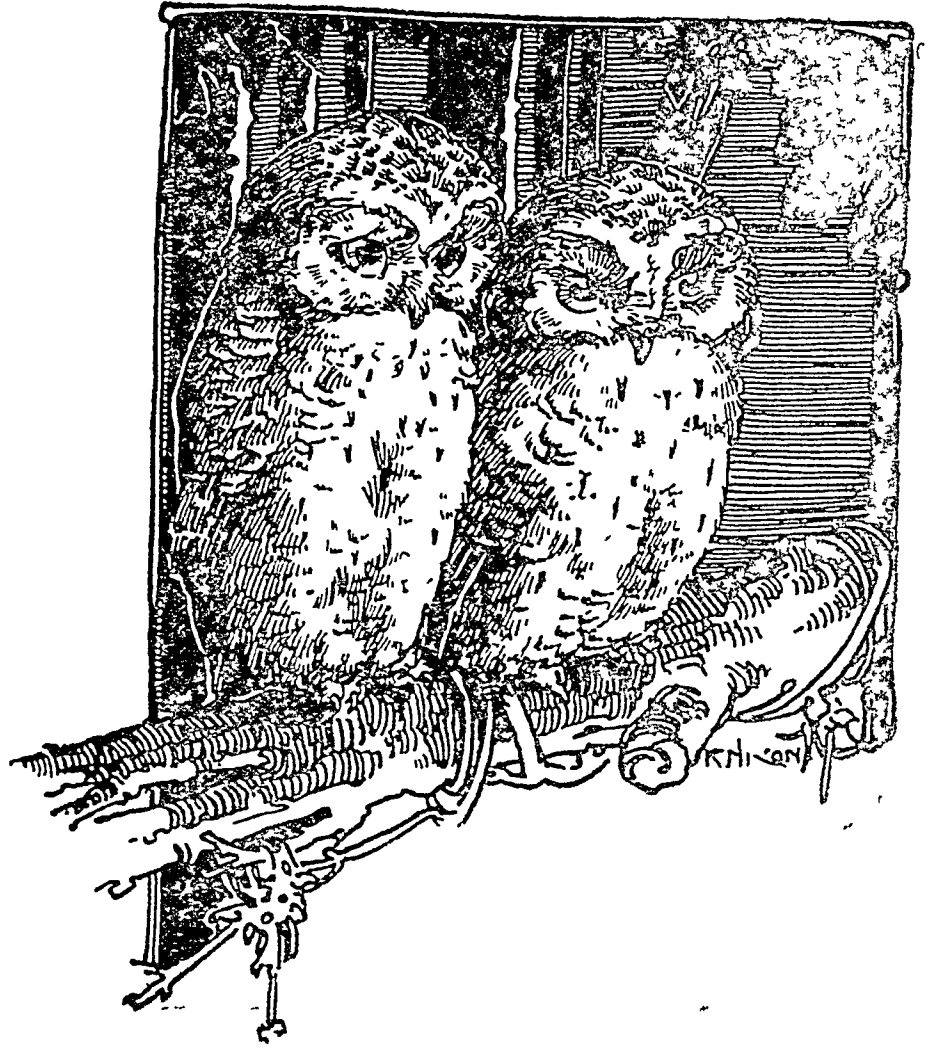
जैसा ऊपर बता आया हूँ यह बड़ा ही ढीठ पक्षी है। पुराने मकानो के सूराखो में चार-पाँच खूसट तक एक साथ रहते हैं, पर अडा देने का समय आने पर ये अक्सर जोड़ा बाँधकर रहने

लगते है। इनके अडा देने का समय फरवरी से मई तक है, जब मादा खूसट उसी सूराख मे थोडे से पख या घास-फूस रख कर ३ से ६ तक अडे देती है। अडे दूध से सफेद होते है।

एक छोटा उल्लू यहाँ और होता है। जिसे डुडुल या चुगद कह कर पुकारा जाता है। इसका कद १० इच के लगभग होता है और इसके नर मादा एक जैसे होते है। इसकी शकल में खास बात यह होती है कि इसके दोनो कानों के ऊपर कुछ पख उठे रहते हैं जो दूर से कान जैसे जान पडते है।

चुगद

इसकी दुम भूरी जिस पर हल्की बादामी धारियाँ, ऊपरी रङ्ग बादामी, नीचे का रङ्ग सफेद लिए हुए हलका बादामी, जिस पर छोटी-छोटी आड़ी और खडी-खडी काली धारियाँ रहती हैं। इसके गोल मुँह के चारो ओर एक काली गोलाकार धारी रहती है जो ठुड्डी के पास सफेद चित्ते से कट जाती है। मुँह का रग हलका बादामी रहता है और आँख के ऊपर सफेद भौ सी बनी रहती है। इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच पीलापन लिए हरा या सिलेटी और पैर, हरापन लिए पीले रहते हैं।
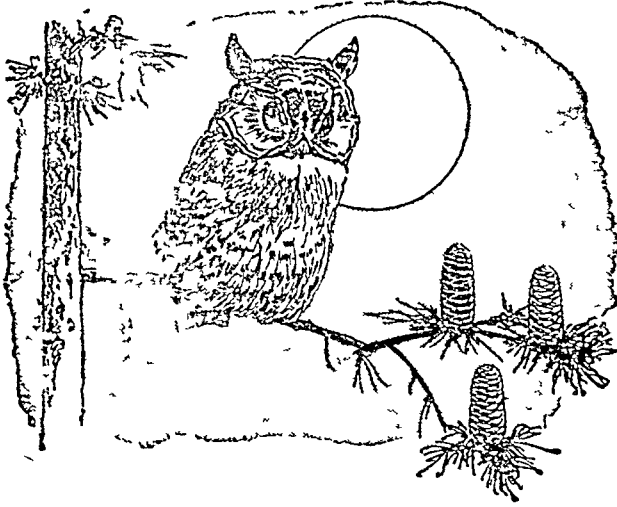
यह सुन्दर उल्लू सारा दिन, किसी घने पेड की डाल पर, सोने मे बिता देता है, इससे इसको दिन को देखना बहुत कठिन है पर कभी-कभी किसी पेड पर इत्तफाकिया इस पर निगाह पड भी जाती है।

इसके अडा देने का समय जनवरी से अप्रैल तक है, जब यह किसी खडहर या पेड के सूराख को घास-फूस रखकर मुलायम बना लेता है, जिसपर मादा दो से पाँच तक अडे देती है जो धुर सफेद रहते हैं।

गिद्ध

[Vulture]

गिद्ध हमारे लिए बहुत उपयोगी पक्षी है। भद्दे, गंदे और बदशकल होने पर भी इनको कुदरत ने सफाई का जो काम सौंपा है उसकी जिम्मेदारी जैसे ये भलीभाँति जानते हैं। जहाँ कोई जानवर मरा या मरने के करीब हुआ कि ये आसमान से चक्कर काटते हुए तेजी से नीचे उतरते है, और उसके माँस को नोच-नोचकर खाना शुरू कर देते है। यदि ये ऐसा करना छोड़ दे तो मरे हुए जानवरों की सड़न से बीमारी फैल जावे।

बड़ा गिद्ध

ये हमारे यहाँ के सबसे बडे और बारहमासी पक्षी हैं जिनके मजबूत पख उड़ने में चील को भी मात कर देते हैं। ये आसमान मे बहुत ऊँचे चले जाते हैं और वहाँ बिना थके दिन भर उड़ा करते है। नीचे जमीन पर जहाँ किसी मुर्दे के आसपास कौओं को जमा होते देखा नही कि ये ऊपर से गोलाकार घूमते हुए नीचे टूट पड़ते हैं। नीचे पहुँच कर ये झुन्ड के झुन्ड लाश के चारों ओर बैठ जाते है और शीघ्र ही उसे चट कर जाते हैं। कभी-कभी तो ये इतना ज्यादा खा लेते है कि इनका उड़ना मुश्किल हो जाता है और फिर ये दो तीन दिन पेड़ पर बैठ कर ऊँघने के बाद कही खाने की तलाश मे उडने के काबिल हो पाते है।

इनकी दो मुख्य जातिया यहाँ होती है—गिद्ध और राजगिद्ध। एक और छोटा गिद्ध 'गोबर गिद्धा' या 'सफेद गिद्ध' भी यहाँ होता है, जिसका वर्णन यहाँ दिया जा रहा है। इन दोनों बडे गिद्धो की लम्बी गर्दन और सर के ऊपर पर न होकर रोएँ होते हैं, जिससे इन्हे लाश के भीतर अपनी गरदन डालकर खाने मे आसानी रहे।

बड़ा गिद्ध (White-Backed Vulture) तीन फीट का बड़ा सा पक्षी है जिसके नर मादा एक जैसे होते हैं इसे 'चमर-गिद्ध' भी कहते है।

इसकी नगी गर्दन पर भूरे रोए रहते हैं, जो सिरे तक पहुँच कर घने और सफेद हो जाते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा कलछौह भूरा रहता है। जिसमे पीठ पर एक बडा सफेद चित्ता होता है, दुम और निचला हिस्सा भूरापन लिए काला, टॉग, और डैने का ऊपरी पिछला हिस्सा सफेद रहता है।

इसकी ऑख की पुतली भूरी और गर्दन और सर का रग सिलेटी रहता है। चोंच का अगला हिस्सा गाढ सिलेटी और पिछला सफेद रहता है। पैर कलछौह होते हैं।

चमर-गिद्ध गोल बाध कर रहने वाले पक्षी हैं, जो बडे शहरों और गाँवों के आसपास बडे-बडे पेडों पर रहते हैं।

सितम्बर से मार्च के बीच ये सूखी टहनियो का अपना भद्दा सा घोसला बनाते हैं, जिसमे मादा एक वड़ा अडा देती है। अडे का रग हलका ऊदी या हरापन लिए सफेद रहता है, जिसपर किसी किस्म की चित्ती नही रहती।

राजगिद्ध (King Vulture) चमर-गिद्ध से कुछ छोटा होता है। इसका रग चमकीला काला तथा इसकी गर्दन और सर लाल रग का होता है। यह 'काला गिद्ध' भी कहलाता है। इस गिद्ध के नर मादा एक रग-रूप के होते हैं। इसके डैने का कुछ हिस्सा और पेट कलछौह भूरा रहता है, जिसमे टॉग के ऊपरी हिस्सों पर दो सफेद चित्ते पडे रहते है। सीने पर भी दोनो ओर दो सफेद चित्ते पडे रहते हैं। और दोनो कानो के नीचे दो मास के लोथडे से लटकते रहते हैं।

राज-गिद्ध

इसकी ऑख की पुतली ललछौह बादामी, चोंच गहरी भूरी और पैर धूमिल लाल होते हैं।

राजगिद्ध की और आदतें तो बडे-गिद्ध के समान होती है, पर ये गोल मे न रह कर जोडा बॉध कर रहते हैं।

हमारे यहॉ तो ये सारे देश मे फैले हुए हैं लेकिन इनकी सख्या जैसे चमर-गिद्धो से बहुत कम है। किसी मुरदे के आसपास जहॉ बीसियो बड़े-गिद्ध जमा रहते हैं वहॉ राज-गिद्ध दो चार से ज्यादा नही दिखाई पडेगे। ये ऊँचे अकेले पेड मे जनवरी से अप्रैल के बीच मे सूखी लकडियों का अपना बेडौल घोंसला बनाते हैं, जिसमे मादा एक अडा देती है जो रग मे बडे-गिद्ध के अडे की तरह हरापन लिए सफेद रहता है।

गिद्ध की जाति का तीसरा पक्षी 'गोबरगिद्धा' कहलाता है । यह गिद्ध से न मिल कर चील से ज्यादा मिलता है और रग मे भी यह काला न होकर सफेद होता है। इसकी मुख्य खूराक भी मुर्दों का मास नहीं होती। सडी लाश के अलावा यह खाना भी खाता है, इसीसे इसे 'मेहतर' या गोबर-गिद्धा कहते हैं।

गोबर-गिद्धा बहुत ही ढीठ पक्षी है। इसे जैसे आदमियो से डर ही नही लगता और बड़े बडे शहरो के बीच मे भी इसे मकानो की छत पर बिना किसी डर के बैठा देखा जा सकता है। यह बारहो महीने यही रहता है। शहर के ऊँचे खाली मकानो और देहात के मैदानो मे इसे देखना मुश्किल नही। इसके नर मादा का रग एक जैसा गदा सफेद होता है, जिसमे डैने काले और भूरे रहते हैं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है इसकी शकल बड़े या राज-गिद्ध से भिन्न होती है। कद मे भी यह २०—२१ इंच से ज्यादा बड़ा नहीं होता। इसकी पीली गर्दन नंगी जरूर रहती है पर वह लम्बी न होकर छोटी ही रह जाती है, जिसकी जड पर बालो का एक कठा सा रहता है।
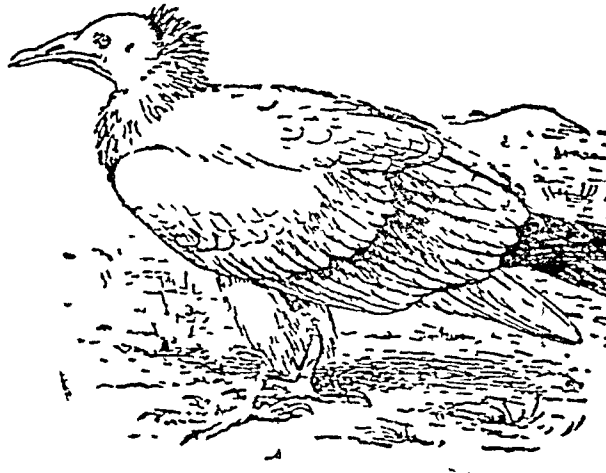
गोबरगिद्धा

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी और चोच कुछ लम्बी और सींग के रंग की होती है, जिसकी नोक आगे की ओर झुकी रहती है। पैर का रग हलका गुलाबीपन लिए सफेद रहता है।

फरवरी के अन्त से अप्रैल के बीच मे यह किसी पेड़, ऊँचे मकान या ऊँचे चट्टान पर अपना बहुत भद्दा सा घोसला बनाता है जो पतली टहनियों और चीथडों से मिला कर बनाता है। अडों की संख्या एक से दो तक रहती है जो गदे सफेद रग के होते हैं। इस सफेदी मे भूरी या ललछौंह झलक भी रहती है।

चील

[Kite]

शिकारी चिड़ियों मे चील ही सब से ढीठ और शरारती होती है। कौए की तरह खाने-पीने की चीजें इसके हमले से खाली नही जाने पातीं। गोश्तखोर होने के कारण शहरों मे बूचरखानों के पास इनके झुन्ड के झुन्ड दिखाई पडते हैं और यदि सावधानी न रक्खी गई तो इनके झपट्टे से चीजो को बचाना कठिन हो जाता है।
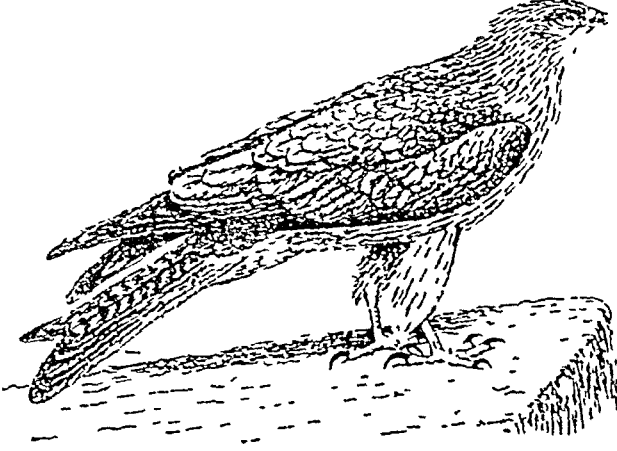
चील

यह हमारे यहाँ की बारहमासी और हमारी बहुत परिचित चिड़ियों मे से है। इसकी दो मुख्य जाते होती हैं। भूरी या काली चील (Common Kite) और खैरी चील या खेमकरी (Brahminy Kite)।

काली चील खेमकरी से कुछ बडी होती है। दुम लेकर यह पूरे २ फीट की होती है और इसके नर मादा एक ही शकल सूरत के होते हैं।

इसका ऊपरी हिस्सा भूरा, डैने गहरे भूरे और सर के ऊपर के हिस्से से गर्दन तक पीलापन लिए भूरा रहता है। आँख के पीछे एक गहरा चित्ता रहता है। दुम गहरी भूरी होती है जिसके नीचे का हिस्सा सफेदी मायल भूरा और पेट पीलापन लिए भूरा होता है। इसके सारे बदन मे बुलबुल की तरह गहरे रग की सेहर सी पडी रहती है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और पैर पीले होते हे। पजों का रग काला होता है।

उडने मे चील उस्ताद होती है। हवा मे यह ऐसी तेजी और आसानी से उडती हैं जैसे हवा चीरती चली जा रही हो, और किसी चीज पर गोता खाकर ऐसा झपट्टा मारती है कि उसकी फुरती देख कर ताज्जुब होता है।

अडे देने और घोसला बनाने मे भी यह किसी से डरती नही। बाज़ार के बीच के पेड़ो पर इसके घोसले अक्सर देखे जा सकते हैं।

चील टेढ़ी-मेढ़ी सूखी टहनियों का भद्दा सा घोंसला बनाती है जिसको कभी-कभी यह घास, ऊन और बालों से मुलायम कर देती है।

इसके अंडा देने का समय तो दिसम्बर से मई तक रहता है पर ज्यादातर इसके अंडे फरवरी में मिलते हैं। घोंसला अक्सर २०—२५ फीट की ऊँचाई पर होता है, जिसमें मादा दो तीन अंडे देती है। अंडों का रंग बादामी लिए हलका हरा अथवा सफेदी मायल हलका सिलेटी होता है, जिस पर बादामी, बैंगनी और लाल चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

खेमकरी जैसा ऊपर बता आया हूँ काली चील से कुछ छोटी होती है। इसके—चिल्होर, खैरीचील, शकर चील, धोबिया चील और शाहमुबारक आदि कई नाम हैं। दक्खिन में तो इसे 'गरुड़' का नाम मिल गया है। इसका सर, गर्दन, सीना तो सफेद रहता है पर बाकी सारा बदन खैरा होता है। इसके डैने का कुछ हिस्सा काला और दुम का सिरा सफेद रहता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच पीलापन लिए सींग के रंग की और पैर हरापन लिए पीले होते हैं। इसकी चोंच शिकारी चिड़ियों की तरह टेढ़ी रहती है।

खेमकरी भी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो ज्यादातर पानी के आस-पास रहती है। वहाँ मेढक और मछलियों को पकड़ते हुए इसे आसानी से देखा जा सकता है। इसके नर मादा का रंग-रूप एक जैसा होता है।

इस चील की बाकी और सब बातें काली चील से मिलती जुलती होती हैं। हाँ, घोंसला बनाने की जगह यह जरूर ऐसी चुनती है जो पानी के पड़ोस में हो।

कद के मुताबिक इसके अंडे भी काली चील के अंडों से छोटे होते हैं पर रंग उनसे करीब करीब एक जैसा ही होता है और कभी कभी ऐसा भी देखा गया है कि इन पर काली चील के अंडों की तरह चित्तियाँ नहीं होतीं।

टीसा

[White Eyed Buzzard]

टीसा को बाज और बहरी से ज्यादा चील के निकट रखा जा सकता है। पहली बात तो यह कि इसकी मादा नर से बडी नहीं होती, और दूसरे यह कि यह अपने शिकार से ज्यादा दूसरे के मारे हुए शिकार से ही अपना पेट भर लेता है। मरे हुए मवेशी भी इससे नहीं बचते।

टीसा

यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जिसे खुले मैदानों, टीलों और टेलीग्राफ के खम्भों पर अक्सर देखा जा सकता है। यह ज्यादातर एक जगह आलसी सा बैठा रहता है और तालाबों के किनारे के मेढक पकड-पकड कर अपना पेट भरता रहता है। कभी कभी हम इसे मेढकों और कछुओं की तलाश में गोबरगिद्धे की तरह खुश्की पर भी टहलते देख सकते हैं।

यह कद में चील से कुछ छोटा लगभग १७ इञ्च का पक्षी है, जिसके नर मादा की शकल एक तरह की होती है। इसके ऊपर के हिस्से का रंग खैरा, डैने गहरे भूरे जिन पर सफेद धब्बे और जिनके सिरे काले होते हैं। इसका नीचे का हिस्सा सफेदी मायल रहता है। दुम का निचला भाग हलका बादामीपन लिए सफेद और ऊपरी भाग भूरा होता है, जिस पर आडी-आड़ी काली धारियाँ रहती हैं। इसकी ठुड्डी और गला सफेद होता है जिसमें दोनों ओर बीच मे गाढ भूरी खडी लकीरे रहती है। सीने से पेट तक का हिस्सा भूरा रहता है जिस पर सफेद चित्तियाँ पडी रहती हैं।

इसकी आँख की पुतली हलकी पीली, चोंच नारंगी जिसका सिरा काला, पैर हलका नारंगीपन लिए पीले और पंजे काले होते हैं। चोंच तेज नुकीली और टेढी होती है।

मार्च से मई तक के बीच मे टीसा सूखी टहनियों का अपना भद्दा सा घोंसला बनाता है, जिसमें मादा तीन चार अंडे देती है। इन अंडों का रंग हलका नीलापन लिए सफेद रहता है। वैसे तो इन अंडों पर चित्ते नहीं होते पर कभी कभी इनके कत्थई रंग के चित्तेदार अंडे भी पाए जाते हैं।

तुरमुती

[Turumti]

तुरमुती एक प्रकार की बहरी ही है। इसकी शकल सूरत में बहरी से थोड़ा फर्क होने के कारण इसे पहिचानना कठिन नहीं होता। अन्य शिकारी चिड़ियों की तरह इसे भी घने जंगलों से ज्यादा बाग पसंद है, जहाँ बारहों महीने इस का जोड़ा छोटी-छोटी चिड़ियों का शिकार किया करता है। इसका नर १२ इंच का और मादा उससे कुछ बड़ी १४ इंच की होती है। पर शकल सूरत दोनों की एक जैसी ही रहती है। मादा 'तुरमुती' और नर 'चेटवा' कहलाता है।
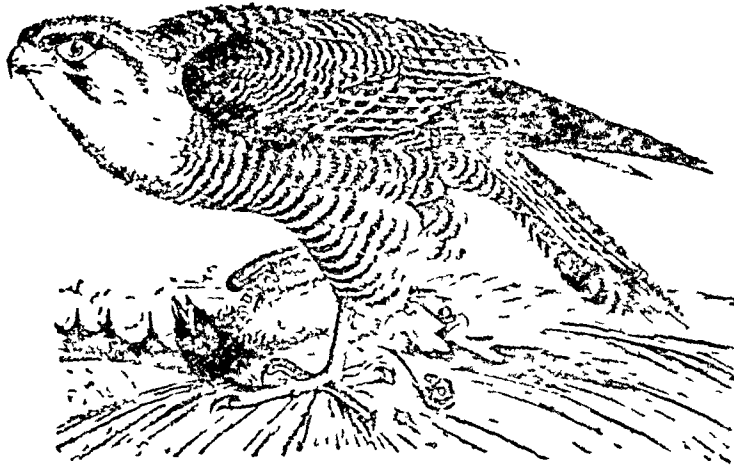
तुरमुती

तुरमुती के सर का ऊपरी हिस्सा, सर और गर्दन के अगल बगल का रंग धूमिल लाल रहता है। ऊपरी हिस्सा मिलेटी होता है, जिसपर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम भूरी जिस पर घनी काली आड़ी लकीरें और जिसका सिरा सफेद रहता है। डैने के भीतरी सिरे कलछौंह और पेट का हिस्सा सफेद होता है, जिसमें सीने के आसपास छोटी आड़ी लकीरें होती हैं। बाकी नीचे का कुल हिस्सा भी आड़ी-आड़ी काली धारियों से भरा रहता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी और चोंच हरापन लिए पीली रहती है, जिसका सिरा नीलापन लिए काला रहता है। पैर पीले और पंजे काले होते हैं। शिकारी चिड़ियों की तरह इसकी भी चोंच तेज और आगे की ओर मुड़ी हुई रहती है जिसमें एक तेज दाँत सा रहता है।

शिकरे आदि की तरह, शौकीन लोग इसे भी पालते हैं और इसे सिखा कर इससे मैना, हुदहुद आदि चिड़ियों का शिकार कराते हैं।

तुरमुती जनवरी से मई के बीच किसी ऊँचे पेड़ पर अपना टहनियों का सुन्दर सा कटोरेनुमा घोंसला बनाती है जिसका भीतरी हिस्सा घास, बाल और परों से मुलायम कर दिया जाता है। घोंसला तैयार हो जाने पर मादा तीन चार अंडे देती है, जिनका रंग गुलाबीपन लिए सफेद होता है। इन अंडों पर भूरे और कत्थई रंग की चित्तियाँ सी पड़ी रहती हैं।

पु० नि० १०

बहरी

[Falcon]

बहरी कद में शिकरा से बडी और बाज से छोटी जरूर होती है—पर शिकार करने में यह दोनों से आगे ही रहती है। जिसने इनके जोडे को आसमान में उड़ती हुई बतखों को खदेड़ कर पकडते देखा है, वही इसकी तेजी का अंदाजा लगा सकते हैं। इसका भी नर शिकारी चिडियों की तरह मादा से छोटा करीब १६ इंच का होता है।

बहरी हमारे यहाँ की बारहमासी चिडिया है, जिसे न तो घना जंगल पसद है और न पहाड। यह खेतों के आस-पास के बागों में रह कर छोटी चिडियों पर अपना गुजर करती है।

बहरी की वैसे तो कई जातिया हैं लेकिन उनमें तुरमुती, लगर और खेरमुतिया बहुत प्रसिद्ध हैं। तुरमुती का वर्णन पहले दिया जा चुका है। लगर उससे कम प्रसिद्ध नहीं। इसके नर, मादा से छोटे होने पर भी शकल सूरत में एक जैसे होते हैं। इनके सर से लेकर दुम तक का ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है, और गर्दन और गाल से लेकर नीचे तक का हिस्सा सफेद, जिसमें आँख के ऊपर से लेकर गर्दन तक एक भौं की शकल को सफेद रेखा पड़ी रहती है। गाल और गर्दन की सफेदी के बीच में भी चोंच से लेकर आँख के नीचे होते हुई एक मूँछनुमा काली लकीर गर्दन तक चली जाती है। सीने से लेकर पेट तक छोटी छोटी कत्थई खडी लकीरें पडी रहती हैं। दुम भूरी होती है पर उसका सिरा सफेद रहता है।

बहरी

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच नीलापन लिए मिलेटी जिसका सिरा ललछौंह, पैर पीले
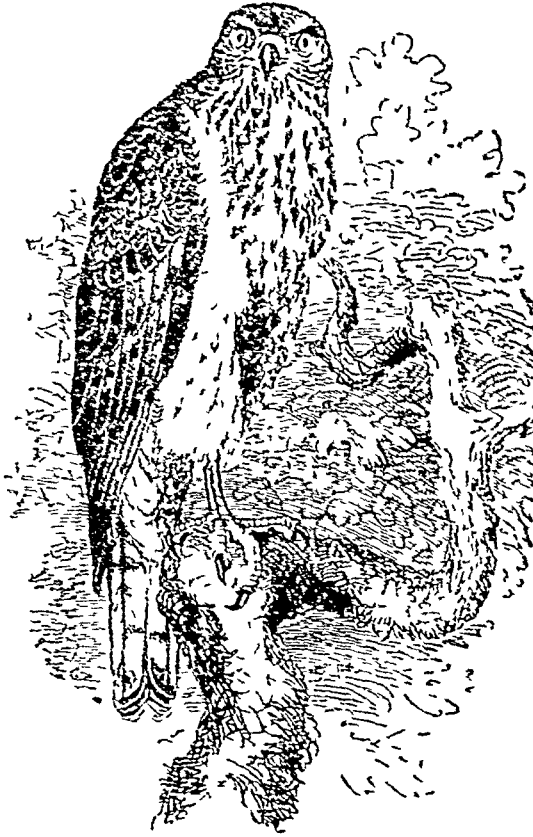
और पजे काले होते हैं। चोंच टेढ़ी और आगे की ओर झुकी हुई रहती है, जिसमे तुग्मुती की तरह एक दॉत रहता है। डैने बड़े और बहुत मजबूत होते है।

चिड़ियों मे बहरी यहाँ की पाली जाने वाली शिकारी चिड़ियों मे अपना एक विशेष स्थान रखती है। तीतर, बटेर ही नहीं कबूतर, हारिल आदि चिड़ियों को पकडना भी इसके लिए कुछ मुश्किल नहीं होता।

इसके अडा देने का समय जनवरी से अप्रैल तक रहता है जब यह अपना घोसला बनाती है। घोंसला बनाने मे यह बहुत ही लापरवाह चिड़िया है। ज्यादातर तो मादा लगर, गिद्ध और कौओ के पुराने घोंसले की मरम्मत करके, उसी मे अडे देती है।

इसके ३ से ५ तक अडे पाये जाते हैं, जो नाप मे एक जैसे हो कर भी रग मे अक्सर एक दूसरे से अलग रहते है। किसी का रग गुलाबी और किसी का बादामीपन लिए भूरा रहता है—जिन पर उसी रग की गहरी चित्तियाँ पडी रहती है।

खेरमुतिया लगर से कुछ छोटी होती है। हमारे देश मे यह जाड़ो मे काफी सख्या मे आकर फैल जाती है। इसे भी घने जगलों से खुले मैदान ज्यादा पसद आते हैं जहाँ इसको आकाश मे एक स्थान पर अक्सर मॅडराते देखा जा सकता है।

खेरमुतिया के नर का ऊपरी रग ईट जैसा लाल होता है जिसमे सर और गर्दन का बगली हिस्सा सिलेटी रहता है। पीठ पर काली काली तितरी बितरी चित्तियाँ पडी रहती हैं। दुम के सिरे पर एक सिलेटी धब्बा रहता है। डैने गाढ़ सिलेटी, दुम का ऊपरी हिस्सा सिलेटी और निचला हिस्सा सफेदी मायल रहता है। नीचे का हिस्सा हलका बादामी रहता है जिसमे सीने पर भूरी धारियाँ और चित्तियाँ रहती है। मादा का ऊपरी हिस्सा चटक ललछौंह भूरा रहता है जिसमे सर के पास और पीठ पर कलछौंह धारियाँ रहती है। दुम डैने और भूरे रहते हैं जिसके सिरे पर एक चौड़ी काली पट्टी रहती है। नीचे का हिस्सा नर जैसा होता है। इसकी ऑख की पुतली गाढ़ भूरी, चोंच काली और पैर नारंगी रग के होते है।

इसकी और सब आदते लगर से बहुत कुछ मिलती जुलती रहती हैं।

बाज़

[Goshawk]

बाज का नाम शिकारी चिड़ियों मे सब से आगे आता है क्योंकि शिकारियों द्वारा पाली जाने वाली चिडियो मे यह सब से बडा और बहादुर होता है ।

बाज

बाज की मादा 'जुर्रा' कहलाती है । अन्य शिकारी पक्षियों की तरह यह भी अपने नर से बडी होती है । बाज अगर बीस इच का हुआ तो जुर्रा चौबीस इच की होती है ।

बाज वैसे तो विदेश का पक्षी है लेकिन हमारे देश मे यह हिमालय के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पाया जाता है। इसे मैदान की ओर आना पसद नही । यहाँ तक कि तराइयो मे भी यह जाडे मे ही कभी-कभी दिखाई पडता है ।

बाज के शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा होता है जिसमे एक प्रकार की राखी झलक रहती है । इसके सर का पिछला हिस्सा और गरदन के दोनो बगल का हिस्सा वैसे तो हमेशा गहरे रग का रहता है लेकिन कभी कभी यह स्याही मे बदल जाता है । दुम का ऊपरी हिस्सा हलके भूरे रग का होता है जिसका सिरा सफेद रहता है । बदन का निचला हिस्सा भी सफेद रहता है जिसमे काली और भूरी लकीरे पडी रहती हैं ।

बाज को जगल मे रहना बहुत भाता है। वहाँ यह कबूतरो, तीतरो और जगली मुरगियो का शिकार करता रहता है। छोटे छोटे जानवर भी इसके चगुल से नही बच पाते।

इसके जोड़ा बाधने का समय मार्च से जून तक है, जब यह किसी ऊचे पेड़ पर टहनियो का भद्दा सा घोसला बनाता है। जुर्रा इसी मे तीन चार अडे देती है, जो वैसे तो सफेद होते है लेकिन कभी कभी उन पर चित्तियाँ भी पडी रहती है।

जुर्रा को शौकीन लोग अच्छे दामो पर खरीद कर पालते है और इनसे चिड़ियो का शिकार खेलाते हैं। सिखाए जाने पर ये भी शिकरे और बहरी की तरह अपने मालिक के लिए चिड़ियो और खरगोश आदि छोटे मोटे जानवरो का शिकार कर लेते हैं।

शिकरा

[Shikra]

शिकरा, शिकारी चिडियो मे हमारे यहाँ सब से प्रसिद्ध है। यह छोटे बाज की श्रेणी में आता है, पर इसका रग बाज से न मिलकर, पपीहे से ज्यादा मिलता है। अक्सर लोगों को इसके पहिचानने मे पपीहे का धोखा हो जाता है। यह शिकारी चिडियों मे सब से सुन्दर पक्षी कहा जा सकता है। सुन्दर ही नही बहादुरी मे भी यह किसी से पीछे नहीं रहता। सिखाए जाने पर यह अपने से चौगुनी चिडियो पर सफल आक्रमण कर देता है।

शिकरा

यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है। इसे घनी अमराइयों के आगे न तो घने जगल ही पसद हैं और न रेतीले मैदान ही। यदि यह पालने वाले शौकीनो के शौक का खुद शिकार न हो गया तो इसे हम दिन भर शिकार की तलाश मे इधर-उधर घूमते या किसी ऊँचे पेड़ की चोटी पर बैठा देख सकते हैं।

इसका नर अन्य शिकारी चिड़ियों की भाँति मादा से छोटा होता है। नर करीब १२ इच का और मादा करीब १४ इञ्च की होती है। नर का ऊपरी हिस्सा गहरे राख के रग का होता है जिसमे गले के चारोओर का रग पीला मायल रहता है। डैने भूरे-जिनके पीछे के हिस्से का सिरा काला और दुम भूरी होती है, इस पर कई गहरी भूरी आड़ी धारियाँ रहती हैं। बदन का निचला हिस्सा हलका बदामीपन लिए सफेद रहता है। इसमे सीने से पेट तक का रग ललछौंह रहता है, जिस पर आड़ी सिलेटी लकीरें पडी रहती हैं। मादा मे सिर्फ इतना फर्क होता है कि उसके ऊपरी हिस्से मे भूरापन रहता है और उसके सीने की ललाई नर से कुछ ज्यादा होती है।

इसकी आँख की पुतली नारगी पीली, चोंच कलछौंह नीली और पजे काले होते है। चोंच तेज, छोटी और आगे की ओर मुडी हुई रहती है।

शिकरा ज्यादातर छोटी छोटी चिड़ियां, छिपकलियों और चूहों से अपना पेट भरता है। सिखाये जाने पर यह तीतर आदि भी पकड लेता है। इसके पालने वाले शौकीनो से आज भी शायद कोई बड़ा गॉव खाली बचा हो।

शिकरा के अडे देने का समय अप्रैल से जून तक रहता है। जब यह किसी घने पेड़ पर सूखी-सूखी टहनियो से अपना तितरा-बितरा सा घोसला बनाता है। इसके ३ से ५ तक अडे पाए गए है जिनका रंग बहुत हलका नीलापन लिए सफेद होता है और जिनपर चित्ते कतई नही होते।

इसका बिरादरी एक और है जो इसका हमशकल भी है। इसका कद शिकरे के बराबर होते हुए भी इसकी टॉगे जरूर शिकरे से कुछ बडी होती है। बाकी बाते सब शिकरे की ही तरह होती हैं। इसके नर को बाशिन और मादा को बासा कहते हैं। यह ज्यादातर गौरैया का ही शिकार करता है और इसकी इस आदत से लोग इसे कभी कभी गौरहिवा शिकरा (Sparrow Hawk) के नाम से भी पुकारते हैं।
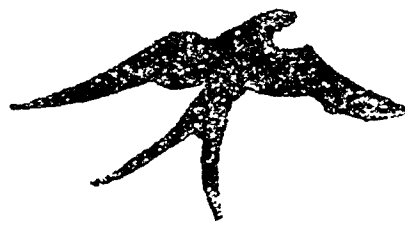
शिकार की चिड़ियाँ

शिकार की चिड़ियाँ

यदि वास्तव में देखा जावे तो शिकार की चिड़ियाँ (Game Birds) केवल फेज़ेन्ट-वंश के पक्षियों को ही माना जाता है, जिसमे फेज़ेण्ट (Pheasant) तीतर, लवा, बटेर और मोर, मुर्गियाँ आती हैं, पर अब इनका काफी विस्तार करके इनमें बत्तखे, सारस, चहा, भटतीतर, कबूतर और पड़कियों आदि को भी शामिल कर लिया गया है।

यहाँ इस अध्याय मे बत्तखो को छोड़कर बाक़ी शिकार की चिड़ियों मे से उन खास-खास दस पक्षियो का वर्णन दिया जा रहा है जो बहुत प्रसिद्ध होने के अलावा हमारे परिचित भी है। बत्तखों के लिए तालाबी चिड़ियों का एक अध्याय अलग ही कर दिया गया है।

शिकार की चिड़ियों के बारे मे कुछ मोटी-मोटी बातें जान लेना ज़रूरी है। उनमें नीचे की दो खासियतों का होना बहुत लाजिमी है।

पहले तो यह कि उनका गोश्त खाने मे स्वादिष्ट हो और दूसरे यह कि वे क़ाफी चुस्त चालाक और छिपने में उस्ताद हों और आसानी से मिल न जाया करें। उनके शिकार मे शिकारी को काफी दिक़्त और परेशानी उठानी पड़ा करे।

लेकिन बत्तखों के कारण अब इन नियमो को तोड़ दिया गया है ; क्योंकि वे इतनी अधिक सख्या मे हमारे यहाँ आने लगी है कि इनके शिकार का लोभ छोड़कर अब कोई भी शिकारी पहाडों मे जाकर फेजेन्टों के पीछे परेशान होना पसद नही करेगा। और यही वजह बाक़ी और पक्षियो के लिए भी हो सकती है जिनको अब शिकार के पक्षियों में शामिल कर लिया गया है।

कबूतर

[Pigeon]

शिकार की चिड़ियों मे शायद कबूतर सब से भोला पक्षी है। बड़ी-बड़ी पुरानी इमारतों मे—जहाँ इनके झुण्ड के झुण्ड रहते हैं—बन्दूक से मारे जाने पर भी ये वह स्थान छोड़ते नहीं। काशी आदि तीर्थ स्थानो मे जहाँ इनको मारने की मनाही है, ये कौओं और गौरैयों से भी ज्यादा ढीठ हो गए है। यहाँ इनकी पालतू जातियों का वर्णन न करके केवल जगली जाति का वर्णन दिया जा रहा है। क्योंकि आदते इन सब की एक जैसी होती हैं। पालतू कबूतरो में से मुख्य मुख्य के नाम अंत मे दिए गए है।

कबूतर हमारे देश के प्रायः सभी भागों मे पाया जाता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो देहातो और शहरों मे एक ही समान फैला हुआ है। इसके नर मादा का रग-रूप एक ही जैसा होता है।

कबूतर

इसके सारे शरीर का रग वैसे तो सिलेटी रहता है पर इसकी गर्दन पर चमकीले हरे पखों का एक कठा-सा रहता है जिसके नीचे फिर चारों ओर एक बैगनी पट्टी रहती है जो सूरज की किरण पड़ने से चमक उठती हैं। पीठ और डैनों का रंग कुछ गहरा होता है जिन पर दो तीन आड़ी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। दुम का सिरा काला रहता है जिसके दोनों बगल सफेद धारी रहती है।
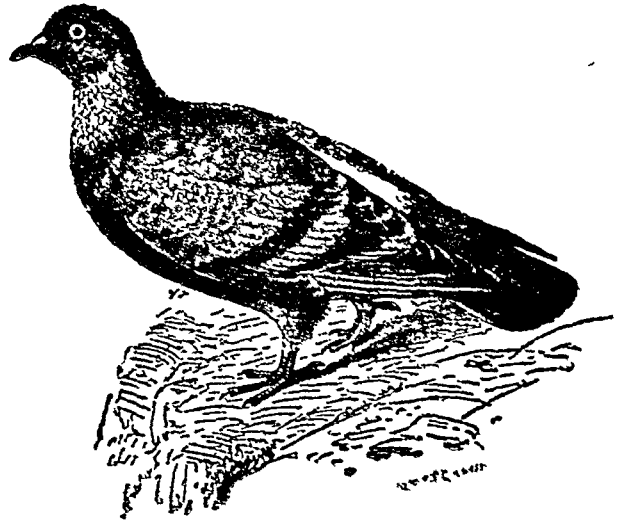
इसकी आँख की पुतली नारगी, चोंच सिरे पर काली, जड़ पर सफेद और पैर गहरे गुलाबी रहते हैं। कबूतर रात में भी पेड़ों में बसेरा न करके पुरानी इमारतों के अलावा कच्चे कुओं और ऊँचे कगारों की दराज में ही रहते हैं। यह प्रायः गोल में रहते हैं जिन्हे अक्सर खेतों मे दाने चुनते देखा जा सकता है। उड़ने में तो इनकी जल्दी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

इन्हें घोंसला बनाना शायद आता नहीं। नहीं तो मकान की कारनिसो, छज्जों, मिट्टी के टीलों और कच्चे कुओ के सूराखों में थोड़ा सा घासफूस लापरवाही से रखकर इनकी मादा अंडे न देती।

वैसे तो इनके अंडा देने का समय जनवरी से मई तक है पर साल मे दो बार अंडा देने के कारण इनके घोसलो में प्रायः सभी महीनो मे अडे मिल जाते हैं। अंडे रग में धुर सफेद होते हैं।

पालतू कबूतरो में कुछ तो उड़ान के या गिरहबाज कबूतर होते है और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हे उनकी सुंदरता के लिए पाला जाता है। इन सुदर कबूतरो मे चीना, मुक्खी, गोला आदि ऐसे है जो मामूली किस्म के सफेद या चित्तीदार कबूतर है और जिन्हे अक्सर पालनेवालो के यहाँ देखा जाता है लेकिन लक्का अपनी टेढ़ी गरदन और उठी हुई पूछ के कारण औरों से अलग ही रहता है। शीराजी कबूतर बहुत सुंदर होते हैं—इनका क़द भी बड़ा होता है। लोटन कबूतर हाथ में लेकर जमीन पर उलट कर छोड़ देने पर लोटता ही रहता है। लेकिन इन सब से आश्चर्य-जनक होते हैं उड़ान के कबूतर जिनके द्वारा आज भी लड़ाई मे ख़बरें भेजी जाती हैं। ये कबूतर सफेद भी होते हैं और जगली कबूतरों जैसे सिलेटी भी। लेकिन इनमे यह ख़ासियत होती है कि ये जहाँ पले रहते है उस जगह को दूर ले जा कर छोड़े जाने पर भी नही भूलते और सैकड़ो मील पर छोड़े जाने पर अपनी पुरानी जगह पर लौट आते है। वैसे भी इनको सवेरे उड़ा दिया जाता है तो ये इतने ऊपर जाकर आसमान में डूब जाते हैं कि दिखाई नही पड़ते और सारे दिन उड़ते रह कर कही जाकर शाम को नीचे उतरते हैं।
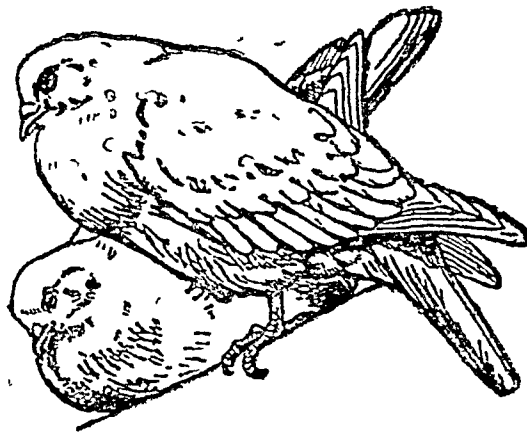
चहा

[Snipe]

चहा की वैसे ही बहुत किस्मे है, फिर हमारे यहाॅ इससे मिलती-जुलती अन्य कई चिडियों को भी चहा मे शामिल करके इनकी तादाद और भी बढा दी गई है, पर वास्तव मे पानी के किनारे रहने वाली मैना के बराबर की सभी चितकबरी चिडियाॅ चहा की बिरादरी की होकर भी चहा नही हैं।

चहा दिखाई ही कम देते है, फिर इनका शिकार तो और भी कठिन होता है। छिपने मे तीतर की तरह चालाक और भागने मे बटेर की तरह होशियार होने के कारण इन्हे—खास तौर पर इनके भाई-बन्धुओं से अलग करके—शिकार की चिड़ियों मे शामिल कर लिया गया है।
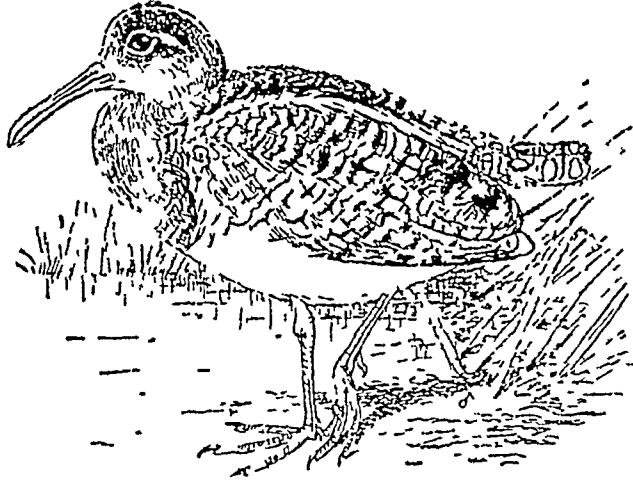
चहा यहाॅ बत्तखों की तरह जाड़ों में आने वाली मौसमी चिड़िया है। यह सितम्बर से आने लगती हैं और मई के शुरू होते-होते फिर उत्तर की ओर लौट जाती हैं। इनका मुख्य भोजन कीचड़ के कीडे हैं, जिसके लिए इसकी चोंच खास तौर पर लम्बी और आगे की ओर गोल बनाई गई है। इसके ऊपरी हिस्से मे निचला हिस्सा इस तरह डिबिया की तरह चिपक कर बैठता है कि जिससे कीचड़ तो छन कर निकल जावे पर छोटे छोटे कीडे चोंच के भीतर ही रह जावे।

चहा दस-ग्यारह इच का छोटा सा चितकबरा पक्षी है, जिसके नर और मादा एक रगरूप के होते है। इसकी पीठ काली, जिसमे सफेद पट्टियाॅ और जिसके पिछले हिस्से मे सफेद और काली आडी धारियाॅ रहती है। इसके डैने गाढे भूरे रग के होते है और उनमें भी सफेद धारियाॅ पडी रहती है। दुम काली, जिसका सिरा सफेद और सर काला और सफेद फाॅको में बॅटा हुआ होता है। नीचे का कुल हिस्सा सफेद होता है।

इसकी आॅख की पुतली गहरी भूरी चोंच लम्बी और कलछौंह भूरी तथा पैर गन्दे हरे होते है। आॅखें बड़ी और पीछे की ओर कुछ हट कर रहती है।

चहा के रहने का उपयुक्त स्थान कीचड़ से भरा हुआ छिछला किनारा है जिसके आस-पास तालाबी घास हो और जहाँ इसे खाने के अलावा छिपने की भी आसानी रहे।

आहट पाते ही ये पहले तो कतरी काटते हुए भागते है, फिर सीधे ऊपर की ओर उड़ते है और उसके बाद कुछ दूर जाकर हरियाली मे छिप कर बैठ जाते हैं। लेकिन दोपहर को उनमें यह तेज़ी नही रहती, तब यह सुस्त और आलस से भरे रहते हैं और ज्यादा खतरा देखने पर उस स्थान को छोड़ कर बहुत दूर निकल जाते है।

जैसा ऊपर बता आया हूँ चहा मौसमी पक्षी है, जो अंडा देने के समय हमारा देश छोड़ कर चला जाता है, पर काश्मीर के कुछ हिस्से ऐसे भी हैं जहाँ यह रह कर अडे देता है।

चहे का घोसला घास-फूस का बना हुआ एक छिछला प्याला जैसा होता है जो किसी दलदल के आसपास, घनी घास के बूटे मे रक्खा रहता है। मादा इसमें हलके हरे या बादामी रग के चार अडे देती है जिन पर भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

चहे की जात के एक पक्षी का वर्णन कर देना यहाँ अनुचित न होगा क्योकि अक्सर इसी को लोग चहा समझते है। इसका नाम है चुपका (Sand Piper)—यह भूरे रग की आठ इच की छोटी-सी चिडिया है जिसका उपरी हिस्सा भूरा और का सफेद रहता है। ऊपरी भूरा हिस्सा सफेद चित्तियो से भरा रहता है। चुपका के शरीर की बनावट वैसे तो चहे जैसी होती है लेकिन इसकी चोंच आगे की ओर गोल न होकर नोकीली ही रहती है। आँख की पुतली भूरी, पैर पिलछौह हरे और चोंच गंदे हरे रग की होती है।

चुपका हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है जिसे जाड़ों मे प्रायः सभी जलाशयों के किनारे देखा जा सकता है। इसे चहे की तरह कीचड़ की जगह नही पसद आती बल्कि यह ऐसी जगह से नदी के रेतीले किनारो को ज्यादा पसद करता है। नदी ही क्यों छोटे छोटे ताल-तलैयों के किनारे किनारे जाडे मे अक्सर चुपके अकेले घूमते दिखाई पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन किनारे के कीडे मकोडे आदि हैं जिनकी तलाश मे ये सारे दिन इधर उधर टहलते ही रहते हैं। वैसे ये काफी ढीठ होते हैं लेकिन पास जाने पर एक प्रकार की ची-चीं-चीं की आवाज करके जमीन से थोड़ी ही उँचान पर उड़ कर फिर हवा मे लहरा कर किनारे पर उतर पड़ते हैं।

जंगली मुरगी

[Jungle Fowl]

जंगली मुरगी के रंग-रूप के वर्णन की ज़्यादा जरूरत नहीं। यह ठीक हमारे यहाँ की देसी पालतू मुर्गियों की तरह होती है। इनकी दो मुख्य जाति हैं—लाल और भूरी। भूरी (Grey Jungle Fowl) जिसका नाम कुमरी है, दक्षिण भारत की ओर पाई जाती है। हमारे यहाँ के जगलों में तो इनकी लाल जाति (Red Jungle Fowl) की मुर्गियाँ ही मिलती हैं। लाल जंगली मुर्गी के नर के वैसी ही लाल कघीनुमा मास की चोटी, या खेस, गले के नीचे भी मास की वैसे ही लाल थैली और गर्दन के लम्बे पर उसी तरह पीलापन लिए सफेद होते हैं जैसे पालतू मुर्गों के। बाकी हिस्सा कत्थई काला और चितकबरा रहता है। दुम के ऊपर के पर लम्बे और टेढे होते हैं।

भूरी जगली मुरगी
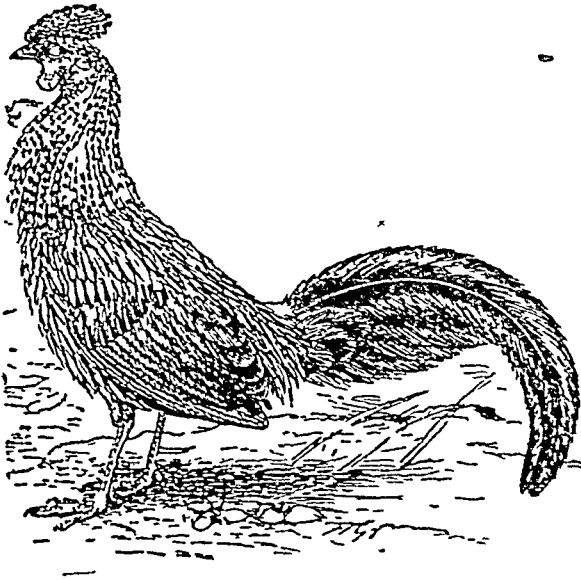
मादा तो करीब करीब चितकबरी ही होती है। जहाँ नर मय दुम के दो फीट का होता है, यह १॥ ही फीट की होती है। इसके नर की तरह न बड़ी लाल चोटी होती है और न गले के नीचे का बढा हुआ लाल गोश्त ही। पर इसके आँख के चारो ओर की खाल लाल होती है और सर के ऊपर छोटी सी बालों से मिली हुई चोटी रहती है।

नर के पैरों मे कुछ ऊपर एक अंगूठा या खार होता है, जो प्रायः तीतर आदि सभी शिकार की और लड़ने वाली चिडियों के होता है।

इनकी आँख की पुतली ललछौंह नारगी, चोंच गाढ़ी भूरी या कत्थई और पैर सिलेटी होते हैं।

यह भी यहाँ की बारहमासी शिकार की चिड़िया है जो साल वगैरह के घने जगलों में काफी सख्या में पाई जाती है। दिन को यह ज्यादातर झाडिओं में घुसी रहती है पर शाम और सबेरे इसका

जोड़ा या इसका गरोह मैदानों मे खाने पीने की तलाश मे निकलता है। इनकी खूराक दाने से लेकर छोटे-छोटे कीडे-मकोडे तक है जिनकी जंगल के मैदानो में कमी नही रहती।

इनकी और सब आदत पालतू मुर्गियों से एक दम मिलती जुलती होती है। यहाँ तक कि अंडे देने मे भी यह इन्ही की तरह समय की पाबन्द नही है। अक्टूबर से नवम्बर और फरवरी से मई के बीच इनके अंडे मिल सकते है।

इनका घोसला मामूली सा होता है जो किसी झाड़ी मे जमीन के छिछले गड्ढे मे घास-फूस रख कर बना लिया जाता है। मादा इसमें पॉच सात अडे देती है जिनका रंग बादामी होता है।

भूरी जगली मुरगी हमारे देश के दक्खिन भागो मे रहने वाली चिड़िया है जिसे पहाड़ के ढाल बहुत पसद आते हैं। इसकी शकल सूरत और रग-रूप भी पालतू मुरगियो की तरह होता है।

ये मुरगियाॅ बहुत ही शरमीली होती हैं और जरा सा आहट पाने पर झाड़ियो के नीचे छिप जाती हैं। इनकी चराई का समय सुबह और शाम है। जब ये अकेली या जोड़े मे उसी एक ही जगह पर रोज निश्चित समय पर दिखाई पड़ती हैं। ये पेडों पर बसेरा लेती हैं और खतरे की आहट पाने पर पहले तो छिपने की कोशिश करती हे फिर बाद को पेड़ो पर जा बैठती हैं। इनकी बाकी आदते लाल जगली मुरगियों की तरह होती है।

तीतर

[Partridge]

तीतर को हम लोगो ने शिकार की चिडिया से ज्यादा पालतू चिडिया की शकल मे देखा होगा। कोई गॉव शायद ही बचा हो जहॉ तीतर पालने के शौकीन न मिल जावे। इसकी बोली और इसकी लडने की आदत के अलावा एक बात जो पालने वाला को और पसद आती है वह यह कि पालतू हो जाने पर यह अपने मालिक के पीछे-पीछे कुत्ते की तरह फिरा करता है।
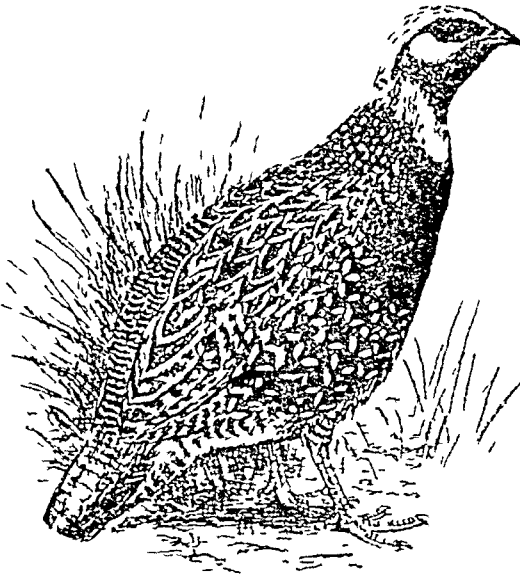
काला तीतर

तीतर हमारे यहॉ का बारहमासी पक्षी है जिसे घने जंगलों से झाडियों से घिरा हुआ मैदान ज्यादा पसद है। कछार और सरपत के बूटो मे इसे खोज कर निराश न होना पडेगा। यह उड़ता बहुत कम है पर आदमी की आहट पाते ही इधर उधर तेजी से दौड़ कर फौरन झाडी मे छिप जाता है। यदि उडना ही पड़ा तो एक भन्नाहट की आवाज से उड कर यह थोडी ही दूर पर फिर जमीन पर उतर पडता है।

इसके नर और मादा एक शकल के होते हैं। फर्क सिर्फ इतना रहता है कि नर के पजो के ऊपर मुर्गे की तरह टॉग में एक कॉटा या खार रहता है जिसे यह लडने के समय इस्तेमाल करता है। कद मे यह १०-११ इच से बडा नहीं होता।

इसका ऊपरी हिस्सा भूरा और नीचे का हिस्सा हलका बादामी रहता है। सर और गर्दन को छोड कर बाकी सारे ऊपरी हिस्से मे सफेद और निचले हिस्से मे गहरी भूरी धारियॉ और चिह्न पडे रहते हैं। भूरी गर्दन में माथा, गाल और ऑख के उपर की रेखा ललछौंह और गला हलके कत्थई रग का रहता है। ऑख की पुतली भूरी, चोंच गाढ सिलेटी और पैर लाल होते है।

तीतर का मुख्य भोजन दीमक और अन्य कीडे-मकोडे है पर वैसे यह दाना भी खूब चुन लेता है।

इसे घोंसला बनाने का झझट पसद नही। चूँकि इसके मटमैले रंग के कारण इसे जमीन पर जल्दी नहीं देखा जा सकता इसलिए इसका फायदा उठाकर इसकी मादा किसी झाडी के छिछले गड्ढे

मे थोड़ा घास फूस रख कर जमीन में ही ६ से ६ तक अडे देती है। ये अडे रग में हलके बादामी होते है।

वैसे तो इनके अडा देने का समय फरवरी से जून तक है पर इनमे से कुछ सितम्बर अक्टूबर मे दूसरी बार भी अडे देती है।

तीतर की एक और जाति है जो हमारे यहाँ के नदी के खादड़ो और कछारो मे पाई जाती है। इसे इसकी बोली के कारण 'सुभान तेरी कुदरत' और रग के कारण काला तीतर कहते है। इसकी और सब आदते भूरे तीतर की तरह होती है। पर सुदरता मे यह उससे कहीं आगे रहता है।

इसके नर का ऊपरी हिस्सा काला जिस पर सफेद सीधी आडी धारियाँ और चित्ते, गले मे कत्थई कंठा, सीना काला और निचला हिस्सा गहरा भूरा जिसमे सफेद धारियाँ रहती हैं। डैने कत्थई होते है और इसकी आँख के नीचे एक सफेद चित्ता रहता है। मादा का ऊपरी हिस्सा नर जैसा होता है पर वहाँ काले की जगह गहरा कत्थई ले लेता है। गले का कत्थई कठा भूरे में और निचला हिस्सा बादामी मे बदल जाता है।

यह जितना अधिक सुदर होता है उतना ही कम पाया जाता है। हालाँकि इसकी तेज आवाज से इसकी मौजूदगी छिपती नहीं।

फ़ाख़ता

[Doves]

मैना की तरह फाखता या पडकी की भी कई जातियाँ हैं जो प्राय: सभी फाखता या पडकी कहलाती है। यहाँ उनमे से पॉच का वर्णन दिया जाता है जिनके नाम ये है :—

१—काल्हक फाखता (Turtle Dove)
२—चितरोखा फाखता (Spotted Dove)
३—धवर फाखता (Ring Dove)
४—पडकी या टुटरूँ फाखता (Brown Dove)
५—इटकोहरी या सिरोटी फाखता (Red Turtle Dove)

फाखता, तीतर या बटेर से भले ही अलग कहे जावे पर इनका और कबूतरों का रिश्ता बहुत नज़दीक का है। इनकी शकल-सूरत और आदत भी कबूतरों से मिलती-जुलती होती है क्योकि ये उसी जाति के पक्षी है।

यह अपने भोलेपन और सिधाई के लिए कबूतरा की तरह प्रसिद्ध है जिसके शिकार मे जरा भी परेशानी नही उठानी पडती। खेत के आसपास के बबूल के दरख्तो से ज्यादा आसान जगह इसके तलाशने के लिए दूसरी नही है, जहाॅ यह अक्सर अपना घोसला भी बनाता है।
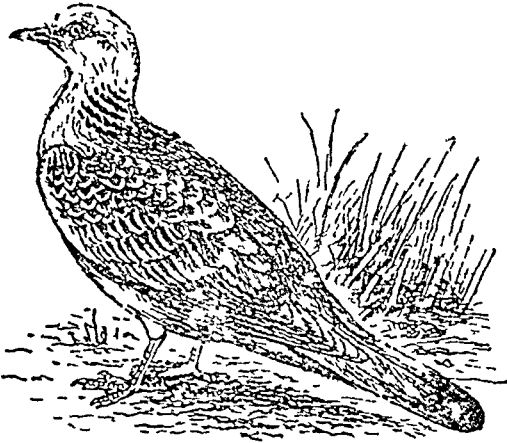
काल्हक

इनकी अलग-अलग जातियो के बारे मे भले ही परिचय की जरूरत हो पर वैसे इसको पहिचानने के लिए हममे से शायद ही किसी को इसके वर्णन की जरूरत पडे क्योकि इसे हम बराबर देखते ही रहते हैं।

फाखता हमारे यहाॅ की बारहमासी चिड़िया है जिसका कद करीब करीब मैना के बराबर होता है और जो खेतों मे गिरे हुए दाने बिन कर अपना पेट भरता है और शायद इसी से इसका दूसरा नाम "बिनता" पडा है।

इटकोहरी को छोड़ कर बाकी चारों जातियों के नर और मादा एक शकल के होते हैं और आदत में तो इन पाॅचों मे किसी प्रकार का भेद नहीं होता।

अब क्रम से एक एक के रग-रूप का वर्णन दिया जा रहा है।

काल्हक फ़ाखता सब से बड़ा होता है। यह कबूतर के कद का सुदर पक्षी है जिसका सर, गर्दन और ऊपरी हिस्सा ललछौह भूरा और निचला हिस्सा हल्का कत्थई रहता है। गर्दन के दोनो ओर काली काली चित्तियाँ रहती हैं और डैनों पर सेहर से निशान पडे रहते हैं। दुम भूरी होती है जिसका सिरा गाढ कत्थई रहता है।

इसकी आँख की पुतली नारंगी, चोंच भूरी, पैर और पजे लाल होते हे। अडे सफेद रग के होते हे।

चितरोखा

काल्हक के बाद चितरोखा का नम्बर आता है। यह कद मे तो काल्हक से कुछ छोटा होता है पर सुन्दरता मे उससे आगे ही रहता है।

इसका सर ललछौह सिलेटी, गर्दन के ऊपरी हिस्से से पीठ तक का हिस्सा काला जिसमे सफेद बिन्दियाँ उसके बाद भूरा जिस पर हलकी कत्थई और काली चित्तियाँ और लकीरे रहती हैं। डैने भूरे और दुम के बीच का हिस्सा भी भूरा, जिसके दोनो किनारे काले और सफेद होते हे। इसका गला और दुम के नीचे का हिस्सा सफेद होता है और उसके बीच का तमाम निचला हिस्सा ललछौंह कत्थई रहता है।

आँख की पुतली हलकी भूरी जिसके चारो ओर ललाई, चोंच गन्दी काली और पैर हलका बैगनीपन लिए लाल होते है। इसके अडे भी सफेद होते हैं।

धवर चितरोखा के बराबर ही होता है पर इसका रग चित्तेदार न हो कर सुन्दर राख के रग का होता है। इसके सर के रग में बहुत हलका फालसई रग मिला रहता है और गर्दन के ऊपरी हिस्से पर सफेद और काली धारी का एक कठा सा रहता है। पीठ का रग हलका भूरा लिए हुए हलका सिलेटी रहता है और डैने के सिरे और दुम के बीच का हिस्सा गहरा भूरा होता है। दुम के किनारे चितरोखा की तरह काले और सफेद रहते हैं। निचला तमाम हिस्सा हलके सिलेटी या राख के रग का रहता है जिसमे बहुत हलका फालसई रग मिला रहता है।

धवर
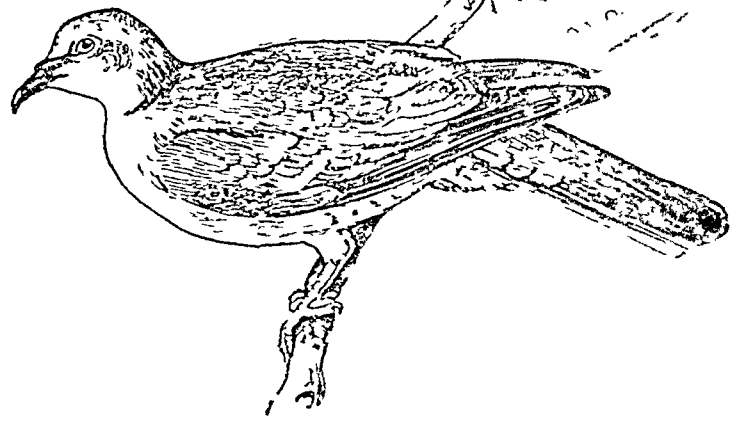
इसकी आँख की पुतली लाल, चोंच काली और पैर गाढ़ गुलाबी रहते हैं। अंडे चितरोखा के बराबर और उसी रंग के होते हैं।

पडकी (टुटरूँ फाखता) इन तीनों से छोटी होती है। ज्यादा से ज्यादा इसका कद ८-६ इंच का होता है। यह चितरोखा और धवर की बीच की चिड़िया जान पड़ती है। इसका सर, गर्दन और सीना हलका फालसई लिए ललछौंह होता है। गर्दन के दोनो ओर कालहक की तरह काली पट्टियाँ होती हैं जो सफेद बिन्दियों से भरी रहती हैं। ऊपरी हिस्से में हलकी सिलेटी पट्टियाँ पडी रहती हैं जिसका सिरा कत्थई रहता है। दुम भूरी जिसके किनारे काले और सफेद होते हैं। इसके सीने के नीचे पेट से लेकर दुम तक का निचला हिस्सा सफेद रहता है। आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली और पैर गुलाबी रहते हैं।
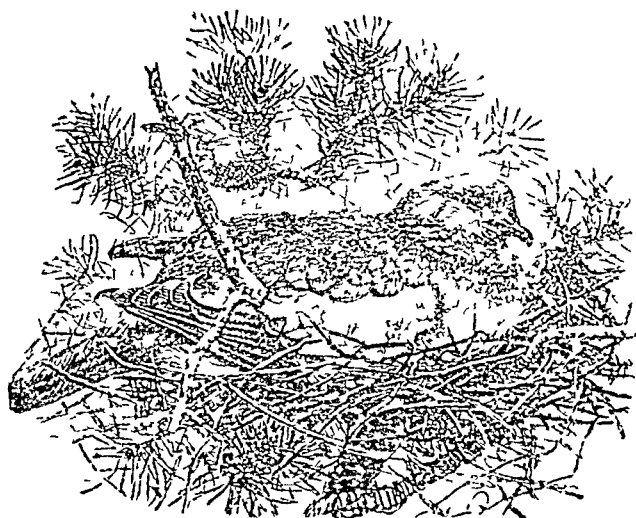
पडकी या टुटरूँ फाखता

अंडे इनके भी सफेद ही होते हैं जो नाप में कुछ छोटे होते हैं।

पाँचवीं और आखिरी फाखता इटकोहरी या सिराटी फाखता है। यह सब से छोटी पडकी हैं जिसके नर मादा का रंग अलग-अलग होता है। ईंट के रंग की होने के कारण इसका नाम 'ईंटकोहरी' पड़ गया है। नर के सर का रंग सिलेटी, गर्दन पर धवर की तरह काला कंठा उसके बाद का ऊपरी हिस्सा ईंट के रंग का और डैने के सिरे कत्थई रंग के होते हैं। दुम की जड़ सिलेटी और बीच का हिस्सा भूरा रहता है। इसके किनारे काले और सफेद रहते हैं। इसके नीचे का हिस्सा भी ईंट के रंग का होता है पर दुम के नीचे पहुँच कर यह सफेदी में बदल जाता है।

मादा का ऊपरी हिस्सा राख के रंग का भूरा, सर, डैने और दुम नर की तरह पर निचला हिस्सा हलका भूरा होता है।

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली और पैर हलके होते हैं। अंडे का रंग अन्य पडकियों की तरह सफेद होता है।

फाखता के अंडा देने का समय पूरे साल भर रहता है। यह साल में दो बार अंडे देती है पर एक मर्तबा में इनके ज्यादातर दो ही अंडे पाए जाते हैं।
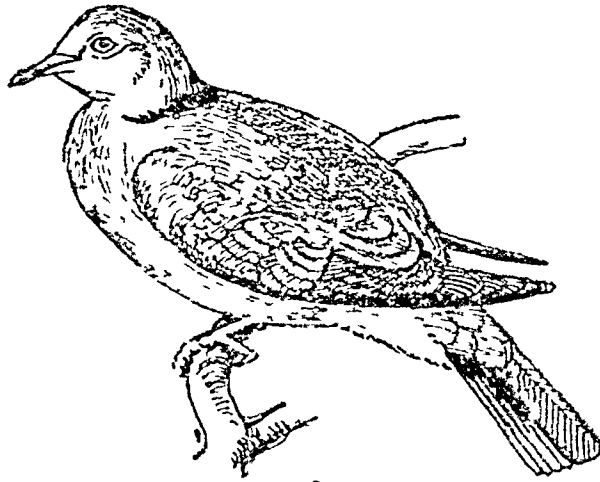
टूटकोहरी

इनके घोंसले को घोंसला न कह कर मचान कहें तो ज्यादा ठीक होगा। किसी दोफकी डाल पर यह दस बीस सीधी आड़ी टहनियाँ रख देती है जिस पर मादा अंडे देकर खुला ही छोड़ देती है। अंडे ऊपर से ही नहीं पेड़ के नीचे से भी साफ दिखाई पड़ते रहते हैं।

बटेर

[Quails]

बटेर को तीतर का छोटा भाई कहना ही ज्यादा मुनासिब होगा। शकल सूरत ही नहीं रहन-सहन और आदत मे भी यह तीतरो से मिलते जुलते है। इनकी वैसे तो कई जाते है पर हमारे यहाँ दो ही खासतौर पर आती है। बडे—घाघस बटेर (Common Quail) और छोटे—चिनिग बटेर (Rain Quail)।

घाघस बटेर

घाघस मौसमी बटेर हैं जो यहाँ जाडे के शुरू होते-होते उत्तर पश्चिम से आ जाते हैं और दक्षिण भारत की ओर बढते जाते हैं। जाडा खतम होते ही ये फिर दक्षिण से लौटने लगते हैं और खेत कटने के साथ ही साथ हमारे प्रान्त को छोड कर फिर उत्तर पश्चिम की ओर चले जाते है। वापस होते समय इनका खूब शिकार होता है। खेत के खेत हाँक दिए जाते हैं और शिकारी लोग या तो इन्हे बन्दूक से मार लेते हैं या जिन्दा ही जाल मे फँसा लेते है।

इसके नर और मादा मे फ़र्क रहता जरूर है पर बहुत ही थोडा। नर के सर पर काली या कत्थई धारियाँ और दोनों आँखों के ऊपर और बीच सर मे बादामी खडी धारी रहती है। ऊपर का रग भूरा होता है जिसपर सफेद और कत्थई खडे चिह्न रहते हैं। डैने भूरे होते हैं जिनमे पहला पख छोड कर बाकी में ललछौंह पटरियाँ पड़ी रहती हैं। दुम गाढ कत्थई रहती है जिसमे बादामी लकीरे होती हैं और गला सफेद रहता है जिसमे नर के लगरनुमा काला चिह्न रहता है। इनका सीना ललछौंह बादामी रहता है जिसमे हलके

रंग की धारियाँ रहती हैं। मादा के गले पर लंगरनुमा काला चिह्न नहीं रहता पर उसके बजाय उसके सीने पर काली चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

इनकी आँख की पुतली हलकी बादामी, चोंच सिलेटी भूरी और पैर पीले होते है।

बटेर ८ इंच की छोटी-सी गोल चिड़िया है जो तीतर की तरह उड़ने से कही ज्यादा, भागकर झाड़ियों में दबकना पसन्द करती है। मजबूर होकर जब इसे उड़ना ही पड़ता है तो यह किसी ओर जाने से पहिले सीधी आसमान की ओर उड़ती है।

यह दाना भी चुन लेती है और कीड़े-मकोड़े से भी परहेज नहीं करती। अन्य शिकार की चिड़ियों में से इसमे एक कमी यही है कि इसकी टाग मे लड़ने के लिए खार नही होते लेकिन इसके यह माने नहीं है कि यह लड़ना नहीं जानती। इसके पालने वाले और लड़ाने वाले शौकीन, तीतरों से कही ज़्यादा इसकी लड़ाई मे तबाह हो चुके हैं। लखनऊ मे तो इसकी लड़ाई पर सैकड़ो की बाजियाँ लग जाती हैं।

चिनिग बटेर

दूसरा चिनिंग बटेर घाघस से कुछ छोटा होता है। रंग-रूप मे भी इसमे मोटा मोटा फर्क यही है कि इसके डैने भूरे और सादे होते हैं पर इसका सीना काले रग का होता है।

यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो जरूरत पड़ने पर थोड़ा बहुत स्थान परिवर्तन ज़रूर कर लेता है पर अपना देश छोड़कर जाता कहीं नहीं।

इसकी बाकी और सब आदते घाघस से मिलती है। कुछ लोगों का तो यह भी ख्याल है कि शिकारियो से जो घाघस बटेर घायल होकर यही रह गए हैं उन्ही से इन चिनिंग बटेरों की नस्ल चली है जो अब यहाँ के बारहमासी पक्षी हो गए है।

घाघस तो अपने अंडे तिब्बत या काश्मीर की तराई मे जाकर देता है पर चिनिंग की मादा बरसात मे यही किसी झाड़ी या खुले मैदान मे ४ से ६ तक अडे देती है। अडे देने के लिए जमीन में ही गहरा गड्ढा बनाया जाता है क्योंकि यह पक्षी पेड़ पर कभी बैठता ही नही। फिर इस गड्ढे में घास फूस का अस्तर दे दिया जाता है जिससे यह नरम रहे।

इसके अडे रंग में हलके पीले से लेकर गहरे बादामी तक होते हैं जिनपर काली बैगनी और भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।
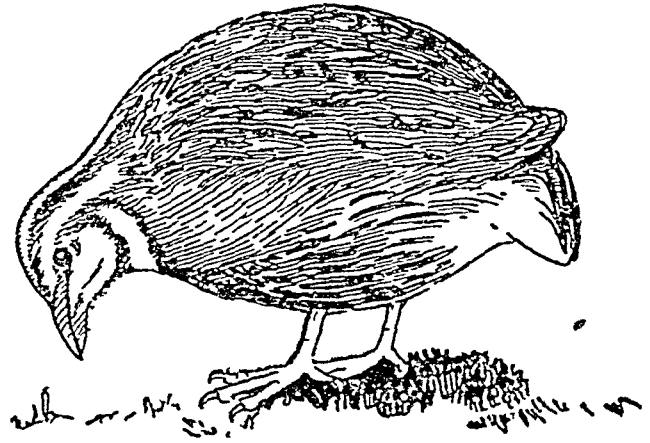
भटतीतर

[Sand Grouse]

भटतीतर की वैसे तो कई जातियाँ हैं पर रहन-सहन और आदतें एक जैसी होने के कारण दो का ही वर्णन इनको जानने के लिए काफी होगा।

भटतीतर को हम तीतर और फाखता के बीच की चिड़िया कह सकते हैं। यह एकदम जमीन पर रहने वाला पक्षी है जो बीस पच्चीस के झुण्ड में रहता है। जमीन पर बैठे रहने से ये खुद तो जल्दी दिखाई नहीं पड़ते पर एकदम मैदान मे बैठे रहने के कारण ये शिकारियों को दूर ही से देख कर उड जाते हैं। इससे उड़ते समय ही इनका अच्छा शिकार हो सकता है।
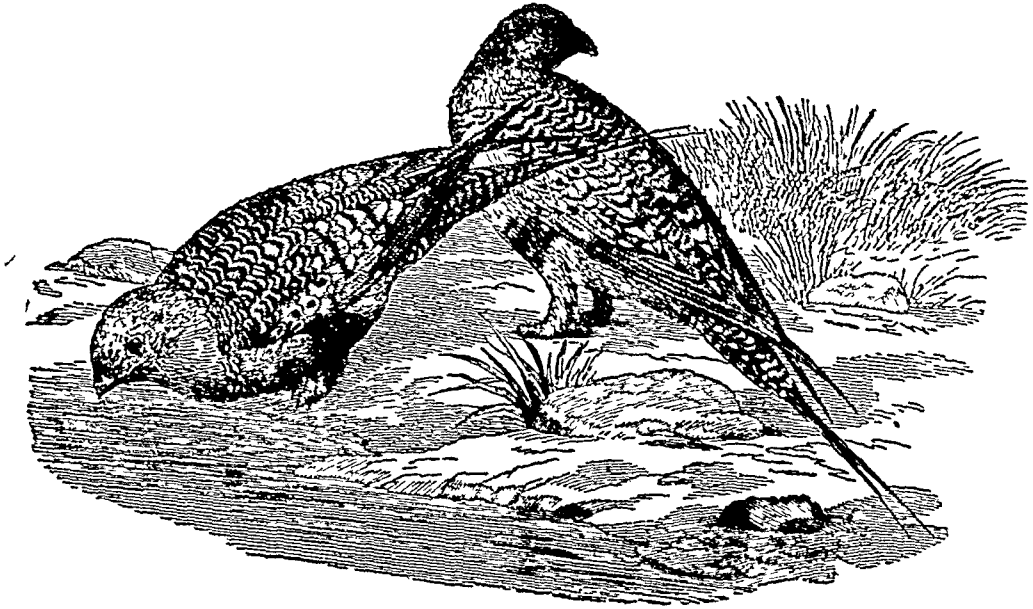
भटतीतर

भटतीतर यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जिन्हे सुनसान मैदानो में गोल बाँधकर दाना चुनते हुए अक्सर देखा जा सकता है। इसे न नमी की जगह पसन्द है और न घने जंगल। सूखे रेतीले या पहाड़ी मैदान ही इसके रहने के उत्तम स्थान हैं।

इसके नर मादा के रङ्ग में कुछ फर्क रहता है। नर १८ इंच का बालू के रङ्ग का होता है जिसमें इसकी लम्बी दुम भी शामिल रहती है। दुम तो वैसे ज्यादा लम्बी नही होती पर उसके बीच के दो पतले पर 'पतेना' की तरह बढे हुए होते हैं। मादा की दुम नर से कुछ छोटी होती है। नर के ऊपरी हिस्से का रंग हलका सिलेटीपन लिए बादामी रहता है और उसकी पीठ पर कुछ आड़ी-आड़ी कत्थई धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम और डैने का बाहरी हिस्सा गहरा भूरा होता है। इसका गला हलका पीला और सीना ललछौंह बादामी रहता है जिसे काली आड़ीरेखा पेट से अलग किए रहती है। पेट कत्थई और दुम के नीचे फिर बादामी रहता है।

मादा ज्यादा चितकबरी होती है। उसका सारा बदन बादामी रंग का होता है जिसमें सर, पीठ डैने और तमाम निचले हिस्से मे काले सेहर से बने रहते हैं। पेट में एक आड़ी पट्टी जरूर बिना किसी चिह्न के छूट जाती है। इसकी कनपटी और गले के निचले हिस्से में चित्ते नही रहते।

आँख की पुतली गहरी भूरी, आँख के कोर पीले और चोच तथा पैर सिलेटी रग के होते है।

ये अपने गोल के साथ मैदान में ही बसेरा करते हैं पर पहरे के लिए उसमे से कुछ पारी पारी से जगते रहते है—नहीं तो स्यार और लोमड़ियाँ इन्हे चट न कर जायँ।

मादा भटतीतर अडे भी जमीन के छिछले गड्ढे में देती है, जिसे थोड़ी घास फूस रख कर मुलायम कर लिया जाता है।

इनके अडे अक्सर अप्रैल मे मिलते है जिनकी संख्या दो तीन से ज्यादा नहीं होती। इनका रंग हलका गेहुँआ या बादामी होता है जिनपर भूरे और बैगनी रंग की चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

बड़ा भटतीतर कद में कुछ बड़ा होता है। यह देखने मे बहुत सुंदर पत्नी है जिसके नर का रग मादा का रंग चितकबरा रहता है। नर के गले का रंग गाढ़ भूरा रहता है। इनके पेट का निचला हिस्सा काला रहता है जिसके ऊपर एक सफेद पट्टी रहती है। इनकी पीठ पर पीले चिन्ह भी रहते हैं।
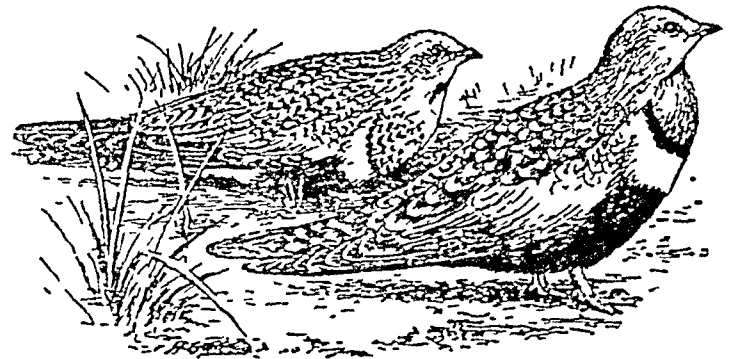
बड़ा भटतीतर

यह यहाँ का मौसमी भटतीतर है जो जाड़ों के शुरू मे यहाँ आकर जाडे के अन्त होते-होते लौट जाता है। इसकी और सब आदते अन्य भटतीतरों से मिलती-जुलती होती हैं।

मोर

[Pea-Fowl]

मोर को शिकार की चिड़ियों के साथ रखने में ज़्यादती जरूर है पर शिकार की चिड़ियों के सभी गुण होने के कारण मजबूरन इस सुन्दर पक्षी को इन्ही के साथ रखना पड़ रहा है।

मोर हमारे यहाँ के सबसे सुन्दर पक्षियों में से एक है। जैसा राजसी रग इसने पाया है वैसा तो यहाँ के और किसी मैदान के पक्षी ने पाया ही नही। लम्बी सतरङ्गी दुम और नीले मखमल सी गर्दन वाला यह पक्षी हमारे बागों की शोभा को दुगुनी कर देता है। बरसात आई नहीं कि मोर घनी छाया के नीचे अक्सर कुछ मोरनियों के बीच में नाचता दिखाई पड़ने लगता है। नाचते समय इसके दुम के ऊपर के लम्बे पर दुम के ऊपर गोलाकार खड़े हो जाते है जिससे यह पक्षी और भी भडकीला दिखाई देने लगता है।

मोर

इसका नर जितना सुन्दर होता है मादा उतनी ही भद्दी होती है। नर, मादा से कुछ बड़ा भी होता है। यह बिना लम्बी दुम के ४०, ४५ इच का होता है पर दुम को शामिल करके इसकी लम्बाई ८० से ६० इच तक की हो जाती है। मादा ३८ इंच से ज्यादा की नही होती।
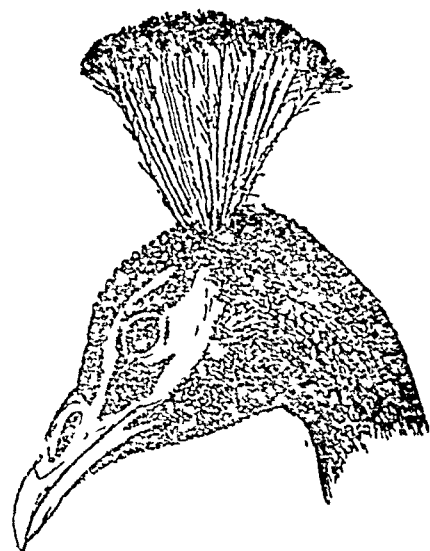
नर के सर के छोटे, हरे और नीले पख घुंघराले होते है जिस पर एक सुन्दर कॅलगी रहती है। इस कॅलगी के सिरे पर हरे और नीले चमकीले रोएँ रहते हैं। गर्दन गाढ चमकीली नीली, ऊपरी हिस्सा सिलेटी लिए हरा जिस पर काले सेहर से बने रहते हैं। दुम ऊपर गहरी भूरी और सीने से लेकर नीचे का कुल रङ्ग चमकीला हरा रहता है। दुम के ऊपर के लम्बे पर जिन्हे दुम ही कहते है काफी बडे और बहुत सुन्दर हो जाते है। ये सिरे पर जाकर गोल होते है जिनमें एक गोले मे गाढ़ नीला रङ्ग और एक सुन्दर अर्धचन्द्राकार चिह्न रहता है।

मादा या कोदैली भूरे रङ्ग की होती है। इसकी चोटी नर की तरह होती है पर इसका ऊपरी हिस्सा भूरा, नीचे गला हरा और निचला हिस्सा बादामीपन लिए सफेद रहता है। कुछ हिस्सा चमकीला हरा भी रहता है। इसके नर की तरह लम्बी पूँछ नहीं होती।

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच भूरापन लिए सींग के रङ्ग के और पैर सिलेटी भूरे रहते हैं।

मोर हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो घने जंगलों में पानी के आस-पास रहता है। आदमी को देखते ही यह अपना बड़ा शरीर छिपाने के लिए झाड़ियों में दबक जाता है। उड़ने में जैसे इसे तकलीफ होती है लेकिन रात को यह पेड़ पर ही सोता है।

मोर बहुत जल्द पालतू हो जाने वाला पक्षी है। इसे हिन्दू लोग धार्मिक विचार से बहुत कम मारते है। धर्म ही नहीं इसकी सुन्दरता भी इसे मारने के लिए किसी को उत्साहित नहीं करेगी।

इसकी खूराक में खेतों में गिरे हुए दानों के अलावा कीड़े पतिंगे और छिपकलियो से लेकर छोटे-छोटे साँप तक आ जाते हैं।

मोर में ख़ास बात यह होती है कि यह और चिड़ियो की भाँति जोड़ा नही बाँधता बल्कि एक नर के साथ कई मोरनियां रहती है। नर घोसला बनाने या अंडा सेने में इनका हाथ नही बँटाता। मादा भी अक्सर घोंसला नहीं बनाती बल्कि जून से अगस्त के बीच मे किसी झाड़ी में जमीन पर घास फूस रख कर ५-७ अडे देती है। अंडों का रंग हलका बादामी या कुछ सुर्खी मायल मटमैला रहता है।

लवा

[Bush Quails]

लवा शिकारी चिड़ियों में सबसे छोटी है जिनका यहाँ वर्णन किया जा रहा है। इनकी वैसे तो चार पाँच जातियाँ है पर यहाँ हमारे देश मे अधिक सख्या मे पाई जाने वाली जाति के बारे में लिखा जा रहा है।

इन्हें छोटे-बटेर से ज्यादा छोटे-तीतर कहे तो ज्यादा ठीक होगा। क्योंकि शकल सूरत में ये उन्हीं से ज्यादा मिलते है। कद में ये छ: इंच से ज्यादा बडे नहीं होते।

लवा

लवा खेत के आस-पास की घास या सरपत के बूटों मे रहते है। ये १०—१२ के गरोह मे निकलते हैं पर आहट पाने पर फौरन ही छिप जाते हैं।

इनके नर मादा के रग मे थोड़ा फर्क रहता है। वैसे दोनो भूरे रङ्ग के होते हैं और नीचे के हिस्से मे छोटी-छोटी काली बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं। पर, नर के सर पर की सफेद और काली धारियों में कुछ फर्क रहता है।
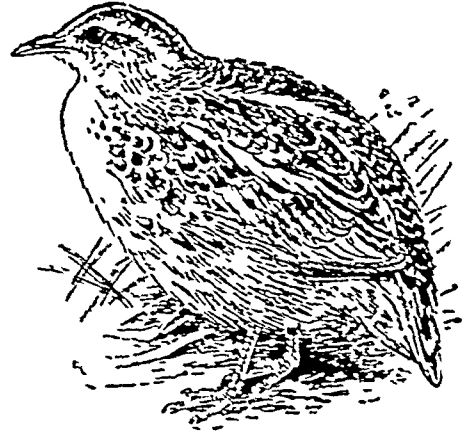
नर का ऊपरी हिस्सा भूरा, सर कलछौंह जिस पर माथे के पास काली और सफेद धारी, सीना गुलाबीपन लिए सिलेटी, और पेट पीलापन लिए हलका खैरा रहता है, जिसमे छोटी-छोटी काली बिन्दियाँ पड़ी रहती है। ठुड्डी और गला सफेद रहता है।

मादा का निचले हिस्से का रङ्ग धूमिल होता है और उसके सीने पर काली बिन्दियाँ नहीं होती। इसके सर या माथे पर काली और सफेद धारी भी नहीं होती है और कद मे भी वह नर से कुछ छोटी होती है। आँख की पुतली भूरी तथा चोंच और पैर लाल रङ्ग के होते हैं।

लवे साल मे दो बार अडे देते हैं। जनवरी से मार्च तक फिर सितम्बर से अकतूबर तक। घोंसले के बजाय ये किसी झाड़ी के नीचे एक छिछला गड्ढा खोद कर अडे देने की जगह बना लेते है। इसी गड्ढे में मादा हलके बादामी रङ्ग के १०—११ अडे देती है।

हारिल

[Green Pigeon]

हारिल को कबूतर की जाति का कहने में कोई हर्ज नहीं था, यदि उसके चोंच और पैर में कबूतर से इतना ज्यादा फर्क न होता। एक और बड़ा फर्क यह है कि जहाँ कबूतर अक्सर जमीन पर बैठे दिखाई पड़ते है हारिल शायद ही कभी जमीन पर उतरता हो। इसकी मुख्य खूराक फल होने के कारण यह हमेशा बरगद या पीपल आदि पेड़ो पर ही अड्डा जमाए रहता है।
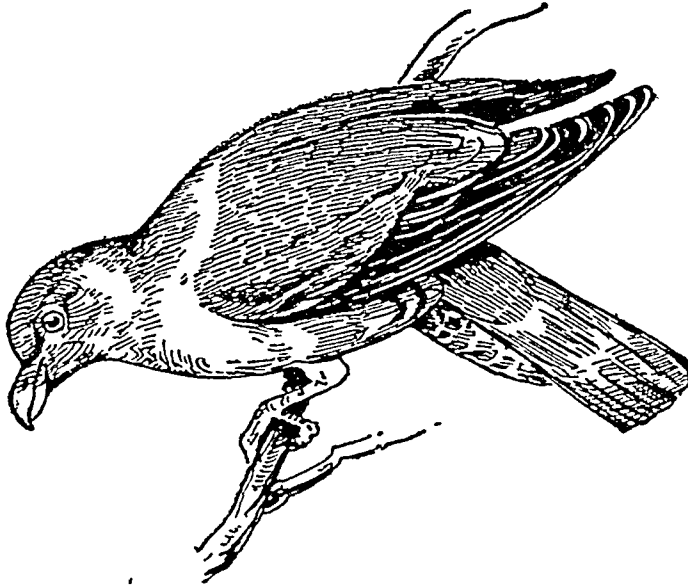
हारिल

एक डाल से दूसरी डाल पर तोते की तरह कूदने के कारण हारिल के पजे बड़े मजबूत होते हैं। अक्सर बन्दूक से घायल होने पर ये अपने मजबूत पजों से डाल पकड़ लेते हैं और मर कर भी लटके ही रह जाते हैं। ऐसी हालत मे इनको पाना कठिन हो जाता है। कभी-कभी यह भी देखा गया है कि ये उड़ते समय अपने पजे मे एक टहनी दाबे रहते हैं।

हारिल बीस पचीस का गिरोह बाधकर रहने वाला बारहमासी पक्षी है जिसके नर मादा एक शकल के होते है। यह कद में कबूतर के बराबर होने पर भी उससे तगड़ा होता है और रङ्ग में तो उससे कहीं ज़्यादा सुन्दर और भड़कीला होता है।

इसका सर पीलापन लिए हरा, गर्दन के चारों ओर से लेकर सीने तक का हिस्सा भूरा और ऊपरी हिस्सा पीलापन लिए गाढ़ हरा रहता है। डैनों पर काली और फालसई धारियाँ पड़ी रहती हैं। इसकी दुम हरी जिसमे बीच में भूरी आड़ी पट्टी, नीचे का भाग भूरा जिसमें बादामी धारियाँ और पेट और नीचे का हिस्सा हलका सिलेटी होता है।

इसकी आँख की पुतली नीली होती है जिसके चारों ओर एक गुलाबी घेरा रहता है। चोंच मुलायम सूजी सूजी सी जिसका निचला हिस्सा हरा और आगे का हिस्सा नीलापन लिए सफेद रहता है। पैर नारङ्गी लाल होते है।

हारिल के अडा देने का समय मार्च से जून तक है। जब यह किसी ऊँचे पेड़ पर सूखी टहनियों का एक ऐसा तितरा-बितरा-सा घोंसला बनाता है जिसके पेंदे से अक्सर नीचे तक अडे दिखलाई पड़ते हैं। घोंसले को मुलायम करने के लिए घास-फूस भी नहीं लगाया जाता क्योंकि हारिल को जमीन पर उतरने से जो नफ़रत है। इसी भद्दे घोंसले में मादा दो चमकीले सफेद अडे देती है।

हारिल की एक और जात जो कोकिला कहलाती है अक्सर चिडिया पालने वाले शौकीनों के यहाँ दिखाई पड़ती है। यह वैसे तो पहाड़ी चिड़िया है, जो कद और रंग-रूप में बहुत कुछ हारिल से मिलती-जुलती होती है। हाँ इसके नर के डैने और पीठ पर के गाढ़ लाल चित्ते और नारंगी या गुलाबी सीने के कारण इसे और हारिलों से पहचानना मुश्किल नहीं होता।

कोकिला हमारी काली कोकिल या कोयल से भिन्न पक्षी है इससे इन दोनों के बारे में धोखा न होना चाहिए। एक हारिल की रिश्तेदार है तो दूसरी पपीहे की। लेकिन बोली दोनों की लाजवाब होती है। कोयल की कूऊऊऊ से इसकी सीटी कुछ ही कम ठहरे तो ठहरे, वैसे बाज लोग तो इसकी बोली को बहुत प्यारी मानते हैं।

कोकिला सिवा कैद होने के अपना हिमालय का सुदर निवास नही छोडती। यह भी हारिल की तरह हमेशा पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है, जिसको इनके हरे रग के कारण जल्दी मे देखना बहुत कठिन हो जाता है। इसकी बाकी और सब आदतें हारिल की तरह होती हैं।

तालाबी चिड़ियाँ
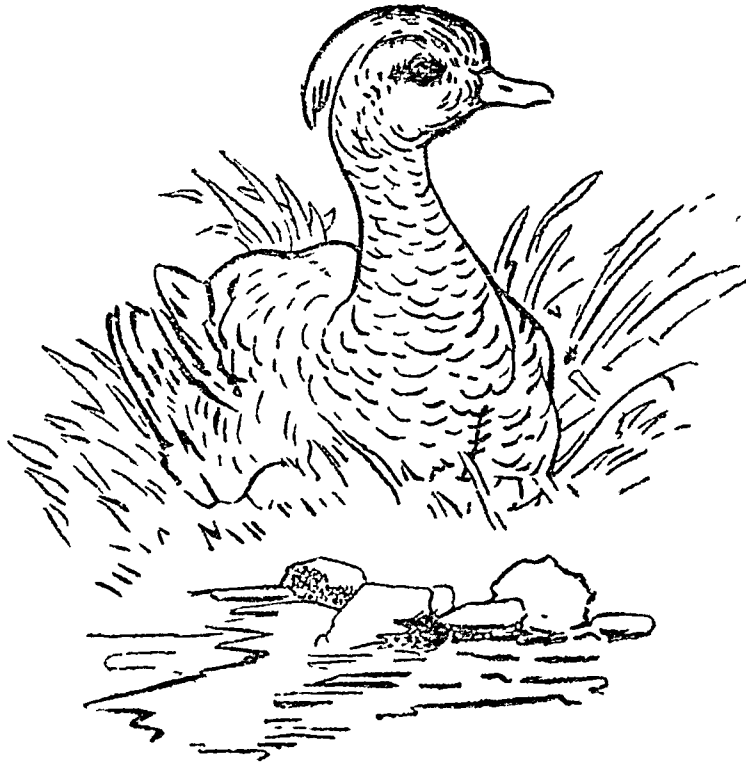
तालाबी चिड़ियाँ

जैसा पिछले अध्याय के प्रारभ में बताया जा चुका है बत्तखे अब शिकार की चिड़ियो मे शामिल ही नहीं कर ली गई हैं बल्कि अब वे शिकार की चिड़ियों में अपना एक विशेष स्थान रखती हैं। यहाँ आसानी के लिए तालाबी चिड़ियो को एक साथ जमा किया गया है जिसमें बत्तखों के अलावा बत, टिकरी, बानवर और हसावर भी शामिल कर लिए गए है।

बत्तखों को इस प्रकार चार भागों मे बाँटा जा सकता है—

१—बारहमासी बत्तखे—जो यहाँ बारहो महीना रह कर दूसरे देशों में नहीं जातीं और यहीं रह कर अडे देती हैं।

२—मौसमी पनडुब्बी या डुबारू बतखे—जो प्रवास गमन करती हैं, अर्थात् जो जाड़े के प्रारम्भ मे हमारे देश मे आकर गर्मी के शुरू में फिर यहाँ से उत्तर पश्चिम की ओर लौट जाती हैं और जो अपनी खूराक की तलाश मे पानी मे डुब्बी लगाकर भीतर ही भीतर मछली की तरह तैरती हैं।

३—छोटी मौसमी बतखे—जो डुबारू की तरह प्रवास गमन करके जाड़े के मौसम में हमारे यहाँ आती तो हैं पर उनकी तरह अपनी खूराक की तलाश मे पानी के भीतर डुब्बी नहीं लगातीं। और

४—बड़ी मौसमी बत्तखें—जो और सब बातों में छोटी मौसमी बतखों की तरह होकर भी कद में उनसे बड़ी होती हैं।

इन चारो किस्म की बत्तखों के अलावा इस अध्याय मे जिन अन्य चार पक्षियों का वर्णन दिया जा रहा है उनमे पहली तो सवन या काज है जो शकल सूरत मे हंसों की सी होकर भी कद में उससे छोटी और बतखों से बड़ी होती है।

दूसरी टिकरी है जो आदतों में बतखों से बहुत कुछ मिलती जुलती होने पर भी जालपाद नहीं होती। यानी इसके अंगूठे बत्तखों की तरह पूरे जुड़े नही होते बल्कि उनमें दोनो ओर पत्तियों की शकल की मोटी खाल बढी रहती है।

तीसरी बानवर है जो पनकौए की जाति का पक्षी है और जो टिकरी की तरह आधी बतख होकर भी पानी मे डुबकी लगाने मे किसी भी पनडुब्बी बतख से पीछे नहीं रहती। और—

चौथी चिडिया है हंसावर जो शकल सूरत मे बतखो से एकदम जुदा होकर भी बतखों के साथ याद की जाती है और जो सारस की तरह लंबी टाँगो वाला होकर भी तैरने मे किसी बतख से हार नहीं सकता।

चेती

चैती
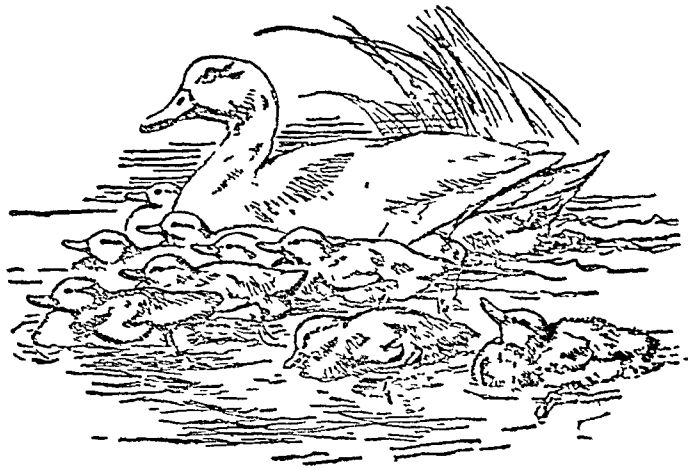
[Teal]

बतखों को जिन पाँच हिस्सों में बाँटा गया है उस हिसाब से चैती डुब्बी न लगाने वाली छोटी मौसमी बतखों की श्रेणी में आती है। इसकी तिदारी, मैल आदि छोटी-बड़ी कई जातियाँ है। जिनमें से इस पुस्तक मे सिर्फ चैती और तिदारी का वर्णन दिया जा रहा है क्योंकि बाक़ी सबकी सूरत शक्ल में कुछ-कुछ फर्क होने पर भी इनकी आदतें एक जैसी होती हैं।

चैती को छोटी मुरगावी भी कहते है। कद मे इसके नर मादा करीब १५ इन्च के होते है पर दोनों के रग में फर्क रहता है।

नर का सर और ऊपरी गर्दन कत्थई होती है जिसमें चोंच से आँख के ऊपर होते हुए दोनो ओर गर्दन तक एक हरी पट्टी रहती हैं। इस पट्टी के किनारे एक पीली धारी भी रहती है। इसकी ठुड्डी के कत्थई रङ्ग में कुछ स्याही मिली हुई रहती है और गरदन का पिछला हिस्सा तथा पीठ और बदन के बग़ली हिस्से में पतली पतली काली और सफेद आड़ी धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने भूरे होते हैं जिनपर चमकीली हरी और काली धारियाँ रहती हैं। दुम भूरी, सीना सफेद जिसपर काली सिलेटी जैसी चित्तियाँ और पेट सफेद होता है। पेट के बीच का कुछ हिस्सा काला रहता है।

मादा की ऊपरी पीठ, दुम और सारा ऊपरी हिस्सा गहरे भूरे रङ्ग का होता है। डैने नर की तरह होते हैं और निचला हिस्सा भी नर से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता है। पर सीने पर काली चित्तियों की जगह भूरी चित्तियाँ रहती हैं। सर भी गहरी भूरी चित्तियों से भरा रहता है।

आँख की पुतली भूरी, चोंच गहरी सिलेटी और पैर भूरापन लिए सिलेटी रङ्ग के होते हैं। इसके पैर के अँगूठे जुड़े हुए रहते है जो बतखों की एक खासियत है।

टिकरी

[Coot]

टिकरी को बतखों के साथ रखने मे कुछ हिचक ज़रूर हो रही है। पर तालाबों में एक साथ रहने के कारण मुझे विश्वास है कि बत्तखो को, इस पुस्तक में भी इनके साथ रहने में कोई एतराज़ न होगा।
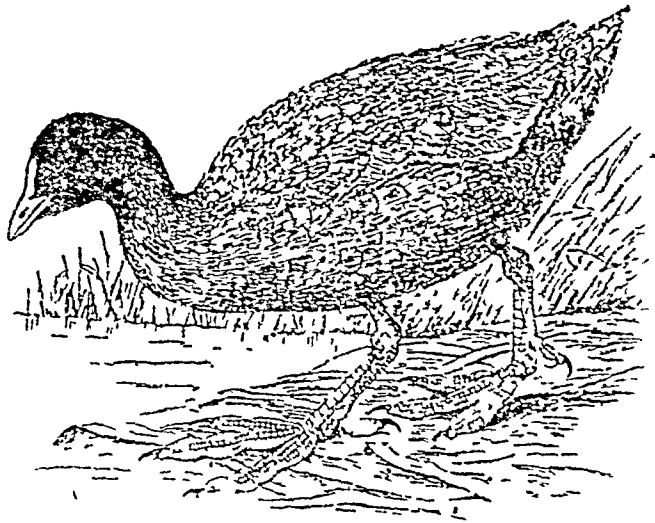
टिकरी

टिकरी पानी मे तैरते समय बत्तखों सी ही जान पडती है और अक्सर नए शिकारी इन्हे छोटी मुरगाबी समझ कर मार देते हैं। ये काफी ढीठ होती है और आदमियों के बहुत पास जाने पर ही उड़ती हैं, क्योंकि इन्हे लम्बे और अधजुटे अगूठों की वजह से पानी से ऊपर उठने मे काफी कठिनाई पडती है।

यह हमारे तालावों मे बारहो महीने रहने वाली चिडिया है जो नरई, गोद आदि तालाबी घासो मे अक्सर बडी गोल मे दिखाई पड़ती है।

कद मे ये १६ इन्च से ज्यादा नहीं होती और इनके नर मादा रगरूप मे एक-से होते हैं। इनके सारे बदन का रग सिलेटी काला होता है जो सर, गर्दन और दुम पर ज्यादा गहरा हो जाता है। नीचे का रग कुछ पीलापन लिये रहता है और डैनों मे किनारे पर सफेदी रहती है। इनकी आँख की पुतली

लाल, चोंच और चोंच के ऊपर माथे की ओर बढ़ा हुआ हिस्सा सफेद और पैर हरापन लिए सिलेटी रहते हैं। इनके माथे पर एक सफेद टीका सा रहता है जिसके कारण इनको कहीं-कहीं टिकरी के अलावा 'टीका' भी कहते हैं।

टिकरी के पैर के अगूठे काफी बड़े होते हे जो बत्तखों की तरह जुड़े नही रहते, पर उनमे सब में पत्ती की तरह दोनों ओर खाल बढ़ी रहती है। इनके सहारे ये तेजी से तैर तो सकते हैं, लेकिन एकाएक जल्दी उडने में इन्हे दिक्कत होती है।

मादा टिकरी मई जून में तालाबी घास के बीच अपना घास फूस का बड़ा-सा घोसला बना कर ८—१० अंडे देती है। इनका रग पत्थर के रंग से मिलता-जुलता रहता है जिन पर काली और गहरी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

टिकरी की एक और जाति हमारे यहाँ आती है जो 'खेमा' कहलाती है। कद में यह इससे कुछ बड़ी होती है और उसके रग मे भी कुछ बैगनीपन रहता है। इसकी सब आदतें इसी की तरह की होती हैं। इसे देहातों मे 'जलबोदरी' भी कहते है।

खैमा या जलबोदरी के भी नर मादा एक रग-रूप के होते है। इसका सर हलका बादामी लिए सिलेटी होता है, जिसका ऊपरी हिस्सा बैंगनीपन लिए सिलेटी रहता है। नीचे का रंग भी करीब क़रीब ऐसा ही रहता है। हाँ, सीने पर कुछ नीलापन जरूर ज्यादा हो जाता है। डैने और दुम के पर काले रहते है और दुम के नीचे एक सफेद चित्ता रहता है। आँख की पुतली गाढ लाल. चोंच भी भूरापन लिए गहरे सुर्ख रग की होती है। पैर की ललाई हलकी रहती है।

खैमा गरोहों मे रहने वाली चिड़िया है जो घास वगैरह से भरे हुए नालो में रहना बहुत पसद करती है। यह वैसे तो तैरने मे उस्ताद होती है लेकिन उससे भी ज्यादा उस्तादी यह छिपने में दिखाती है। उडने से जैसे इसे नफरत है और एक जगह से उड कर थोड़ी ही दूर पर यह फिर उतर पड़ती है।

इसका मुख्य भोजन घास-पात है और इसी कारण धान वगैरह के खेतों को इससे काफी नुक़सान पहुँचता है।

तिदारी

[Shoveller]

तिदारी भी मुरगाबी की श्रेणी में आती है, जैसा पहले बता आया हूँ। यह भी डुब्बी न मारने वाली मौसमी छोटी बत्तख है जो यहाँ अक्टूबर मे आकर अप्रैल में उत्तर की ओर लौट जाती है।

तिदारी
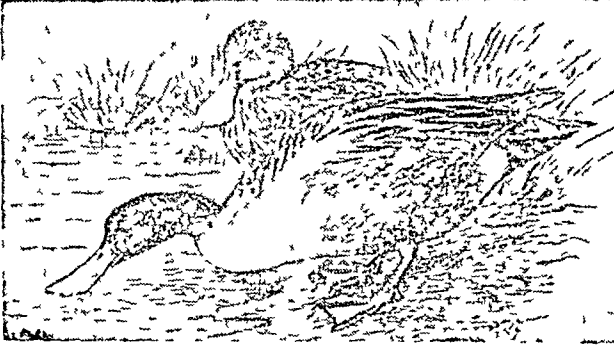
चैती के बाद इसका वर्णन यहाँ देने की इसलिए जरूरत पडी कि इसकी चोंच चैती वगैरह से बिल्कुल भिन्न होती है। यह और सब बत्तखो की चोच से लम्बी और काफी चपटी होती है और इसका ऊपर का हिस्सा नीचे से दुगुना चौड़ा होता है। आगे का हिस्सा अन्दर की ओर मुड़ा हुआ रहता है जिसमे दाँते कटे हुए रहते हैं।

तिदारी गदी बत्तख है। गन्दी इसलिए कि यह गन्दे पानी मे ही ज्यादा रहती है जहाँ कीचड, सेवार और गन्दे पानी मे रहने वाले छोटे-छोटे कीडे—जो इसकी खुराक हैं—इसे काफी तादाद में मिल जाते हैं।

इसके नर और मादा २० इच के होते हैं पर दोनो के रग में फर्क रहता है। नर की गरदन और सिर चमकीला हरा, पीठ भूरी चितकबरी, दुम काली और गहरी भूरी जिसके किनारे सफेद होते है। डैने में भूरे सिलेटी नीले और सफेद रग की मिलावट रहती है और सीना सफेद तथा पेट खैरे रग का होता है।

मादा का रंग धूमिल होता है। डैने नर की तरह होते हुए भी रङ्ग मे फीके होते हैं। इसका तमाम बदन भूरा चितकबरा होता है जिसमे पेट का रङ्ग कुछ कत्थई होता है।

नर की आँख की पुतली पीली और चोंच काली होती है पर मादा की ये दोनों भूरी रहती हैं। पैर नर मादा दोनों के गुलाबी रहते हैं और अँगूठे बतखों की तरह जुडे हुए होते हैं।

तिदारी ज्यादातर दस बारह की गोल मे रहती हैं और इन्हें जाड़े मे अक्सर छोटी-छोटी गड़हियों में देखा जा सकता है, जहाँ कीचड़ की कमी नहीं रहती। चैती की तरह यह भी हमारे देश से बाहर पानी के किनारे, घास फूस का घोंसला बनाती है, जिसमे मादा १०-१२ या उससे भी ज्यादा अंडे देती है।

अडों का रग राख जैसा होता है, जिसमें हलका गेहुँआ रग भी मिला रहता है।

नकटा

[Comb Duck]

नकटा का शुमार बड़ी बत्तखो मे होता है। यह यहाँ बारहों महीने रहने वाली बत्तखों में से है। नर की चोच के ऊपरी हिस्से पर एक काला कुब्बक सा उठा रहता है जिसके कारण इसको 'नकटा' कहते हैं। इससे इसे पहिचानने मे दिक्कत नहीं होती।

इसका नर ३० इंच का सुन्दर पक्षी है जिसके सफेद सर और गरदन पर काली चित्तियाँ पड़ी रहती है। इसका ऊपर का सारा हिस्सा—पीठ के निचले भूरे हिस्से को छोड़कर—काला होता है जिसमे हरी और नीली चमक रहती है। नीचे का हिस्सा सफेद होता है।

मादा नर से कुछ छोटी होती है—इसकी चोंच पर नर की तरह दीवार नही उठी रहती लेकिन इसके सर और गर्दन पर काली चित्तियाँ ज्यादा तादाद में रहती हैं।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और पैर हरापन लिए सिलेटी होते है। पैर के अगूठे अन्य बत्तखों की तरह जुडे हुए रहते है।

नकटा यहाँ के बडे तालों मे—जिनके किनारे घास या और पेड़ रहते हैं—बारहो मास रहते है। इनका मुख्य भोजन वैसे तो घासपात, जड़े और धान है पर ये पानी के छोटे कीड़ों से भी परहेज नहीं करते। उडने मे भी ये किसी से कम तेज नही होते और जब इनका जोडा उड़ता है तो हमेशा नर आगे रहता है।

बरसात मे ये ताल के किनारे के किसी पेड़ पर या किसी खोखले तने में अपना घास फूस का घोसला बनाते है जिसमे मादा १०-१२ अडे देती है। वैसे इनके अडों की तादाद इससे भी ज़्यादा देखी गई है।

अडो का रग हाथी दाँत सा सफेद होता है जिसपर एक प्रकार की चमक भी रहती है।
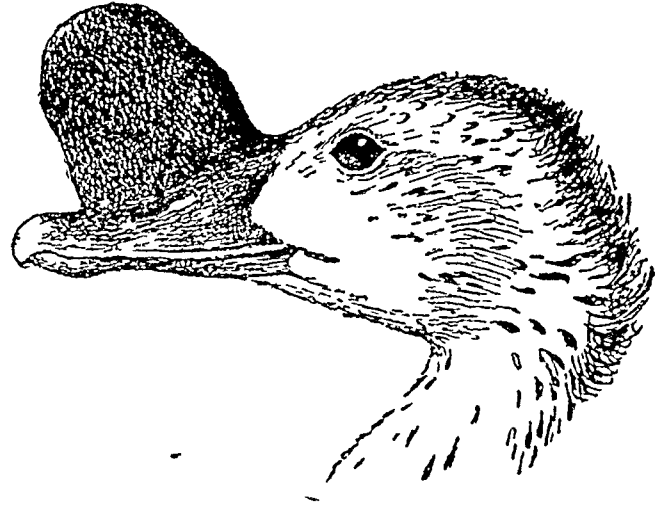
बानवर

[Darter]

बानवर को भी बत्तखों के साथ रखना पड़ रहा है क्योंकि इसमें बत्तखों के सभी गुण मौजूद हैं। जहाँ सिलही की तरह यह पेड़ पर रह लेता है वहाँ चैती की तरह तैरने में और बुड़ार की तरह डुब्बी लगाने में भी इससे कोई पार नही पा सकता।

इससे कोई भी तालाब खाली नही मिलेगा। पानी के बीच किसी ठूंठ पर या तालाव किनारे जिसने एक बार भी इसे डैने फैला कर बैठे देखा है वह इसे भूल नहीं सकता।
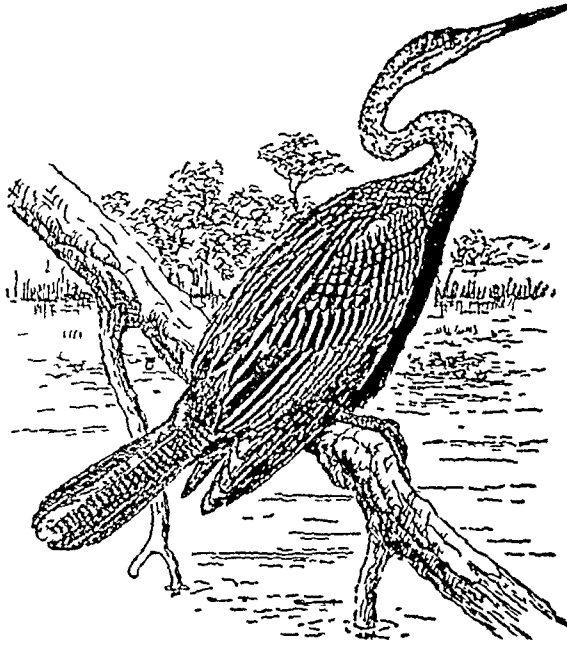
बानवर

बानवर बारहो मास हमारे तालाबों में रहनेवाली तीन फिट की काली चिड़िया है जो अक्सर गोल बाँध कर रहती है। इसके नर मादा एक शकल सूरत के होते है। इसका सर और गरदन बिना पर के सादे होते हैं जिनका रग नीलापन लिए काला रहता है। सारा शरीर काला होता है जिसमे सफ़ेद भूरी और सिलेटी धारियाँ, बिन्दियाँ और निशान पड़े रहते है।

इसकी आँख की पुतली ललछौह भूरी, चोंच काली और पैर चमकीले काले होते है। पैर के अँगूठे लम्बे और जड़ के पास कुछ जुडे हुए रहते है। बाकी हिस्से मे पत्ती की तरह दोनों ओर थोड़ी-थोडी खाल बढ़ी रहती है।

अपनी लम्बी और नोकीली चोंच के कारण इसका 'बानवर' नाम जितना सुन्दर है उतना ही इसकी साँप जैसी लम्बी और पतली गरदन के कारण दूसरा 'नागिन' नाम भी सार्थक है। पानी में तैरते समय यह अपना सारा शरीर पानी के भीतर रखता है, पर थोड़ी थोड़ी देर पर अपनी पतली गरदन निकाल कर चारों ओर देख कर फिर डुबकी लगा लेता है। मछली इसका मुख्य भोजन है जिन्हे यह अपनी नोकीली चोच से बड़ी आसानी से पकड़ लेता है।

इसके अडा देने का समय बरसात है, जब पानी के पास के किसी पेड़ पर इसके झुंड के झुंड सूखी टहनियो का घोसला बनाते हैं, जिसमे मादा ३—४ अडे देती है। ये रग में हरापन लिये सफेद रहते हैं।

बानवर से मिलती-जुलती एक और चिड़िया इसके साथ रहती है जो इससे कुछ छोटी होती है और जिसकी चोंच का ऊपरी हिस्सा कुछ टेढ़ा होता है। इसे पनकौआ (Cormorant) कहते हैं। इसकी काफी आदते बानवर से मिलती-जुलती होती हैं।

पनकौआ

बुड़ार

[Pochard]

बुड़ार की श्रेणी की कई बतखे हमारे यहाँ आती है, जिनमे बुड़ार नर (Pochard) करछिया (White eye) तथा लाल सर (Red crested Pochard) ज्यादा प्रसिद्ध है। यह सब मौसमी और पानी मे डुबकी लगाने वाली छोटी बतखे हैं, जो हमारे यहाँ अक्तूबर मे उत्तर की ओर से आकर मार्च के अन्त तक फिर उसी ओर लौट जाती है। इन सब की आदते एक जैसी होते हुए भी इनके रग मे फर्क रहता है। 'करछिया' अपने सफेद पेट से नही छिपते और 'लाल सर' अपने लाल सर से जल्द ही पहचान लिये जाते हैं। बुड़ार का यहाँ पूरा बयान ही दिया जा रहा है।

बुड़ार छोटी पनडुब्बी बतख है जिसका मुख्य भोजन पानी मे उगने वाले पेडों की जड़े है। इसका पिछला अँगूठा भी आगे की तरह पतवार-सा जुड़ा रहता है, जिससे इसे पानी के भीतर तैरने मे बड़ी आसानी रहती है। यह ज्यादातर बडी झीलों मे उतरती है जहाँ का पानी गहरा और सेवार आदि से ढका नही रहता। इनके चराई का समय अन्य दूसरी बतखो की तरह रात ही है और दिन मे ये अक्सर पानी के ऊपर ऊँघा करती है। उड़ने मे ये कुछ सुस्त जरूर है पर एक बार पानी से ऊँचे उठ जाने पर फिर इनकी तेजी किसी से कम नही रहती।

तिदारी से इसका कद कुछ छोटा होता है और इसके नर मादा के रग मे भी कुछ ही फर्क रहता है। नर का सर और गरदन खैरी रहती है। सीना चमकीला काला होता है। दुम का ऊपर और नीचे का हिस्सा भी काला ही रहता है। बाकी सारे बदन का रग पीलापन लिये सिलेटी होता है, जिसमे पतली-पतली काली धारियाँ पड़ी रहती है। डैने जरूर भूरे होते हैं, पर पेट सफेद रहता है।

मादा का सर, गरदन और सीना कत्थई भूरा होता है, जिसमे माथे का रग कुछ कलछौह-सा रहता है। गले और आँख के ऊपर का कुछ हिस्सा राख के रग से भी हलका रहता है। बाकी सारा शरीर सिलेटी होता है जिसमें काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने भूरे, दुम कलछौह, पेट सफेद और दुम के नीचे का रग भूरा होता है।

आँख की पुतली ललछौह पीली, चोंच सिलेटी जो जड़ और सिर पर काली रहती है और पैर नीलापन लिए सिलेटी रहते है।

बुड़ार भी हमारे देश मे अडे नहीं देती। अडे देने के समय यह उत्तर की ओर लौट जाती है, जहाँ अन्य मौसमी बतखों की तरह इसकी मादा घनी घास के बीच मे पानी के किनारे १०—१२ अडे देती है।

अडे रंग मे हरापन लिए राख के रग के होते है।

बुटार
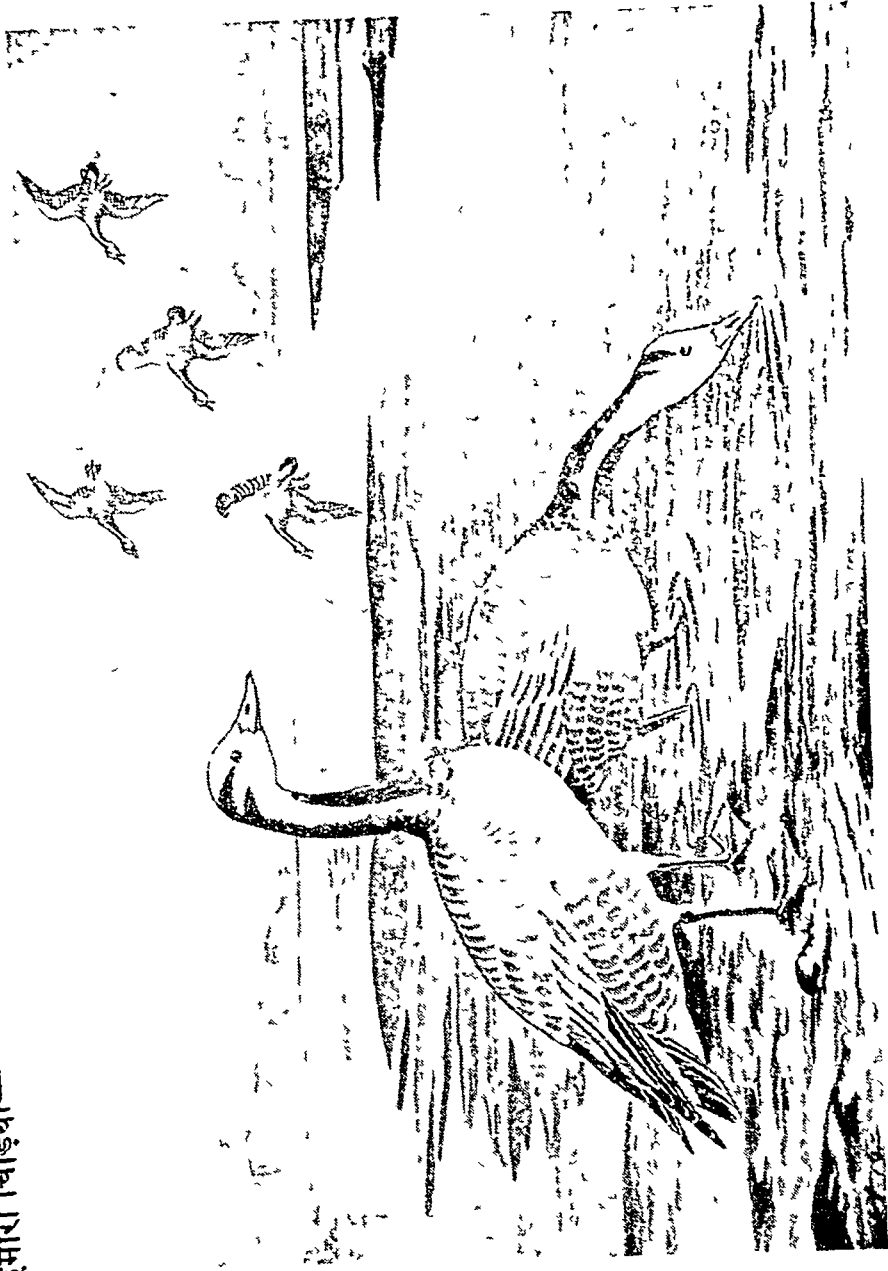
सवन

सवन

[Bar-headed Goose]

सवन उन बड़ी बतखों में से है जिन्हें हंस की श्रेणी में रक्खा जाता है। इन्हें कलहस सोन और काज भी कहते हैं। शकल सूरत और आदत एक जैसी होने पर भी कद की छुटाई के कारण ये हंसों से अलग कर दिये गये हैं।

हमारे देश में काले और सफेद हस तो आते नहीं पर उनके भाई कलहस की दो किस्मे सवन (Bar-headed Goose) और बत (Grey Lag Goose) हमारे यहाँ जाड़ों में लाखों की सख्या में आती है।

बत बड़ी और मटमैली रग की होती है और हमारे यहाँ आती भी कम है। पर सवन के गोल से तो जाड़े में कोई भी तालाब खाली नहीं रहता। यहाँ सिर्फ सवन का ही वर्णन किया जा रहा है।

सवन करीब ३० इच की बड़ी बतख है जिसके नर मादा एक जैसे होते हैं। इसका सर सफेद होता है जिस पर आँखों के पीछे दो छोटी काली पट्टियाँ रहती हैं और भूरी गरदन में सर की सफेदी—दो खड़ी पट्टियों की शकल में उतर आती हैं। ऊपरी हिस्सा राख के रग का जिसमें पीठ और कधों पर पीलापन लिए आड़ी खड़ी सफेद धारियाँ होती हैं। डैने भूरे जिनके सिरे काले, दुम पीलापन लिए हलकी सिलेटी जिसके किनारे सफेद और सीना सफेदी लिए हलका भूरा होता है। नीचे पेट का हिस्सा एकदम सफेद होता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच पीली जिसके ऊपरी हिस्से का सिरा काला और पैर गुलाबी रग के होते हैं।

सवन बहुत सुन्दर चिड़िया है। इसका दूसरा नाम 'काज' भी है। यह अक्तूबर में यहा उत्तर की ओर से आकर मार्च तक फिर उसी ओर लौट जाती है। इसे तालाबी चिड़िया से ज्यादा दरिया की चिड़िया कहें तो ज्यादा ठीक होगा। क्योंकि हरी फसल के दानों और बालियों से चुगना पेट भरने के कारण ये शाम को नदी के किनारे बोये हुये कछारों में पहुँच जाती है। जहा रात भर खेत चर कर सवेरे इन्हे फिर हम बड़े तालावों की ओर लौटते देखते हैं। दिन को इनके झुण्डों को तालावों के टापुओं या नदी के रेती पर ऊँघते देखा जा सकता है, पर नजदीक जाने की कोशिश करते ही इनके पहरेदार इन्हे सजग कर देते हैं, और इनका गोल कर्कश आवाज करता हुआ उड़ जाता है। हां शाम के झुटपुटे में इनका शिकार कुछ आसान जरूर होता है।

मौसमी बतखों की तरह यह भी हमारे देश में अडे नहीं देती लेकिन इनके अडा देने का समय और घोंसला बनाने का ढग अन्य मौसमी बतखों की तरह ही होता है।

इनके अंडे तदाद में ५—६ तक होते हैं जो पीलापन लिये हलके गेहुँए रंग के होते हैं। यह गेहुँआपन जल्द ही गन्दे मटमैले रग में बदल जाता है।

सिलही

[Whistlıng Teal]

सिलही नकटे की तरह यहाँ बारहो महीने रहने वाली बतख है, जिसको हम अपने हरियाली से घिरे हुए तालाबों मे बड़ी आसानी से देख सकते है। इसकी दो ज़ाते होती हैं, छोटी और बडी, पर दोनों के रङ्ग मे बहुत थोड़ा फर्क रहता है।

इसके नर मादा एक रङ्गरूप के होते हैं जो अपने नारङ्गी भूरे रङ्ग और लम्बी टागों की वजह से बड़ी आसानी से पहचाने जा सकते है।

सिलही १७ इञ्च की छोटी बतख है जिसका सर, गरदन, सीना और पेट ललछौंह भूरा रहता है। सर के ऊपरी हिस्से पर यह रङ्ग गहरा और गाल और गले पर हलका हो जाता है। इसकी पीठ और कधा गहरा भूरा जिसमे आड़ी आड़ी हलकी कत्थई धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने कलछौंह, दुम भूरी और उसके नीचे का हिस्सा सफेदी मायल रहता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच और लम्बे पैर भी भूरे जिसमे नीलापन मिला रहता है।

सिलही झुंड में रहने वाली बत्तख है जिसे न तो खुले हुए सफाचट तालाब ही पसद आते हैं और न बड़ी बड़ी नदियाँ ही। यह तो ज्यादातर ऐसे तालाब पसन्द करती है जो नरई और गोंद आदि तालाबी घासों से भरा हो और जिसके किनारे बबूल आदि के पेड हों, जिस पर वह घोंसला ही न बना सके बल्कि बसेरा भी ले सके।

यह पानी के ऊपर और नीचे बहुत तेज तैर लेती है, पर उड़ने मे जैसे इसे कम आसानी होती है। उड़ते समय यह एक प्रकार की सीटीनुमा आवाज करती है, जो कर्कश न भी होकर सुरीली भी नहीं होती। इसका मुख्य भोजन वैसे तो सेवार आदि हैं लेकिन यह कट्टुए भी बडे मजे मे खाती है।

जून से सितम्बर तक इसके अडा देने का समय है जब यह जमीन या किसी झाडी और पेड़ पर अपना घोंसला बनाती है। कभी कभी यह पेड़ के खोखले तनों या कौवे आदि के पुराने घोसलों से ही अपना काम चला लेती है।

इसके अडे ८—१० से कम ज्यादा भी पाए जाते है। जो रङ्ग मे हाथी दाँत की तरह होते हैं, पर कुछ दिन मे गन्दे मटमैले हो जाते है।

सिलही
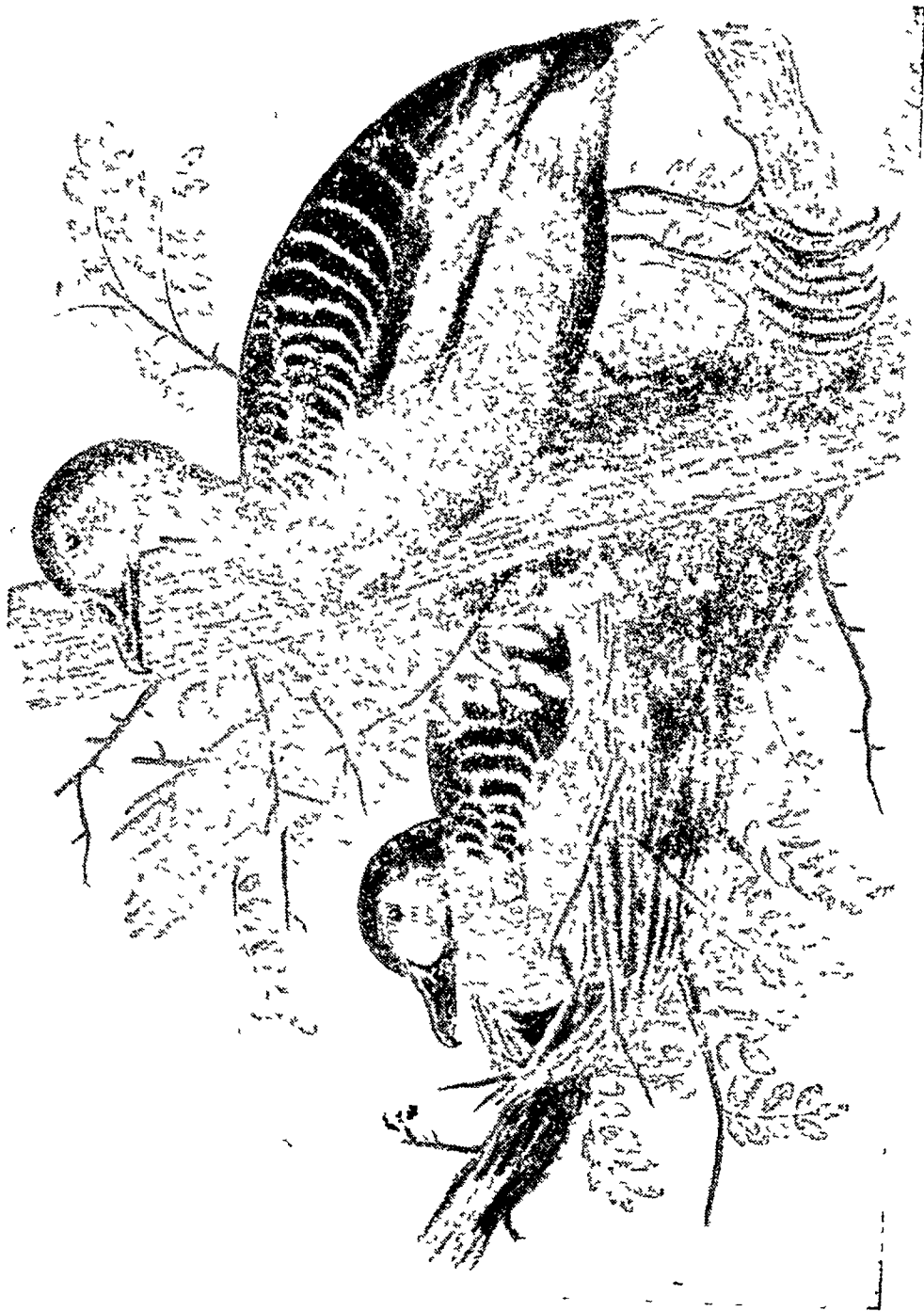
सीखपर

सीख़पर

[Pin Tail]

सीखपर सब से सुन्दर बतख़ है जो हमारे यहाँ आती है। यह हमारे यहाँ की डुब्बी न लगाने वाली मौसमी बतख़ है जो अन्य मौसमी बतख़ों की तरह अक्टूबर में उत्तर की ओर से आकर मार्च में फिर वहीं लौट जाती है।

इसके दुम के बीच के दो पर सीख़ के समान लम्बे होने के कारण इसका नाम ही सीख़पर हो गया है। इसका दूसरा नाम 'पुछार' भी है जिसका सम्बन्ध भी इसकी लम्बी पूँछ से है।

सीख़पर लाखों की तादाद में हमारे देश में आते हैं और इसका एक-एक गोल कई सौ का होता है। क़द में यह बतख़ २ फ़ीट के करीब होती है जिसमें ५-७ इञ्च की दुम भी शामिल रहती है। इसके नर मादा के रङ्ग भी अलग अलग होते हैं। नर का सर और गरदन का रङ्ग गाढ़ भूरा जिसमें दोनों बग़ल एकएक सफ़ेद पट्टी जो बीच गरदन से चल कर सीने और पेट की सफ़ेदी में मिल जाती है। पीठ और बदन के दोनों बगल का हिस्सा पतली-पतली काली और सफेद धारियों से भरा रहता है। डैने पर कई रङ्ग की पट्टियाँ और धारियाँ रहती हैं जिसमें—गाढ़ भूरा, काला, सफेद और हरा रङ्ग शामिल है। इसकी दुम भूरी होती है जिसके बीच के दो लम्बे पर काले रङ्ग के होते है और दुम के नीचे का रङ्ग बादामी होता है जिसमें एक काला धब्बा पड़ा रहता है।

मादा की गरदन एकदम भूरी न होकर भूरी चित्तियों से भरी रहती है। बाक़ी नीचे का सारा हिस्सा सफ़ेद रहता है। पीठ हलकी सिलेटी और डैने सिलेटी लिए भूरे रङ्ग के होते हैं।

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच नीलापन लिए गाढ सिलेटी और पैर सिलेटी रङ्ग के होते है।

सीख़पर हमारे तालाबों में खुली जगह में अक़सर बैठते हैं जहाँ इनकी नजर बचा कर पहुँचना बड़ा कठिन होता है और पानी से उठने में कुछ सुस्त होने पर भी एक बार आसमान मे उठ जाने पर ये तेजी से बंदूक की मार से बाहर चले जाते हैं।

अन्य दूसरी बतखों की तरह ये भी रात में ही अपना पेट भरते हैं। बहुत तड़के चाहे भले ही कभी ये सूखे पर दिखाई पड़ते हों पर उसके बाद ये बीच ताल ही में दिखाई देंगे।

दूसरी मौसमी बतखो की तरह सीख़पर भो अप्रैल से जून तक घास-फूस का ज़मीन पर घोंसला बनाता है जो ज्यादातर पानी के किनारे किसी झाड़ी या घनी घास के बीच में रहता है। मौसमी बतख़ होने के कारण इसके घोंसले भी दूसरे देशों मे होते हैं जिन्हे हम देख नहीं सकते।

मादा सीख़पर ६ से ८ तक अडे देती है, जो रङ्ग मे पीलापन लिये हलके रङ्ग के होते हैं।

सुरख़ाब

[Ruddy Sheldrake]

सुरख़ाब भी सीखपर की श्रेणी की डुब्बी न लगाने वाली मौसमी वतख है जो तालाबों से ज्यादा बड़ी नदियों के किनारे रहना पसन्द करती है। यह अक्सर जोडा बाँध कर रहता है और छिछले रेतीले किनारों पर कभी-कभी इनके झुण्ड भी दिखाई पड़ जाते हैं। तालाबों में भी यह साफ़ खुली हुई जगह पसन्द करता है जहाँ अपने सुनहरे रङ्ग की वजह से यह और वतखो से अलग ही रहता है।

सुरखाब
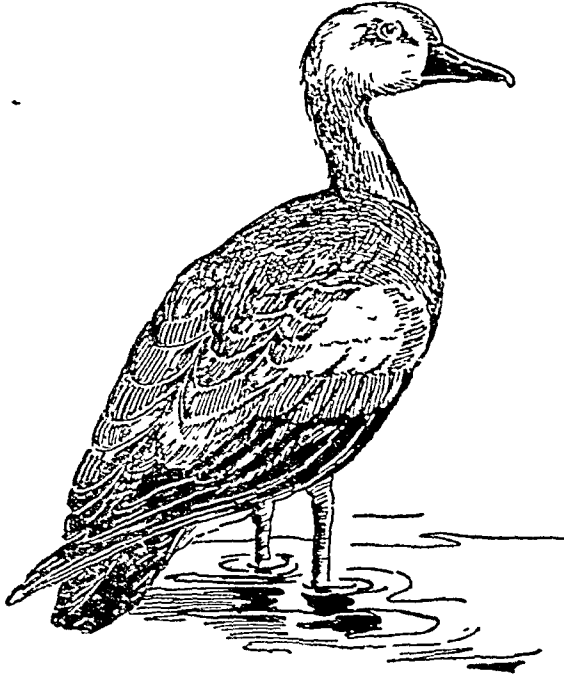
सुरखाब को 'चकई-चकवा' भी कहते हैं। इनके नर मादा के रङ्ग में थोड़ा ही फर्क रहता है। कद मे ये करीब २६ इंच तक के होते हैं।

नर के सारे वदन का रङ्ग सुनहला या नारगी भूरा होता है जिसमें सर और गरदन बादामी होती है। गरदन के चारो ओर एक काला कंठा रहता है। पीठ का पिछला हिस्सा और दुम काली होती है। डैने का सिरा काला, वीच का हरा और उससे नीचे का सफेदी लिए भूरा रहता है। नीचे का कुछ हिस्सा हलके खैरे रंग का होता है। मादा नर से कुछ हलके रग की होती है और उसके गले और सिर के रग मे नर से ज्यादा सफेदी रहती है। नर की तरह इसके गले मे काला कंठा नही होता।

इसकी ऑख की पुतली गहरी भूरी और चोंच और पैर काले होते हैं।

सुरख़ाब अपनी चालाकी के लिए प्रसिद्ध है। रात मे खाने की तलाश मे इधर-उधर अलग हो जाने के कारण ही शायद यह झूठी कहावत मशहूर हो गई है कि चकई-चकवा रात मे अलग हो जाते हैं।

सुरखाब के घोसला वनाने और अंडा देने का समय सीखपर आदि अन्य मौसमी बतखों की तरह है, जब मादा दूसरे देशों मे जाकर ८—१० अडे देती है जो रग मे हलका गेहुँआपन लिये सफेद होते हैं।

हंसावर

[Flamingo]

हस हमारे देश में काश्मीर तक आकर ही लौट जाते है, पर हसावर या राजहस हमारे देश के उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों तक जाड़ों मे आ जाते है। वे बत्तखों की भाँति जाड़ो के शुरू मे यहाँ आकर गरमियों के शुरू में फिर उत्तर पश्चिम की ओर लौट जाते हैं। हमारे यहाँ के शिकारी बत्तखों के साथ साथ खाने के लिए इनका भी शिकार करते है।

हसावर सारस से छोटी पर उसी तरह की लबी टाँग वाली चिड़िया है, जिसकी सुन्दरता से सारस का कोई मुकाबला ही नहीं हो सकता। लबी टाँग और लबी गरदन के कारण यह बताने की जरूरत बाकी नही रह जाती कि इन्हे कीचड़ से भरे हुए छिछले ताल ही ज्यादा पसद होगे। पर जहाँ कहीं गहरा पानी सामने आ जाता है ये किसी बतख से कम नहीं तैरतीं। ये ज्यादातर झुंड मे रहती है और अक्सर इन्हे अपनी—कीडे-मकोड़ों और काई वगैरह की—खूराक की तलाश मे मशगूल ही देखा जाता है।

हंसावर के नर मादा एक जैसे होते है। जिनका सर, गरदन, दुम और बदन का कुछ हिस्सा सफेद रहता है जिसमे गुलाबी झलक रहती है। डैने का ऊपरी हिस्सा लाल रहता है। इसकी आँख की पुतली पीली, चोंच गुलाबी जिसका सिरा काला और टाँगे लाल रग की होती है।

मौसमी पक्षी होने के कारण ये हमारे देश में अडे नहीं देते। विदेशों मे ये पानी के पास एक मिट्टी का टीला-सा बनाते है जो पानी की सतह से ऊँचा और ऊपर की ओर से पोला-सा रहता है। मादा इसी में दो अडे देती है जो रग मे धुमैले सफेद होते है।

[देखिये रगीन चित्र]

किनारे की चिड़ियाँ

किनारे की चिड़ियाँ

इस अंतिम अध्याय में शकल-सूरत, क़द और स्वभाव के दृष्टिकोण से तो हमें बहुत बेमेल पक्षियों का संकलन जान पड़ेगा, पर इन सब में एक बात जो हमें समान-रूप से मिलती है, वह है इनकी पानी के निकट रहने की आदत, जिसके कारण ये यहाँ एक साथ रखी गई हैं।

इनमें से कुछ तो खंजन और टिटिहरी सी छोटी चिड़िया हैं, जो तैरना न जानते हुए भी अपनी ख़ूराक के लिए पानी के निकट ही रहना पसंद करती हैं।

और कुछ सारस से बड़े और बगुले से छोटे पक्षी भी इस अध्याय में हैं, जो अपनी लंबी टांगों के सहारे कीचड़ और पानी के किनारे घोंघों, कछुओं और मेंढक, मछलियों की तलाश में घूमा करते हैं। इसके अलावा कुररी-सी चिड़ियाँ भी इनमें शामिल कर ली गई हैं जो पानी के किनारे सुस्ताने और बसेरा लेने के लिए भले ही बैठती हों पर जिनको मछलियों आदि से अपना पेट भरने के लिए दिनभर पानी की सतह से मिल कर उड़ते देखा जा सकता है।

अंत में सबसे निराले ढंग से शिकार करने वाले कौड़िल्ले को भी इसी अध्याय में स्थान मिला है, जो किनारे के भीटों में बसेरा करके भी दिन भर पानी के ऊपर उड़ा करते हैं, और १५—२० फीट की ऊँचाई पर एक स्थान पर फिरकी की तरह उड़कर ऊपर से मछलियों के ऊपर—इस तरह अपने बदन को ढेले की तरह फेंक देते हैं कि इनका निशाना शायद ही कभी खाली जाता हो।

इस प्रकार के भिन्न-भिन्न पक्षियों को जब हम पानी के किनारे एक साथ देख सकते हैं तो इस पुस्तक में भी उनका वर्णन एक-साथ देखने में हमें कोई आश्चर्य न होना चाहिए।

कुररी

[Tern]

कुररी को देहात में कुछ लोग धोबिन कहते हैं और कुछ टिटिहरी। इनके धोबिन कहे जाने में तो ज्यादा हर्ज नहीं है लेकिन इनको टिटिहरी कहना तो सरासर भूल है क्योंकि टिटिहरियों से इनका किसी प्रकार का सबंध नहीं है।

इसकी वैसे तो चार पाँच जातियाँ हैं पर हमारे यहाँ ज्यादातर उनकी दो किस्में दिखाई पड़ती हैं। एक बड़ी कुररी (Common River Tern) और दूसरी छोटी या कलपेटी कुररी (Black - bellied Tern) दोनों शकल में एक जैसी होती है। कलपेटी कुररी कुछ छोटी जरूर होती हैं और उसका पेट भी काला होता है पर बाकी सब आदतें दोनों की एक जैसी ही होती हैं। दोनों के नर मादा भी एक शकल के होते हैं।

कुररी

बड़ी कुररी १६ इंच लंबी चिड़िया है जिसमें उसकी लम्बी दोफकी दुम भी शामिल है। इसके सारे बदन का रंग हलका सिलेटी होता है जो कहीं हलका और कहीं गहरा हो जाता है। निचला हिस्सा राख से भी हलका रहता है। गर्मियों में इसके कनपटी से लेकर सर तक का हिस्सा चमकीला काला हो जाता है, जैसे किसी ने इसे काले मखमल की टोपी पहना दी हो।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच गहरी पीली और छोटे-छोटे पैर लाल रंग के होते हैं। इसकी चोंच लम्बी और पैर के अँगूठे बत्तखों की तरह जुड़े रहते हैं। दुम और डैने कद के हिसाब से काफी बड़े होते हैं।

कलपेटी कुररी कुछ छोटी होती है। इसका भी रंग हलका सिलेटी होता है पर काली टोपी के अलावा इसके पेट के नीचे से लेकर दुम तक का हिस्सा भी काला रहता है। अंडे देने के बाद कुछ समय तक के लिए इसके रंग में भी तब्दीली होती है और इसका काला रंग सफेदी में बदल जाता है।

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच नारंगी और पैर लाल होते हैं। पैर, दुम और चोंच सब बड़ी कुररी की बनावट के होते हैं।

कुररियाँ झील और दरिया के किनारे रहने वाली हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया हैं जो नदी के किनारे सैकड़ों की तादाद में दिखाई पड़ती हैं।

इनके पैर बत्तखों की तरह जालपाद होते हैं फिर भी ये पानी में तैरती नहीं और न इसी वजह से पेड़ पर ही बैठती हैं। पेट भर जाने या थक जाने पर ये किनारे पर बालू में और चिड़ियों के साथ चुपचाप बैठी रहती हैं। इन्हें अपने लम्बे और मजबूत डैनों पर ज़्यादा भरोसा रहता है और उन्हीं के सहारे ये ज़्यादातर पानी की सतह के ऊपर मछलियों की तलाश में उड़ती रहती हैं, जो इनकी मुख्य ख़ुराक हैं। शाम को पानी की सतह से चोंच मिलाकर इनका उड़ना बहुत भला मालूम देता है।

ये मार्च से मई तक खुले रेत में छिछला गड्ढा बनाकर अंडे देती हैं। जहाँ तक मुमकिन होता है अंडे देने के लिए कोई टापू तलाश किया जाता है जहाँ आदमियों की पहुँच न हो सके। अंडे पत्थर के रंग के होते हैं जिन पर घनी, गहरी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं जिससे वे आसानी से जमीन के रंग में मिल जावें।

बड़ी कुररी के अंडे कुछ बड़े और कलपेटी के उससे कुछ छोटे होते हैं। लेकिन रंग दोनों का एक जैसा ही रहता है।

एक-दो नहीं सैकड़ों कुररियाँ एक ही मैदान में अंडे देती हैं और वहाँ कोई आदमी पहुँचा नहीं कि उसके सर के पास ये ऐसी तेज आवाज करती हुई उड़ती हैं कि डर लगता है कि कहीं चोंच न मार दें।
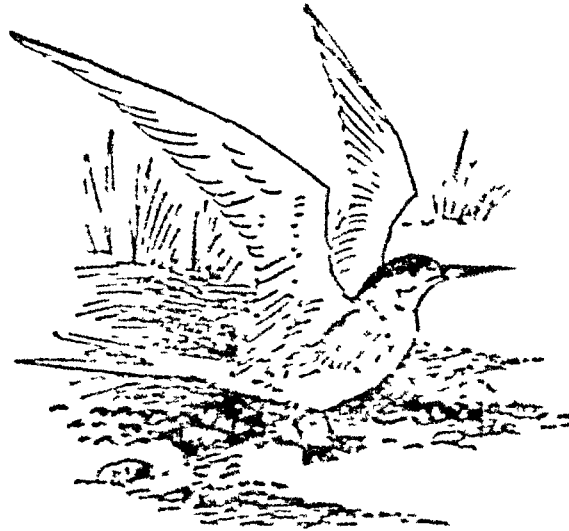
कलपेटी कुररी

कौड़िल्ला

[King fisher]

कौडिल्ला को पहिचानने मे जरा भी देर नहीं लगती। ताल या नदी के किनारे पानी की सतह से १५—२० फीट ऊपर एक जगह पर स्थिर होकर उडते रह कर यह वैसे ही सब का ध्यान अपनी ओर खीच लेता है। फिर नीचे मछली को देखकर अपना बदन ढीला करके यह इस तरह पानी मे गिरता है कि जान पड़ता है जैसे मरकर गिरा हो, पर दूसरे ही क्षण हम इसे चोंच मे मछली दावे किलकिल करते हुए उडते देखते हैं। यही इसके शिकार करने का तरीका है जिसे एक बार देख लेने पर इस शिकारी चिडिया को फिर कभी भूला नहीं जा सकता।

कौड़िल्ला

कौडिल्ला की तीन मुख्य जातियाँ यहाँ होती हैं—कौड़िल्ला (Pied king fisher) कौड़िल्ली (Common king fisher) तथा किलकिला (White Breasted king fisher)।
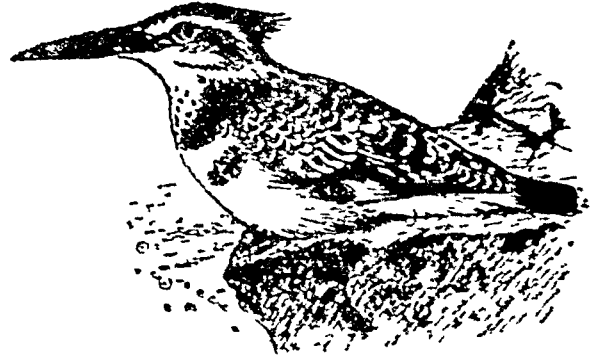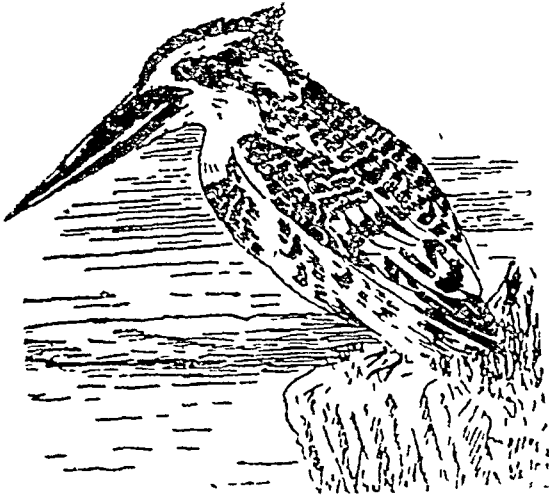
किलकिला

कौडिल्ला हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो पानी के करीब रहता है। इसकी चोंच लम्बी और नोकीली होती है जिससे मछली फिर छूट कर जा न सके। इसके पैर बहुत छोटे होते हैं क्योंकि दिन भर उड़ने के सिवा उनसे काम लेने की फुरसत ही नही मिलती। यह १२ इन्च का सुन्दर चितकबरा पक्षी है, जिसके सारे बदन मे सफेद और काली धारियाँ, पट्टियाँ और चिह्न रहते हैं। इसका निचला हिस्सा जरूर सफेद रहता है पर सीना दो-एक काली पट्टियो से नहीं बचता।

खंजन

[Wagtail]

खजन हमारे यहाँ की गौरैया की शकल की ८-६ इच की छोटी-सी मौसमी चिड़िया है, जो अगस्त-सितम्बर से हमारे देश मे उत्तर की ओर से आने लगती है, और मई तक फिर उसी ओर लौट जाती है। यह चितकबरी चिडिया इतनी चचल होती है कि एक जगह थिर न रह कर, इधर-उधर कीडों-मकोड़ों की तलाश मे दौड़ती रहती है।

इसकी मुख्य चार जाते है जो हमारे यहाँ आती हैं। सफेद (White Wagtail), चितकबरी (Pied Wagtail), भूरी (Gray Wagtail) और पीली (Yellow-headed Wagtail) इन सब की शकल सूरत और आदते एक जैसी होने के कारण यहाँ सिर्फ चितकबरी जाति का वर्णन दिया जा रहा है।
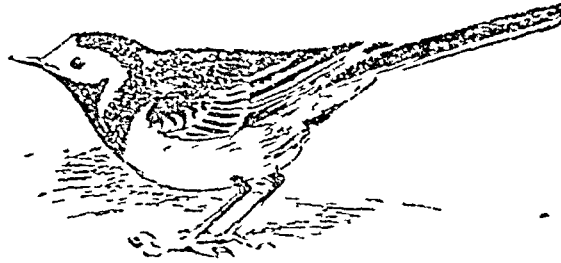
खजन

खजन के रग के बारे मे एक बात जान लेना जरूरी है कि यह बराबर रग बदला करते हैं। इससे इनके रग का ठीक-ठीक वर्णन करना बहुत कठिन है, तो भी यहाँ मोटे तौर पर इसका वर्णन कर दिया जा रहा है।

जाड़ों में इसके नर का ऊपरी हिस्सा राख के रग का और नीचे का सफेद रहता है। सर का ऊपरी हिस्सा काला और सीने पर भी चन्द्राकार काला चित्ता रहता है। डैने काले जिन पर सफेद धारियाँ, दुम भी काली जिसके किनारे पर सफेदी रहती है। गर्मियो मे चोच के नीचे से तमाम सीना काला हो जाता है। मादा भी इसी तरह की होती है। उसमे काले चमकीले की जगह धूमिल हो जाता है।

इसकी आँख की पुतली गहरी भूरी तथा चोंच और पैर काले होते है।

यों तो सभी चिड़ियाँ साल में एक बार अपने पंख बदलती है—जो ज़्यादातर जाड़ों में होता है पर कुछ हिस्से के पंख चितकबरे होने के कारण खंजन के पर ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं उसके रंग में काले की जगह सफेद और सफेदी की जगह काला होता रहता है।
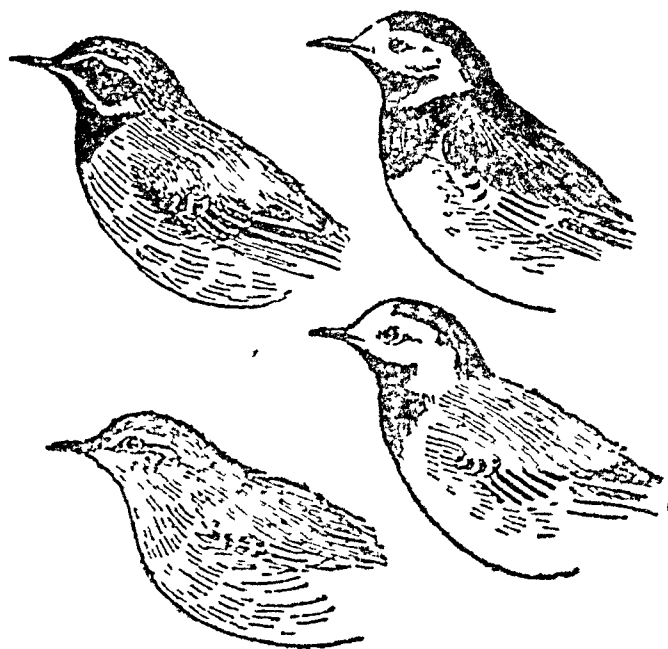
पीला खंजन — चितकबरा खंजन

भूरा खंजन — सफेद खंजन

इसे न तो ज़्यादा घना जंगल पसंद है, और न एकदम ऊसर ही। पानी के किनारे के कीड़ों से पेट भरने के कारण इसे हम ज़्यादातर तालाब और नदियों के किनारे ही देखते हैं। वैसे यह बड़ा ढीठ होता है, पर बहुत पास जाने पर लहराता हुआ उड़ कर थोड़ी दूर पर फिर जाकर बैठ जाता है, और बैठते ही अपनी लम्बी दुम ऊपर नीचे उठाने गिराने लगता है।

इसकी केवल एक जाति काश्मीर में अंडे देती है। यह मई से जुलाई के बीच में ज़मीन पर पत्थरों या लकड़ियों के बीच में घास फूस का गहरा घोंसला बनाता है, जिसमें मादा चार पांच अंडे देती है। ये हलके रंग के रंग के होते हैं, जिन पर बादामी रंग की छोटी छोटी सी चित्तियां भी पड़ी रहती हैं।

टिटिहरी

[Lapwing]

और कई चिड़ियों की तरह टिटिहरी का नाम भी हमारे यहाँ कई चिडियो के लिए इस्तेमाल किया जाता है, पर यहाँ जिसका बयान किया जा रहा है, वही वास्तव मे टिटिहरी नाम की हकदार है। झील और दरिया के किनारे इनका न दिखाई देना ताज्जुब की बात होगी। ये पीली लम्बी टाँगों से किनारे पर आदमियो के आगे-आगे भागती चलती हैं, पर बहुत निकट आने पर 'डिड ही डू इट' (Did he do it) से मिलती-जुलती आवाज करके—थोडी दूर उड़ कर फिर जमीन पर दौडने लगती है। अगरेजी मे इसी से इसका नाम 'डिड ही डू इट' पड गया है।

टिटिहरी यहाँ की किनारे रहने वाली बारहमासी चिडिया है जो ज्यादातर जोडा बाँध कर रहती है। इसके नर और मादा एक शकल के होते हैं, जिनका कद १२-१३ इच का होता है।
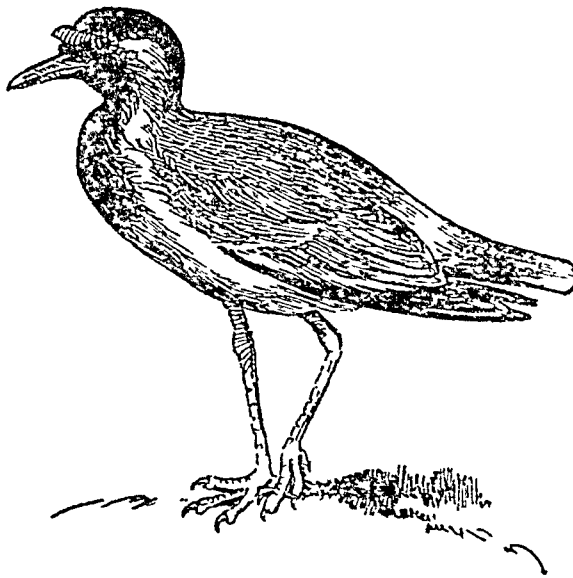
टिटिहरी

टिटिहरी का सर, गर्दन और सीना काला होता है और नीचे का हिस्सा सफेद। इसकी आँख के पास से गर्दन को होती हुई एक सफेद पट्टी पेट की सफेदी में जाकर मिल जाती है। पीठ और डैने भूरे होते हैं जिसमे लाल और हरेपन की चमक सी रहती है। डैने के सिरे काले जिसमे बीच मे एक सफेद आडी पट्टी, दुम सफेद जिसमे सिरे के पास काली पट्टी और सिरे के बीच मे भूरापन रहता है।

इसकी आँख की पुतली कत्थई, चोंच लाल और पैर पीले होते हैं। आँख के चारों ओर और आगे की ओर लाल रंग की खाल-सी उठी रहती है।

टिटिहरी को घोंसला बनाने की दिक्कत नहीं उठानी पड़ती। मई जून में अंडा देने का समय आने पर मादा खुली रेती में—जहाँ आदमियों का आना जाना कम रहता है—जमीन के छिछले गड्ढे में चार अंडे देती है।

इन अंडों का रंग जमीन के रंग से इस तरह मिल जाता है कि अगर टिटिहरियाँ सर के ऊपर उड़ कर शोर न मचाने लगें तो उनके पास से गुजर जाने पर भी हमें उनका पता पाना कठिन हो जावे। इनका रङ्ग हलका हरापन लिए हलके बादामी रंग का होता है, जिस पर काली और भूरी घनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

टिटिहरी की एक और चोटीदार जात भी कम प्रसिद्ध नहीं है। इसे अटी या चोटीदार टिटिहरी कहते हैं।

अटी बहुत तेज उड़ने वाली चिड़िया है और अपनी लंबी उड़ान के लिए बहुत मशहूर है। यह नदियों के किनारे रहने वाली चिड़िया है जो अपने सर पर की चोटी से और टिटिहरियों से जल्द ही पहचानी जा सकती है। इसका कद कुछ छोटा होता है और इसकी आँख के चारों ओर और आगे की ओर खाल नहीं उठी रहती। इसकी बाकी और सब आदतें टिटिहरी से मिलती जुलती होती हैं।
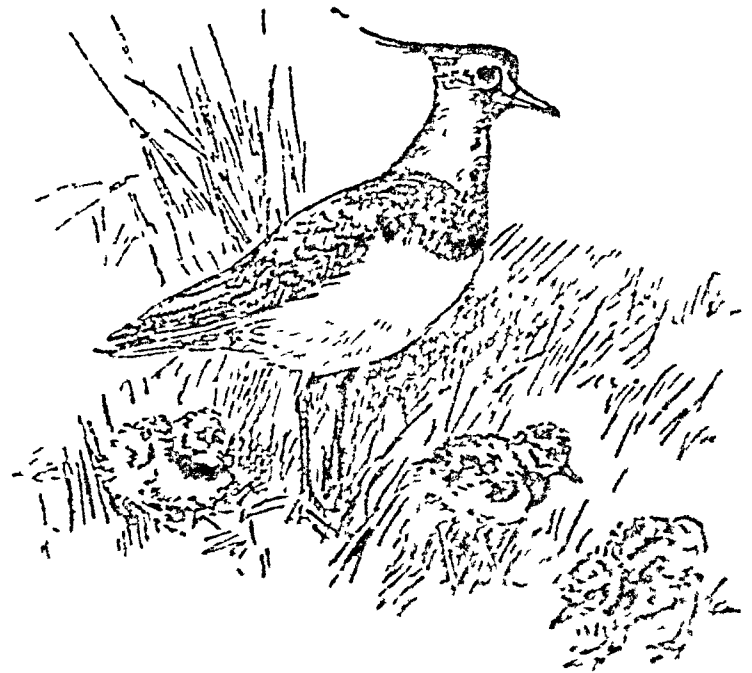
अटी।

बँसमुरगी

[Water Hen]

बँसमुरगी को न तो एकदम शिकार की चिड़िया कहा जा सकता है और न तालाबी ही. इसमें इसे तालाब के किनारे वाली चिड़ियों में शामिल कर लिया गया है। ताल-तलैयों के किनारे, बँसवाड़ी या दूसरी घनी झाड़ियों के आस-पास इस शरमीली चिड़िया को ढूंढने में ज्यादा तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। इसे ज्यादा देखा जाना पसंद नहीं, और जैसे ही इसे पता चला कि कोई इसे देख रहा है। यह भाग कर झाडी में घुस जाती है। इसका दूसरा नाम दहक भी है।

बँसमुरगी

दहक हमारे गाँव की बारहमासी चिड़िया है, जो वैसे तो बहुत शान्त रहती है पर बरसात आते ही यह इतना शोर मचाना शुरू करती है कि जी ऊब जाता है। इनके नर और मादा एक ही रंग के होते हैं जिनके पैर के अंगूठे लम्बे-लम्बे और दुम दहँगल की तरह ऊपर की ओर उठी रहती है। लम्बाई में यह १२ इञ्च से बडी नहीं होती।

इसका ऊपर का सारा रंग गाढ़ खैरा जो करीब-करीब काला जान पड़ता है, और आँख, गाल और गले से लेकर पेट तक का तमाम सब निचला हिस्सा सफेद रहता है। इस सफेदी के बाद का हिस्सा भूरा हो जाता है जो दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते धूमिल ललछौंह में बदल जाता है और दुम उठी रहने के कारण साफ दिखाई पडता रहता है।

इसकी आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच का अगला हिस्सा लाल और पिछला हरा रहता है। पैर हरापन लिए पीले रङ्ग के होते हैं।

दहक के अंडा देने का समय जून से सितम्बर तक है, जब पानी के किनारे किसी झाड़ी या तालाबी घास के बीच में यह अपना तितरा-बितरा-सा घोंसला बनाती है। घोंसला घास फूस या बाँस की पत्तियों से बनाया जाता है, जिसमे मादा हलका गुलाबीपन लिए सफेद या कत्थई रङ्ग के तीन चार अंडे देती है। इनपर ललछौंह भूरी या बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

दाबिल

[Spoon Bill]

दाबिल के अगर चिमटे की तरह चोंच न होती तो—इसे बड़ी आसानी से बगुले के साथ रक्खा जा सकता था, पर अपने इस जरा से फर्क के कारण इनकी शकल ही नही बदल गई है बल्कि यह एकदम उनसे अलग कर दिए गए है।
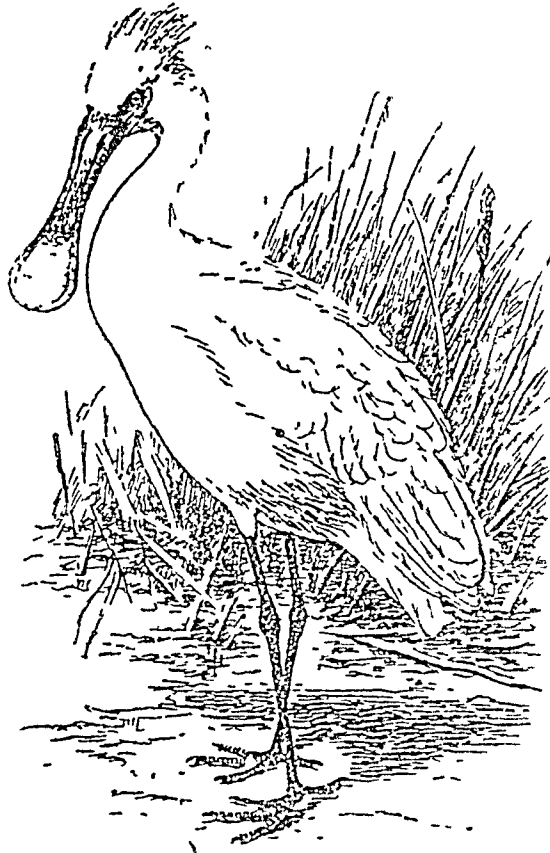
दाबिल

यह भी हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जिसकी चोंच लम्बी, चपटी और सिरे पर चिमटे की तरह गोल हो जाती है। इसका इस्तेमाल भी यह खूब करता है। घास-पात के अलावा यह छोटी-छोटी मछलियाँ और पानी के कीड़े भी खाता है, जिसको यह अपनी इसी चपटी चोंच से बड़ी आसानी से पकड़ लेता है। यह पानी मे अपनी आधी खुली चोंच डुबोकर गर्दन और दोनो बगल इस तरह घुमाता है कि चोंच के भीतर कीडे आदि आ जावें और यह उन्हे खा जावे।

दाबिल कॅडाकुल से कुछ बड़ा और जाँघिल से कुछ छोटा होता है। रग मे नर मादा दोनो दूध की तरह सफेद होते है और बरसात मे इनके सर पर बगुलों की तरह सुन्दर चोटी भी निकल आती है। इनका दूसरा नाम 'चमच बुज्जा' भी है।

इनकी आँख की पुतली लाल तथा चोंच और पैर काले होते हैं।

दाबिल गोल बाँधकर रहने वाले पक्षी हैं, जो अपने घोंसले भी एक ही पेड़ पर बनाते है। उडते समय ये एक के पीछे एक होकर कतार बाँधकर ऐसा उडते हैं, जैसे किसी ने इन्हे सिखाया हो।

दाबिल के अडा देने का समय अगस्त से नवम्बर तक है। जब ये पानी के किनारे किसी पेड पर टहनियों का मचान की तरह चौरस घोसला बनाते है। मादा दाबिल इसमें ३—४ सफेद अडे देती है जिनपर भूरी चित्तियाँ पडी रहती है।

बगुला

[Egrets and Herons]

बगुले की जाति की मुख्य ६ चिड़ियाँ हमारे यहाँ होती हैं। तीन सिलेटी और तीन सफेद। तीनों सिलेटी बगुलों में सबसे बड़ा ऑंजन बगुला (Common Heron), उसके बाद वाक् (Night Heron) और सबसे छोटी बगुली (Pond Heron) होती है।

बगुले

इसी प्रकार सफेद बगुलों में सबसे बड़ा मलग बगला (Large Egret), उसके बाद करछिया बगला (Little Egret) और उससे छोटा सुरखिया या गाय बगला (Cattle Egret) होता है।

अब पहले इन सबके रंग-रूप का अलग-अलग वर्णन करना ज्यादा अच्छा होगा, क्योंकि इन सबकी आदत और रहन-सहन एक जैसी होने के कारण उसके लिए ज्यादा बताना बाकी नहीं रह जावेगा।

टर या ऑंजन पानी के किनारे रहने वाला हलके सिलेटी और सफेद रंग का पक्षी है। यह ४० इञ्च लम्बा होता है। इसका सर सफेद, माथा, चोटी और आँख के पास काली पट्टी और गरदन हलके राख का रंग लिये सफेद रहती है। ऊपरी हिस्सा और डैने सिलेटी होते है जिसके सिरे काले रहते हैं। कन्धे पर सफेद धब्बे रहते हैं और निचला हिस्सा भी सफेद ही रहता है जिसमे सीने पर काले और सफेद पर रहते हैं। आँख की पुतली सुनहली, चोंच गन्दी पीली और पैर हरापन लिये पीले रंग के होते है।

इसके पंजे मे एक खास बात यह होती है कि इसके दोनो पैरों के एक-एक पंजे मे कंघीनुमा दाँत कटे रहते हैं, जिससे यह अपने बदन और चोटी मे कंघी कर लेता है।

इसके अंडे देने का समय मार्च से अगस्त है, जब मादा हलके हरे रंग के लगभग तीन अंडे देती हैं।

धाक् को शायद अपनी बोली के कारण यह नाम मिला है। यह रात में घूमने वाला बगला है, जो दिनभर अक्सर उल्लू की तरह किसी पेड़ पर ऊँघता रहता है। इसका क़द २२—२३ इंच से बड़ा नहीं होता। इसके सर का ऊपरी हिस्सा और पीठ काली जिसमें हरी चमक, लम्बी चोटी के पर सफ़ेद, माथा काला और निचला हिस्सा सफ़ेद होता है। गरदन, पेट, दुम और डैने हलके सिलेटी जिसमें हलका गुलाबीपन मिला रहता है।

आँख की पुतली खूनी, चोंच काली तथा पर और पैर पीलापन लिये हरे रग के होते हैं।

इसके अडे देने का समय जुलाई से अगस्त है। अंडों की संख्या चार-पाँच तक रहती है। और उनका रङ्ग हलका पीलापन लिये हलका हरा रहता है।

बगुली इस गोल की सबसे छोटी चिड़िया है, जो क़द में १८ इंच तक की होती है। यह ढीठ इतनी होती है कि बहुत पास चले जाने पर भी उड़ती नहीं, इसी से इसे 'अंधी बगली' भी कहते है। हमारे गांवों की छोटी-छोटी गड़हियाँ भी इससे खाली नहीं रहतीं।

इसका सर और गरदन का ऊपरी हिस्सा गहरा भूरा और निचला हिस्सा सफ़ेद रहता है। पीठ सिलेटी भूरी और बाक़ी हिस्सा सफ़ेद ही रहता है। सीने पर भूरी घनी धारियाँ रहती हैं और सर पर लम्बी-लम्बी सफ़ेद चोटी के पर निकले रहते हैं।

इसकी आँख की पुतली चटक पीली, चोंच आगे काली, बीच में पीली और जड़ के पास नीली होती है। पैर गहरे हरे रङ्ग के होते है।

इसके अंडा देने का समय मई से सितम्बर है। अंडों की संख्या ४ से ६ तक रहती है, जो हरे रंग के होते हैं।

इसके बाद तीनों सफ़ेद बगुले आते हैं। इनमें से मलंग और करछिया तो मौसमी पक्षी हैं। पर गाय बगुला तीनों सिलेटी बगुलों की तरह यहीं का रहने वाला बारहमासी पक्षी है।

इन तीनों के रङ्ग के बारे मे ज़्यादा वर्णन की आवश्यकता नहीं, तीनों दूध की तरह सफ़ेद होते हैं। हाँ, क़द मे जरूर फर्क़ रहता है।

मलंग बगला आँजन के बराबर होता है और ज्यादातर अकेले ही रहता है। इसकी और गाय या करछिया बगले की चोंच में यह फर्क़ होता है कि—जहाँ इसकी चोंच पीली होने पर भी अडे देने के समय काली हो जाती है वहाँ सुरखिया की चोंच हमेशा पीली और करछिया की हमेशा काली रहती है। मलंग के चोटी नहीं होती।

इसके अंडा देने का समय जुलाई से अगस्त तक है। अंडों की संख्या ४—५ होती है जिनका रङ्ग हलका हरा होता है।

करछिया की चोंच तो काली रहती ही है। इसके पैर भी काले रहते हैं। अंडे देने का समय आने पर इसके सर पर सुन्दर सफेद कलँगी निकल आती है।

इसके अंडे देने का समय, अंडों की तादाद और रंग—मलंग की तरह होता है। हाँ इसके अंडे ज़रूर उससे कुछ छोटे होते हैं।

सुरखिया २० इंच से बड़ा नहीं होता। गायों के आसपास रहने के कारण इसे 'गाय बगला' भी कहते हैं। घास मे गायो के पास यह किसी मुहब्बत से नहीं रहता, पर घास में मवेशियों के चलने से जो पतिंगे आदि उड़ते हैं उनसे अपना पेट भरने में इसे बड़ी आसानी होती है।

अंडा देने का समय आने पर इसके सर और गरदन पर बाल जैसे महीन सफेद पर निकल आते हैं। पीठ पर भी नारंगी रङ्ग लिये हुये बादामी पर बढ़ जाते हैं, जिसके कारण इनको सुरखिया की उपाधि मिली है।

इसके अंडे देने का समय जून से अगस्त तक है। अंडों की संख्या ४—५ और रङ्ग हलका हरा या पीलापन लिये सफेद रहता है।

सभी बगले पानी के निकट रहते हैं। और इनका मुख्य भोजन मछली, कछुवा, मेढक और घोंघे हैं। इनकी चोंच, गरदन और टाँगें लम्बी होती हैं, जिससे इन्हें छिछले पानी में खडे होकर मछली पकडने में आसानी रहे। इनकी अलग-अलग जातियों को पहचानने मे भले ही हमें दिक्कत होती हो पर बगुलों से हम लोग परिचित न हों यह बात नहीं है।

आँजन बगुला

बगुलों को कुछ लोग बहुत मजे में खाते हैं। वाक् तो अपने स्वादिष्ट और गरम मास के लिए प्रसिद्ध ही है लेकिन मलग, आजन और अन्य बडे बगुलो का लोग अक्सर शिकार करते है।

बगुले अपने घोंसले तितरी बितरी टहनियों को रखकर बनाते हैं, जो देखने मे बहुत मामूली से होते हैं।

बुज्जा

[Ibis]

बुज्जा की दो जाते हैं—काली और सफेद। काली को कड़ाकुल (Black Ibis) और सफ़ेद को मुडा (White Ibis) भी कहते है।
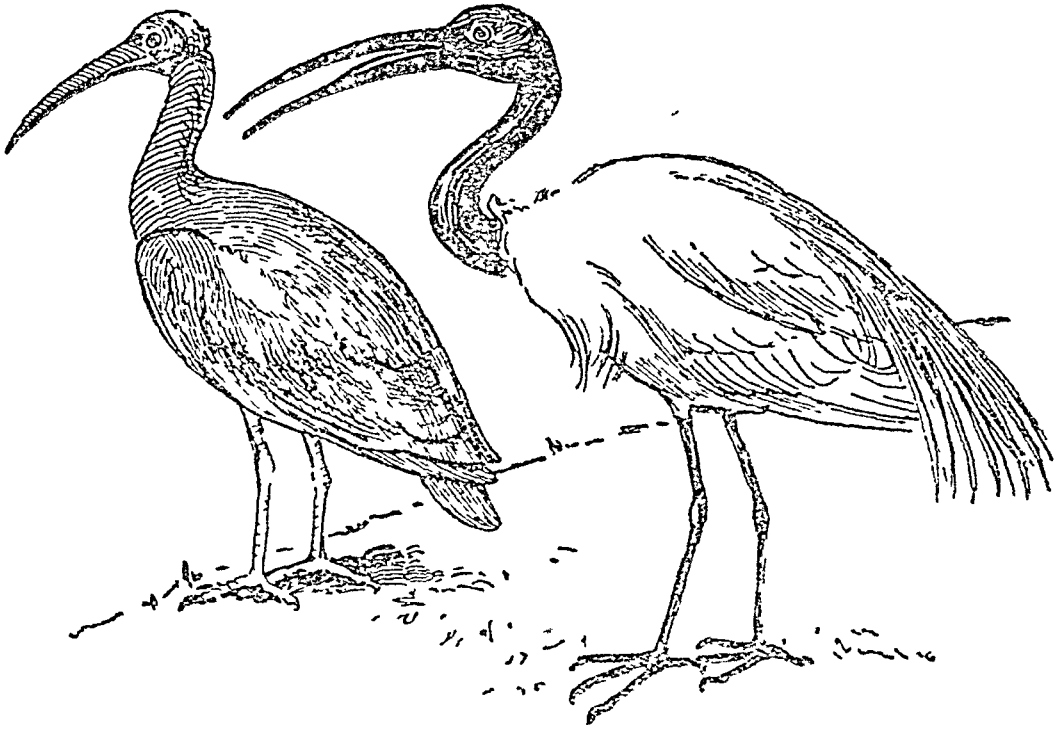
काला और सफ़ेद बुज्जा

दोनों की आदतें शकल-सूरत और डील-डौल करीब-करीब एक जैसा होने पर भी रङ्ग में एकदम उलटा होता है। इसी से सफेद बुज्जा को मुंडा का नाम देकर अलग ही चिड़िया मान लिया गया है।

कड़ाकुल २७ इञ्च की चिड़िया है जो बारहो महीने पानी के किनारे के मैदानो में कीडे-मकोडे और दानों के तलाश मे घूमा करती है। इसके नर मादा एक रङ्ग-रूप के होते हैं जिनके डैने काले, कंधे के पास दोनो ओर सफेद चित्ते और बाकी सारा बदन कलछौंह कत्थई रहता है। सर के ऊपर कुछ लाल पर रहते हैं जिसके कारण इन्हें गाँव में लोग 'सुर्गकेश' भी कहते हैं।

इनकी आँख की पुतली नारङ्गी, चोंच हरापन लिये गहरी सिलेटी और पैर ईंट के जैसे लाल होते हैं।

मुंडा, कड़ाकुल से कुछ बड़ा होता है। इसके भी नर मादा एक शकल के होते हैं। इसका सर और गर्दन काली और बिना बालों के होती हैं, बाकी सारा बदन सफेद और दुम के उपर के बढ़े हुए पर भूरे जिनका सिरा सिलेटी रग का रहता है। बरसात मे ये पर तो और ज्यादा बढ़ ही जाते हैं, साथ ही गर्दन के पास के पर भी लबे हो जाते हैं।

इसकी आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच काली और पैर चमकीले काले होते हैं।

काले और सफेद दोनों बुज्जों की चोंच लम्बी और टेढ़ी रहती हैं और पैर के अँगूठे नीचे की ओर से थोडे-थोड़े जुडे हुए रहते हैं। सफेद बुजा काले से ज्यादा पानी और कीचड़ के करीब रहता है। धान के खेतो मे मेढकों की तलाश मे यह किसानों के हल के इतने पास-पास रहता है कि इसे गाँव के लोग 'हरजोता' भी कहते हैं।

ये रात में ताल के किनारे किसी पेड़ पर झुण्ड में एक साथ रहते हैं, जहाँ जून से अगस्त तक मादा दो-चार अडे देती है। अडों का रग हलका हरापन लिए सफेद रहता है जो कुछ दिन पर मटमैला हो जाता है।

कड़ाकुल भी पेड़ पर बसेरा लेते हैं। इसके अडा देने का समय मार्च से नवम्बर तक रहता है, जब किसी पेड़ की चोटी पर यह सूखी टहनियों का गहरा सा घोंसला बनाता है, जिसका भीतरी पेंदा घास-फूस और परों से मुलायम कर दिया जाता है। इसके अडे मुंडा से कुछ छोटे होते हैं, जिनका रंग हलका हरा होता है और बाज-बाज़ पर बादामी चित्ते भी रहते हैं।

लगलग

[White Necked Stork]

लगलग के घोंघिल, जाँघिल, गैबर और लोहा सारग आदि कई भाई बन्धु है। पर यहाँ सिर्फ लगलग का ही हाल दिया जा रहा है क्योकि सबकी आदत करीब-करीब एक जैसी है। ये सब पानी के किनारे या कीचड़ के आस-पास रहने वाली चिड़ियाँ हैं जो—मेढक, मछली, घोंघो आदि से अपना पेट भरती हैं। लगलग को पहिचानने मे दिक्कत नही होती। इससे यहाँ के वर्णन के लिए यही चुना गया है।
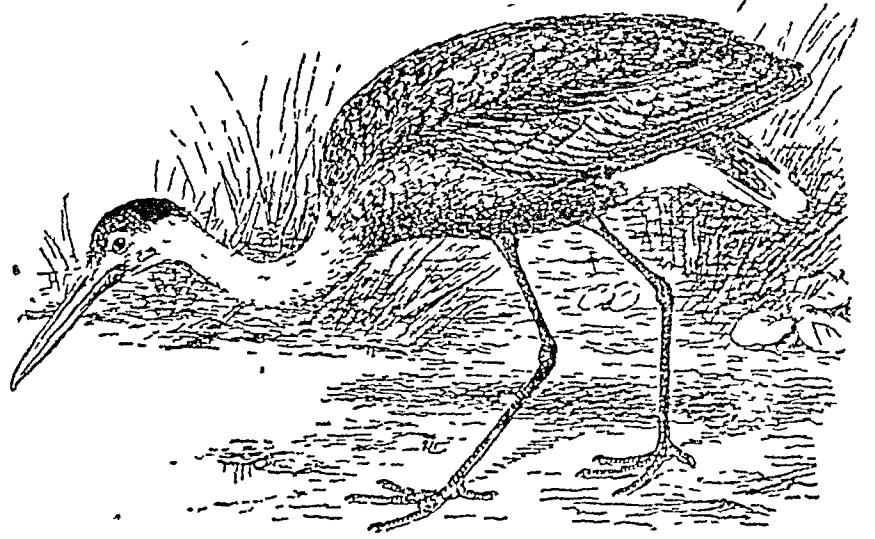
लगलग

लगलग ३ फ़ीट का बड़ा-सा पत्ती है जिसके नर मादा हमशकल होते हैं। इसका माथा और सर का ऊपरी हिस्सा तो काला रहता है, बाकी हिस्सा और लम्बी गर्दन नीचे तक सफेद रहती है। उसके बाद दुम के निचले सफेद भाग को छोड़ कर सारा बदन धुर काला होता हैं जिसमें हरी चमक भी रहती है। इसी चमक की वजह से ही शायद इसको लकलक या लगलग-कहते हैं।

इसकी आँख की पुतली लाल, चोंच लम्बी और काली तथा टाँगें भी लम्बी और लाल रग की होती हैं।

लगलग यहाँ का बारहमासी पत्ती है जिसे पानी के आसपास या धान के खेतों में बगुलों के साथ बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। यह अपनी लम्बी टाँगों के सहारे पानी के किनारे—अपने शिकार की तलाश में दिन भर इधर-उधर घूमता रहता है। इसके पैर के अगूठे नीचे की ओर कुछ दूर तक जुटे रहते हैं।

बरसात में तलाशने पर इसके अडे आसानी से मिल सकते हैं। तालाब के किनारे के गाँवों के पास किसी पेड़ पर लगलग सूखी टहनियो का भद्दा सा घोंसला बनाता है, जिसमें मादा ३—४ अडे देती है। अडे हलका नीलापन लिए सफेद रंग के होते हैं। पर कुछ दिनों बाद ये हलके मटमैले रङ्ग के हो जाते है।

सामुद्रिक

[Gull]

सामुद्रिक जैसा कि इसके नाम से जाहिर है समुद्र की चिडिया है। लेकिन हमारे देश की कुछ बड़ी नदियों, झीलों और तालों के निकट इनको जाड़े के मौसम में देखना मुश्किल नहीं।

सामुद्रिक

यह वैसे तो योरोप के समुद्री तटों के आसपास रहने वाला पक्षी है लेकिन जाड़े के प्रारभ से ही हमारे मौसमी बतखों की तरह इनके झुड भी हमारे यहाँ आ जाते हैं जो मार्च से लेकर मई तक यहाँ रह जाते हैं। वैसे तो इनकी अधिक सख्या समुद्र के किनारे ही रहती है लेकिन उत्तरी भारत की बड़ी नदियों, झीलों और तालाबों के किनारे इनको उड़ते देखा जा सकता है।
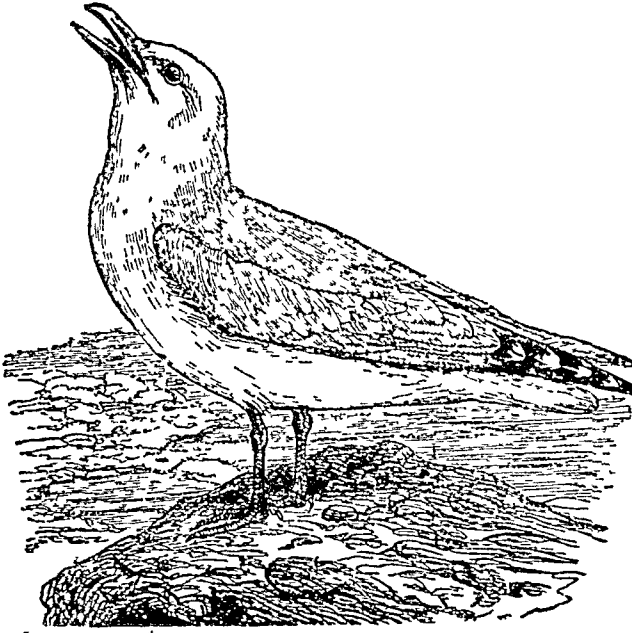
सामुद्रिक हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जिसका अग्रेजी नाम 'गल' वैसे तो बहुत प्रसिद्ध है परन्तु हमारे यहाँ इनको 'घोमरा' भी कहते हैं। इनका 'सामुद्रिक' नाम देहातो मे बहुत प्रचलित है क्योंकि लोग यह किसी तरह जान गये हैं कि ये समुद्री पक्षी हैं। वैसे तो ये समुद्र के किनारे रहते हैं लेकिन जाड़ों में इन्हें बड़ी नदियों और झीलों के किनारे देखना असम्भव नही।

सामुद्रिक को कुररी का भाई बधु कहना अनुचित न होगा क्योंकि इनके शरीर की बनावट कुररियों की तरह पतली भले ही न हो लेकिन रग रूप और आदतों में दोनों बहुत समानता रखते हैं। यहाँ तक कि इनके पैर के अँगूठे भी कुररियों की तरह जालपाद होते हैं।

सामुद्रिक १६ इच का पक्षी है जिसके नर मादा एक ही तरह के होते हैं। इसके पीठ और डैने हलके राख के रग के रहते हैं जिसमें एक प्रकार की चमक-सी रहती है। नीचे का हिस्सा सर, गर्दन और दुम सफेद रहती है। आँख के आगे और कान के पीछे का थोड़ा हिस्सा गाढ़ भूरा रहता है। डैने

के कुछ पंखों के सिरे काले रहते हैं। गरमियों में इस रंग में कुछ तब्दीली हो जाती है और सामुद्रिक का पूरा सर और गरदन का कुछ हिस्सा कलछौंह कत्थई रंग का हो जाता है। इसकी चोंच टेढ़ी और बहुत मज़बूत होती है। आँख की पुतली गाढ़ भूरी, चोंच और पैर गाढ़ लाल रंग के होते हैं।

सामुद्रिक वैसे तो बहुत साफ सुथरी रहने वाली चिड़िया है लेकिन इसका भोजन बहुत गंदा होता है। पानी मे डुबकी न लगा सकने के कारण यह जिन्दा मछलियों को आसानी से पकड़ नहीं पाती, इसी से इसे मुरदाखोर बनना पड़ा है। किसी तरह की लाश पानी में बहती दिखाई पड़ी नही कि कुररियों के साथ सामुद्रिकों के झुंड भी लाश पर चोंच मारते दिखाई पड़ते हैं।

सामुद्रिकों का भी ज़्यादा समय हवा में उड़ते ही बीतता है जैसे इनको दूसरा कोई काम ही नहीं रहता। हमारे देश में तो ये अंडे देते नहीं लेकिन योरोप में इनकी मादाओं के झुंड के झुंड, कुररियों की तरह, पानी के निकट रेत में छिछला गढ़ा बना कर अंडे देती है। ये गढ़े घास वगैरह से मुलायम ज़रूर कर दिए जाते हैं लेकिन इनको छिपाने की जरूरत जैसे इनको नही जान पड़ती। अंडों की संख्या दो से चार तक रहती है जिनका रंग पत्थरी रहता है। इन पर गाढ़ भूरी चित्तियाँ भी पड़ी रहती हैं।

सारस

[Crane]

करकरा सारस

सारस हमारे यहाँ की सब से बड़ी चिड़िया है। इससे इसे हम लोगों ने न देखा हो यह मुमकिन नहीं। पाँच फीट की इस चिडिया से शायद ही कोई तालाब खाली रहता हो। इसे ज्यादातर लोग मारते नहीं इससे यह काफी निडर हो गई है पर बहुत पास जाने पर बड़ी कर्कश बोली बोल कर और अपने भारी पंखों को मार कर यह आसमान में उड़ती है। उडते समय इसे कुछ दूर दौड़ना पड़ता है, और हवा मे उठ जाने पर भी यह जमीन से बहुत ऊपर नहीं जाती। इसकी बोली सत् राम! से मिलने के कारण इसको गाँव के लोग 'सत्तराम' भी कहते हैं।

सारस हमारे यहाँ की बहुत पहचानी हुई बारहमासी चिडिया है, जो जोड़ा बाँध कर रहती है, और अक्सर यह बात देखी गई है कि—एक बार जोडा फूट जाने पर फिर ये जीवन भर जोड़ा नहीं बाँधते।

इसके नर मादा एक रङ्ग के होते हैं। जिनके सारे बदन का रङ्ग सिलेटी रहता है। गर्दन के ऊपरी हिस्से में सफेदी ज्यादा होती है और उसके ऊपर से लेकर सर तक चटक लाल रङ्ग रहता है।

माथा राख के रङ्ग का होता है और कान के पास भी दोनों ओर सिलेटी चित्ते रहते हैं। इनके डैने के सिरे जरूर कलछौंह भरे रहते हैं पर निचला हिस्सा सफेदी मायल रहता है। आँख की पुतली नारंगी, चोंच सींग के रङ्ग की और पैर गुलाबी होते हैं।

सारस तालाबों के छिछले किनारों पर कीचड़ में घूमने वाला पक्षी है। जिसकी चोंच, गर्दन और टाँगें सब काफी लम्बी होती हैं। इसका मुख्य भोजन मछलियाँ, घोंघे कछुए और मेंढक हैं। बचपन से पाले जाने पर यह इतना पालतू हो जाता है कि आदमी के पीछे-पीछे घूमता है।

बरसात में मादा सारस—पानी के बीच किसी टापू या टिकुरी पर—नरई और गाद या दूसरी तालाबी घासों के बीच—घास का बड़ा-सा घोंसला बना कर एक से तीन तक अंडे देती है। अंडों का रङ्ग हलका गुलाबीपन लिए सफेद होता है जिनमें से कुछ पर बादामी और बैंगनी चित्तियां रहती हैं और कुछ सादे ही रहते हैं।

गाँव के कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि सारस को बारिश की कमी बेशी का खूब अन्दाजा रहता है और उसी हिसाब से यह अपने अंडे ऊँचे नीचे स्थान पर देती है। किसान लोग इनके घोंसलों की ऊँचाई निचाई देखकर अंदाज लगाते हैं कि इस साल बारिश कम होगी या ज्यादा।

सारस की एक और जात है जो 'करकरा' कहलाती है। इसका यह नाम इसकी कर्कश बोली के कारण मिला है।

क्रमागत सूची